

इतनी प्रशंसाओं से तो बड़े बड़े उबल पड़ते, धरती से उड़कर आकाश पर पहुँच जाते—फिर भोली-भाली कानन की क्या अवकाश थी—अगर वह इन प्रशंसाओं से प्रभावित होकर इस प्रकार के सपने देखने लगी थी तो इसमें उसका क्या दोष था—लेकिन यह उसका आचरण ही था कि उसने अपने किसी प्रशंसक को मुँह नहीं लगाया। किसी की ओर नहीं झुकी—मगर दिल के हाथों विवश हो गई जो चौधरी की ओर खिंच गया था और तब उसके मन में यह अभिलाषा जागी कि चौधरी भी उसके सौन्दर्य की प्रशंसा उन्हीं शब्दों में उन्हीं भावों से करता जैसे उसके साथी किया करते थे, मगर चौधरी ने उससे कभी बात भी नहीं की और वह प्रेम की ज्वाला में जलती रही—मगर इस जलन में भी उसकी नारी मर्यादा बनी रही। न कभी अधरों पर “आह” आई न कभी गालों पर आँसू ढलके। अन्दर दिल जलता रहा और बाहर अधरों पर मुस्कान नजर आती रही।

मगर एक दिन—

दिल के हाथों विवश होकर वह चौधरी के आफिस में घुस गई—

चौधरी अकेला था।

विन “क्या है ?” चौधरी ने शुष्क स्वर में पूछा था।

टेक “सर ! मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ—” उसने कहा था, रोक स्वयं उसे अपनी आवाज दूर से आती हुई मालूम हुई

कह “किस बारे में ?” चौधरी ने पूछा था।

रा अपना निजी मामिला है सर—” उसने घुटी घुटी सी

ने कहा था। उसका चेहरा पसीने से भीग रहा था।

रहे “मैं अपने अधीनों के निजी मामिलों से कोई सम्बन्ध नहीं गम जा सकती हो—” चौधरी ने बड़े ही रुखे स्वर में कहा

१६ :: जासूसी दुनिया

आ और फिर सर झुका कर कुछ लिखने लगा था।

मगर वह गई नहीं थी। वहीं खड़ी चौधरी को लिखता हुआ देखती रही थी...।

कुछ क्षण बाद जब चौधरी ने सर उठाया और उसे वहीं खड़ा देखा तो झल्ला कर बोला।

“गेट आउट ! तुम कदाचित कोई आचरण हीन लड़की हो और मुझे कुवेर पुत्र समझ कर...!”

कानन के तन बदन में आग लग गई थी। वह तेजी से बाहर निकली थी। उसने यह भी नहीं सुना था कि चौधरी ने आगे क्या कहा था। वह इतने क्रोध में थी कि उसने बड़े चौधरी को भी नहीं देखा था जो उसे अपने लड़के के आफिस से बाहर निकलता देख कर उसे अर्थ पूर्ण दृष्टि से देख रहा था...।

वह अपनी ड्यूटी पर भी नहीं गई थी। सीधे घर आई थी और त्याग पत्र भिजवा दिया था... फिर यह संयोग ही था कि उसके तीसरे ही दिन उसे लन्दन की एक फर्म का आफर मिल गया था और वह लन्दन चली आई थी और यहां जीवन के बहुत सारे सपनों में फिर से चौधरी का सपना भी शामिल हो गया था। और आज... और उसे सारे सपने सच होते नजर आ रहे थे।

वह चौकी उस समय जब चिटखिनी गिरने, की आवाज उठानों में पड़ी। उसने नजर उठा कर देखा तो वह उसे दरवाजा से बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया। उसने झट दरवाजा बन्द किया और बिलरी हुई नोटों की गड़ियों के लगी, फिर तीन चार गड़ियाँ उठा कर इधर उधर उछाल उसके अंधेरे पर हथं युक्त मुस्कान थी...।

और फिर अचानक चेहरे पर भय के लक्षण अंकित उसने बड़ी की ओर देखा। पाँच बज चुके थे। उसने जल्द

१८

म गड़ियाँ उठा उठा कर सहरी के नीचे बिछा दीं और सामने और चादर खींच कर और नीचे कर दी। फिर तीन सौ पौंड गल कर अपने पर्स में रखे और बाथ रूम में चली गईं। नहा कर उसने कपड़े बदले, नाश्ता किया फिर बाहर निकल कर दर-ज में ताला लगाया और नीचे उतर कर टहलती हुई सड़क पर आ गई।

कुछ देर तक खड़ी सोचती रही। अभी तक वह यह निर्णय नहीं कर पाई थी कि उसे फैक्ट्री जाना चाहिये या नहीं... जब इतने रुपये मौजूद हैं तो फिर फैक्ट्री में काम करने की आवश्यकता ही क्या है। थोड़े से पौंड के लिये मरने से क्या लाभ... उसके लजाट पर चिन्ता की रेखाएँ थीं, मगर दूसरी ओर चेहरा दमक भी रहा था। वह सोचती हुई आगे बढ़ी। अपने भाइयों और स्वयं अपने भविष्य के बारे में—अपने अतीत के बारे में।

अचानक उसने अपनी गर्दन को हलका सा झटका दिया, फिर बेनिटी बैग खोल कर उसमें, रखे हुये पर्स को अंगुलियों से स्पर्श किया और मुड़ कर टैक्सी स्टैन्ड की ओर बढ़ी।

टैक्सी स्टैन्ड दूर कुहरे में डूबा हुआ था और वह अपने विचारों में खोई उसकी ओर बढ़ती रही कि अचानक एक खाली टैक्सी सामने से आती हुई दिखाई दी। उसने हाथ के संकेत से उसे रोका और फिर पिछला दरवाजा खोल कर सीट पर बैठ गई और बन्द करके गहरी गहरी सांसें लेने लगी! टैक्सी ड्राइवर उसे कह नजरो से देख रहा था, क्योंकि उसने उसको कहीं का पता पया था। वह कुछ क्षण तक तो उसे देखता रहा, फिर पूछ

हे न... आपको कहाँ जाना है?"

नहीं!" उसने चौंक कर आँखें खोलीं और घबड़ा कर इधर

१८ :: जासूसी दुनिया

उधर देखने लगी। मगर तत्काल ही यह एहसास करके कि वह टैक्सी में बैठी है—” बोल पड़ी।

“मैकमिलन इक्सपोर्ट कम्पनी।

टैक्सी ड्राइवर ने मीटर चलाया और फिर टैक्सी दौड़ने लगी।

कानन ने फिर अपनी आंखें बन्द कर लीं और रात वाली घटना के बारे में सोचने लगी कि आखिर वह नाटे कद वाला जर्मन कौन था—वह इतने सारे रुपये उसे क्यों दे गया था—उसने अपने आपको उसका सेवक क्यों कहा था—अमानत वाली बात कैसी थी—?

और फिर उसने एकदम से कांप कर आंखें खोल दीं। अब वह यह सोच रही थी कि कहीं वह कोई अपराधी न हो...नोट जाली न हों—अगर जाली हुये तो फिर टैक्सी का किराया वह कहां से देगी... ड्राइवर जब नोटों को जाली कह कर उसे वापस करेगा तो वह उसे किस प्रकार समझायेगी कि यह नोट उसे कैसे और कहाँ से मिले थे...?”

“देखा जायेगा...” उसके मुँह से आप ही निकल पड़ा और ड्राइवर चौंक कर बोला।

“आपने मुझसे कुछ कहा है मेडम ?”

“नन...नहीं...” उसने अपने को सँभालते हुये कहा “तुम चलते रहो।”

टैक्सी ड्राइवर ने कुछ नहीं कहा और स्पीड कुछ और दी।

कामन के दिल और दिमाग में फिर द्वन्द्व आरम्भ हो उसका दिल बार बार इन समस्याओं को परिस्थिति पर छोड़ रहे लिये कह रहा था, मगर दिमाग आने वाले समय और परिणाम और संकेत कर रहा था। दिल कह रहा था कि जो कुछ होगा...

जायेगा और दिमाग कह रहा था कि जब हो ही जायेगा तो देखना क्या रहेगा। बुद्धिमान वह है जो कुछ करने से पहले उसका परिणाम भी सोचता है... और फिर दिल व दिमाग का यह द्वन्द्व एकदम से टूट गया। क्योंकि ड्राइवर की आवाज कानों में पड़ने लगी थी। वह कह रहा था।

“मेडम ! कम्पनी आ गई...”

“अच्छा...” उसने घबड़ा कर कहा “टैक्सी रोक दो।”

“टैक्सी तो रुकी हुई है...” ड्राइवर ने बड़े विचित्र स्वर में कहा।

“ओह...हां...” कहते हुये वह नीचे उतर आई और जब पर्स से नोट निकाल कर उसने ड्राइवर की ओर बढ़ाये तो उसका हाथ कांप रहा था। शायद ड्राइवर ने भी हाथ का कम्पन देख लिया था।

“क्या बात है मेडम ! आपका हाथ क्यों कांप रहा है ! आज तो ठण्ड भी काफी कम है।”

वह बिल्कुल ही नर्वस हो गई। मगर तत्काल ही अपने को अधिकार में करती हुई बोली।

“हां सकता है। लेकिन न जाने मुझे क्यों अधिक लग रही है ?”

“फैक्ट्री में दाखिल होने के बाद दूर हो जायेगी...” ड्राइवर ने कहा और उसे चेन्ज वापस करने के बाद टैक्सी स्टार्ट कर दी।

वह अपने स्थान पर खड़ी टैक्सी को जाती हुई देखती रही। जब जो नजरों से आभूत हो गई तो वह फैक्टरी के बड़े गेट को ओर

हे... ने। आज वह सबसे पहले ही पहुँच गई थी। उसके साथ करने वाले नहीं आये थे। अभी पहली ही शिफ्ट वाले काम कर रहे थे।

कुछ देर तक वह गेट पर खड़ी कुछ सोचती रही, फिर कैन्टीन की फैक्ट्री की ओर बढ़ गई। कैन्टीन में दाखिल होकर वह कोने की एक मेज पर बैठ गई और काफी तलब की।

उसके मानस में अभी तक द्वन्द्व मचा हुआ था। वह उन्हीं नोटों के बारे में सोचे जा रही थी।

काफी का अन्तिम घूंट लेकर खड़ी ही हुई थी कि उसे अपनी सहेली केथराइन आती हुई दिखाई दी।

उसने दूर ही से उसे सलाम किया, फिर निकट आकर मुस्कुराती हुई बोली।

“हल्लो कानन ! कैसी हो ?”

“बिल्कुल ठीक—” उसने भी मुस्कुरा कर कहा “तुम अपनी कहो ।”

“मैं भी—भला रात भर में क्या होता—” केथराइन ने हँसते हुये कहा।

“रात भर में....” वह चौंक पड़ी। उसे ऐसा लगा जैसे केथराइन को उसका रहस्य मालूम हो गया हो। इस अनुभूति के साथ ही उसके चेहरे का रंग बदल गया।

“क्या बात है कानन ?” केथराइन ने उसके चेहरे का परिवर्तन देख कर कहा “तुम बहुत परेशान नजर आ रही हो ।”

“नन....नहीं....ऐसी तो कोई बात नहीं....” उसके अधरों पर निर्जीव मुस्कान आ गई।

“अब मुझसे बात छिपाओगी ।”

“अरे नहीं डियर ! कोई खास बात नहीं—बस जरा मूढ़ रहे नहीं है....” उसने बात टालनी चाही।

“क्यों ठीक नहीं है ?” केथराइन उसे घूरती हुई बोली।

“बस वैसे ही—चलो, काम का समय हो गया है—”

कहा और आगे बढ़ गई।

केथराइन कुछ न समझते हुये उसके साथ हो ली।

वह आफिस में बड़ी शान से दाखिल हुई थी, मगर उसके साथ काम करने वालों ने उसे नजर उठा कर पूरी तरह देखा भी नहीं था। बस केवल गुड मॉर्निङ्ग कह कर अपने अपने कामों में लीन हो गये थे। उसने अपनी मेज के निकट पहुंच कर चारों ओर देखा, फिर कुर्सी पर बैठ कर एक फाइल उठाई और उसे उलटने पलटने के बाद फिर रख दी। वास्तव में उसका दिल ही काम करने को नहीं चाह रहा था। वह होठों में कलम दबाये बस सोचती ही रही।

समय धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था, मगर उसकी उलझनें कम नहीं हो रही थी। उसे पता भी नहीं चला कि क्या आफिस बन्द होने का समय हो गया। वह तो उस समय चौंकी जब केथराइन ने उसके कंधे पर हाथ रख कर मुस्कराते हुये कहा।

“सपने ही देखती रहोगी या घर भी जाओगी?”

“नहीं—घर ही जाऊँगी—मगर अभी से?”

“आज तुम कहाँ हो डियर!” केथराइन हस पड़ी “आफिस बन्द हो गया।”

“अरे—मुझे कुछ पता ही नहीं चला—” उसने आश्चर्य के साथ कहा।

“होश में होतीं तब न पता चलता—” केथराइन ने कहा “अब कल मुलाकात होगी—जा रही हूँ—गुड नून—।”

केथराइन के जाने के बाद वह भी आफिस से बाहर निकली और लैप-रवाही से चलती हुई गेट तक आई, फिर एक ओर खड़ी कर टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगी—।

और फिर अचानक वह चौंक पड़ी।

एक आदमी उसकी ओर देख रहा था। पहली बार तो उसने

उसकी उपेक्षा कर दी थी, मगर बाद में महसूस किया कि वह उसे घूर रहा है।

उसका दिल धड़कने लगा। उस आदमी की नजरें कुछ ऐसी थीं कि उनको कोई नाम देना कठिन था। उन नजरों में न प्यार था न घृणा थी—न क्रोध था न दया थी—न स्वच्छता थी न कामना—।

उसने कनखियों से फिर उस आदमी की ओर देखा। वह अभी तक घूरे जा रहा था। वह हिन्दुस्तानी ही मालूम हो रहा था, लेकिन आँखें छोड़ कर उसका पूरा चेहरा बड़ा परिहासजनक नजर आ रहा था। बड़ी सी नाक—मोटे होंठ—पिचके हुये गाल—कद छोटा, शरीर दुबला और वेडौल। अपनी इस हुलिये से वह किसी सर्कस का जोकर लग रहा था।

कानन को हँसी आ गई। उसने सोचा—बुढ़ापे ने समय से पहले ही जवानी को गले लगा लिया है। शायद इसी कारण लड़कियों को घूरने की आदत नहीं गई। उसने सोचा कि उसका मुँह चिढ़ा दे और कहे “कभी शीशे में अपना मुँह देखा हैं—” मगर उसी समय उसे एक टैक्सी नजर आ गई और दिल की बात दिल ही में रह गई।

टैक्सी रुकवा कर बैठी और ड्राइवर को अपने फ्लैट का पता बता कर पर्स देखने लगी। बाजार से गुजरते समय उसका दिल चाहा कि कुछ खरीदारी करती चले। मगर कुछ सोच कर उसने अपनी इस इच्छा का गला घोट दिया और आँखें बन्द कर लीं—।

मगर फिर फौरन ही चौंक कर आँखें खोल भी दीं, क्योंकि आँखें बन्द करते ही उसे फ्लैट में मसहरी के नीचे रखी हुई नोटों की गड़बड़ याद आ गई थी और उसका दिल फिर बुरी प्रकार धड़कने लगा था। रहे सब कुछ भुला देने के लिये वह खिसक कर खिड़की के निकट गई और बाजारों की चहल पहल देखने लगी।

लोग तेजी से आ जा रहें थे । नवजवान तथा बूढ़े जोड़े बाहों में बाहें डाले दुकानों में दाखिल हो रहे थे । हर आदमी तीव्रगाम था । ऐसा लग रहा था जैसे मशीनें चल फिर रही हों । पाश्चात सभ्यता—पाश्चात हाव भाव—पाश्चात लोग—हर वस्तु में बनावट और दिखावा । फिर उसे अपना देश याद आ गया । लाज और शर्म का देश... भोले भाले लोग ।

टैक्सी कब उसके प्लैट के सामने रुकी, इसका ज्ञान उसे न हो सका था । इसका पता तो ड्राइवर के कहने पर चला था । उसने जल्दी से नीचे उतर कर ड्राइवर को किराया दिया और धीरे-धीरे चलती हुई अपने प्लैट के दरवाजे के सामने पहुंची । दरवाजा खोल कर अन्दर दाखिल हुई—और फिर जहां थी वहीं ठिठिक कर खड़ी हो गई...

उसकी मसहरी के पास एक बड़ा सा सन्दूक रखा हुआ था और उसकी निगाहें उसी बक्स पर जमी हुई थीं । यह सन्दूक नई लकड़ी का बना हुआ था...

सन्दूक पर से नजरें हटा कर वह कमरे में चारों ओर देखने लगी । हर वस्तु उसी स्थान पर थी, जहां वह उन्हें रख कर गई थी । विस्तर उसी प्रकार बिछा हुआ था । कोई वस्तु भी गायब नहीं थी—बल्कि यह सन्दूक बढ़ गया था । वह चलती हुई मसहरी के निकट पहुंची और विस्तर पर बैठ कर सन्दूक को ध्यान पूर्वक देखने लगी ।

मगर उसका दिमाग बुरी तरह उलझा हुआ था । उसकी समझ नहीं आ रहा था कि यह बक्स उसके कमरे में पहुंचा कैसे जब कि खिजे में ताला लगा हुआ था... प्रकट है कि दरवाजे की दर्राज से दर आया नहीं होगा । वापसी में अगर उसे ताला खुला हुआ होता तो बात समझ में आ जाती मगर यह भी नहीं था । जब

वह फैक्ट्री से वापस आई थी तब भी ताला लगा ही हुआ था—तो फिर यह सन्दूक अन्दर कैसे आया ?

और फिर वह इस प्रकार बिस्तर से नीचे उतर कर फर्श पर आ खड़ी हुई जैसे किसी बिच्छू ने बिस्तर पर डंक मार दिया हो । इस क्रिया का कारण खून के वह धब्बे थे जो सन्दूक पर पड़े हुये थे और उसकी नजरें अचानक उन पर पड़ गई थीं । अब खून के धब्बों पर नजरें जमाये वह यह सोच रही थी कि कहीं इस सन्दूक में कोई लाश न हो । अगर सचमुच लाश ही हुई तो फिर वह क्या करेगी ?

उसकी इस बात को कौन सच मानेगा कि सन्दूक उसकी अनुपस्थिति में किसी ने उसके कमरे में रखा था । लोग यही सोचेंगे कि मैंने रुपयों के लिपे इसे कल्ल किया है...।

रुपयों की बात मस्तिष्क में आते ही उसको नोटों का ख्याल आ गया और उसने जल्दी से उकड़ू बैठ कर बिस्तर का चादर नीचे से पकड़ कर ऊपर उठाया । नोटों की गड़ियां मसहरी के नीचे उसी प्रकार तह की हुई रखी थीं जैसी उसने रखी थीं...और फिर उसका दाहिना हाथ मसहरी के नीचे रेंग गया...और जब बाहर निकला तो उसमें एक तुड़ा मुड़ा कागज था । वह जल्दी से उठ कर खड़ी हो गई और उस कागज को बराबर करने लगी । उस कागज पर अंग्रेजी में यह इबारत टाइप की हुई थीं—

“भयभीत न होइये ! यह सन्दूक आप ही का है । ढक्कन उठाइये ।”

उसने कागज बिस्तर पर रख दिया और मुकककर कांपते हुये हाथों से सन्दूक का ढक्कन उठाया फिर उसकी आंखें फटी की रहे रह गईं ।

सन्दूक के अन्दर गहरे नीले पत्थरों से तराशा हुआ एक रत्ना हुआ था और महल के चबूतरे पर एक लिफाफा रखा

या। उसने लिफाफा उठा लिया और उसे खोला। अन्दर से एक सह किया हुआ कागज बरामद हुआ जिस पर अंग्रेजी में टाइप किया हुआ था—।

“मैं आपकी मिलकियत हूँ। मैं अर्थात् नीला महल—मैं न जाने कब से आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। थक हार कर स्वयं आपके पास इसलिये चला आया हूँ कि शायद आप मेरा प्रतिबिम्ब देख कर मुझ तक पहुँचने के लिये व्याकुल हो जायें। सोचने लगें कि जब नकल ऐसी है, तो फिर अस्ल क्या होगी। आप मेरी स्वामिन हैं। कब आ रही हैं ?”

फिर थोड़ा सा स्थान छोड़ कर टाइप किया गया था।

“यह नीला महल आपका है। केवल आपका...”

केवल आपका।”

उसने कागज तह पर के लिफाफे में रख दिया और फिर कुछ सोचने लगी, मगर सोचती क्या। दिमाग तो काम नहीं कर रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सब क्या है—और जब कुछ समझ में नहीं आया तो वह फिर उसी महल को देखने लगी।

शिल्पकार ने सचमुच दिल निकाल कर रख दिया था। पत्थर चमक रहा था। छोटे-छोटे बुर्ज और गुम्बद बहुत ही सुन्दर लग रहे थे, मगर पूरा महल इस प्रकार नजर आ रहा था जैसे सचमुच उसे किसी का इन्तजार हो—जैसे सचमुच उदास हो।

और फिर उसे चौंक जाना पड़ा, क्योंकि बाहर से कोई दरवाजा खटखटा रहा था।

उसने जल्दी से लिफाफा और वह एक लाइन वाला कागज बक्स रखा। धीरे से दक्कन बन्द करके सन्दूक मसहरी के नीचे

सरकाया और फिर बिस्तर की चादर ठीक करती हुई बोली ।

“कौन है ?”

उत्तर में कुछ कहने के बजाय दरवाजा ही खटखटाया गया । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस समय कौन आ सकता है । वह सोचती रही और उधर दरवाजा खटखटाया जाता रहा, अन्त में झल्ला कर आगे बढ़ी और दरवाजा खोल दिया ।

भगर दूसरे ही क्षण घबड़ा कर पीछे हट गई ।

दरवाजा खटखटाने वाला उसके लिये अपरिचित था । वह बिना आज्ञा लिये कमरे में दाखिल हो गया और कुर्सी पर बैठ गया ।

वह आश्चर्य से अपरिचित को देख रही थी ।

अपरिचित के व्यक्तित्व में आकर्षण था । आँखें उसके विवेकी होने की घोषणा कर रही थीं । चेहरा रोबदार था । चौड़े वक्ष और मुनासिब शरीर रखने वाला अपरिचित सज्जुच बहुत सुन्दर था । चौड़ा ललाट था और लालिमा लिये हुये सफेद रंग का था । देखने में हिन्दुस्तानी ही मालूम हो रहा था । इतना ही सुन्दर और आकर्षक था कि कानन उसे देखती ही रह गई थी... और यह सोचकर लज्जा वश सर झुका लिया कि पता नहीं अपरिचित उसे क्या समझ बैठे ।

“बहन जी ! पधारिये ! व्याकुल होने की आवश्यकता नहीं है—” अपरिचित ने बहुत ही कोमल स्वर में कहा । भापा हिन्दुस्तानी ही थी... ।

“अप...आप...कक...कौन है !” उसने अटक अटक कर पूछा ।

“बता दूँगा...पहले आप बैठ तो जायें !” इस बार अपरिचित मुस्कुराया ।

कानन ने महसूस किया कि अपरिचित का व्यक्तित्व उस पर छाता जा रहा है और वह विवश होती जा रही है। उसने फिर अपरिचित की ओर देखना चाहा। मगर सर उठाने का साहस नहीं पड़ा। उसने नजरें झुकाये हुये ही पूछा।

“आप कौन हैं...कहां से आये हैं और क्या चाहते हैं?”

“मैं आपसे एक प्रश्न करना चाहता हूँ...” अपरिचित ने कहा।

“क्या-?”

“आप नीला महल के बारे में क्या जानती हैं?”

“नन...नीला...महल?” कानन हकला कर रह गई।

“हाँ...अगर आप नीला महल के बारे में कुछ जानती हो तो बता दें...।”

कानन मौन रही। उसने अपने दिल को काबू में किया। नजरें ऊपर उठाई तो अपरिचित को अपनी ही ओर देखते हुये पाया। उसने फिर निगाहें झुका लीं और बोली।

“आपको यह किसने बताया कि मैं नीला महल के बारे में कुछ जानती हूँ?”

“मैं आपके सारे प्रश्नों के उत्तर दूँगा...मगर पहले मैं जो पूछ रहा हूँ आप वह बता दें...।”

“क्यों बता दें?”

“इसका उत्तर भी मैं नहीं दे सकता।”

एक क्षण के लिये कानन के मन में आया कि वह अपरिचित को वह सारी बातें बता दें जो कल से अब तक उसके सामने आई हैं, मगर कुछ सोचते हुये उसने कहा।

“आप कल मिले...।”

“बहुत अच्छा...” अपरिचित ने उठते हुये कहा और तेजी से निकल गया।

कानन भी उसके पीछे ही पीछे दरवाजे तक आई थी। उसे देखा कि अपरिचित एक टेक्सी में बैठ रहा है और फिर उसे अपरिचित को ड्राइवर से यह कहते हुये सुना कि "सोहो" चलो।

सोहो की सन्ध्या यौवन पर थी।

लन्दन का सुप्रसिद्ध इलाका सोहो... जहाँ सूर्य के अस्त होने के बाद दिन होता है। जहाँ सभ्यता नंगा नाच नाचती है... जहाँ पाश्चात का वास्तविक रूप सामने आता है... जहाँ रात के साये में पापों का पालन पोषण होता है।

गहरे श्वेत कुहरे ने हर वस्तु को अपने घेरे में ले रखा था। ठण्ड बहुत अधिक थी मगर इसी ठण्ड को समाप्त करने के लिये तो लोग यहाँ आते थे... इसीलिये तो यहां के क्लबों... कासीनो और बारों में हंगामा रहता था... यहां चारों ओर जवान और बूढ़े शरीर थे... शराब की बोतलें थीं... ताश के पत्ते और सरसराते हुये नोट थे... सुन्दर-जवान और नरन औरतें थीं... सब कुछ था मगर सभ्यता और मान्यता का दूर दूर तक पता नहीं था।

कुहर में डूबी हुई ऊँची इमारतें बिजली के कुमकुमों से जगमगा रही थी। मरकरी के बल्बों तथा फ्लोरो सेन्ट लाइट ने कुहर का सीना चाँक कर दिया था। कुहर के बावजूद कई कई खन्डों की इमारतें साफ नजर आ रही थी। क्लबों, कैफे तथा कासीनों के साइन बोर्ड भी नजर आ रहे थे और उनमें दाखिल होने वाले भी दिखाई दे रहे थे।

बाहर सख्त सर्दी थी, मगर क्लबों के अन्दर हाल और गर्म थे। यंगेस्ट क्लब की ओर जाने वालों की संख्या अधिक

कदाचित्त इसलिये कि आज वहां कावेरे का प्रोग्राम था। क्लब की हमारत विद्युत प्रकाश से जगमगा रही थी और हाल में एक हंगामा था।

हाल के एक कोने की मेज पर कैप्टन हमीद उदास और अकेला बैठा हुआ था। उस की शोखी और शरारत कदाचित्त आज छुट्टी पर थी। वह अत्यन्त बोर हो रहा था। पाश्चात्त संगीत का रसिया पाश्चात्त संगीतों से भी बोरियत महसूस कर रहा था। अगर कर्नल हार्ट स्टोन का भय न होता तो शायद वह अब तक यहाँ से उठ कर जा चुका होता—लेकिन क्या करता—लेडी वाल्टर अभी तक हाल में मौजूद थी और कर्नल विनोद ने उसी की निगरानी पर उसे नियत किया था।

लेडी वाल्टर का नाम जब उसके सामने लिया गया था तो वह झल्ला गया था, क्योंकि उसने समझा था कि वह कोई वृद्धिया होगी—मगर जब उसे देखा था तो बाछें खिल गई थीं।

वह अत्यन्त सुन्दर थी। उसकी आयु चौबीस पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं थी। गाढ़े मेकअप के बाद वह और कम आयु की मालूम होने लगती थी। उसकी आँखें किसी भील के समान शान्त और नीली थी। बाल सुनहरे और तराशे हुये थे। वह अघरों पर अट्टहास हर समय मचलते रहते थे। हमीद ने सोचा था कि वह फ्लर्ट होगी—मगर परखने का अवसर अभी नहीं मिल सका था।

लेडी वाल्टर को भारतीय दूतावास के एक नियंत्रण समारोह में उसे दिखाया गया था। उस समय उसका पति सर वाल्टर भी उसके साथ था। पति के सामने वह बहुत ही शान्त और गम्भीर नजर दिवाई थी। उसे दिखाते हुये हमीद से कहा गया था।

“यही है लेडी वाल्टर—और तुम्हें इसकी निगरानी करनी

“किस सम्बन्ध में ?” हमीद ने पूछा था ।

“यह तुम्हारा चीफ ही बता सकेगा....”

“क्या इससे मेलजोल भी पैदा किया जा सकता है ?” हमीद ने पूछा था ।

“इसका उत्तर भी तुम्हारा चीफ ही तुम्हें देगा । फिलहाल तुम्हारा चीफ इतना चाहता है कि तुम यह पता लगाओ कि यह कहाँ कहाँ जाती है ।”

और हमीद उसके पीछे लग गया था ।

भारतीय दूतावास से उठकर अपने पति सर वाल्टर के साथ बकिंगहम पैलेस के डिनर में सम्मिलित हुई थी ।

डिनर की समाप्त होने तक हमीद बार हो गया था और उसने सोचा था कि सर वाल्टर और लेडी वाल्टर को उनके मकान तक पहुँच कर वह विनोद को रिपोर्ट देते हुये कह देगा कि यह मक्खी मार काम उससे नहीं हो सकता, इसलिये यह काम किसी दूसरे को सौंपा जाये, लेकिन डिनर समाप्त होने के बाद बाहर निकलने पर जब लेडी वाल्टर और सर वाल्टर अलग अलग दिशाओं में रवाना हुये तो उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई और वह लेडी वाल्टर के पीछे लग गया था —

और फिर हमीद की आँखें फटी की फटी ही रह गई — क्योंकि वह एक साधारण से वेश्यालय में दाखिल हुई थी । वह यहाँ तक टैक्सी से आई थी । वह यह सोच भी नहीं सकती थी कि लेडी वाल्टर किसी ऐसे गन्दे स्थान पर भी जा सकती है । उसके दाखिल होने के बाद वह भी अन्दर दाखिल हुआ था । लेडी वाल्टर ने उसे एक नजर देखा था और फिर वह एक औरत से बातें करने लगी थी । बातें इस प्रकार कर रही थी जैसे दोनों की बहुत पुरानी जान-पहचान हो और वह यहाँ प्रतिदिन आती हो ।

हमीद फौरन ही बाहर निकल आया । उसके तीस मिनट का

लेडी वाल्टर बाहर निकली और टैक्सी करके एक ओर चल दी ।

हमीद फिर उसके पीछे लग गया ।

और जब उसकी टैक्सी एक प्राइवेट हाउस के सामने रुकी तो हमीद का दिमाग चटखने लगा... और फिर जब वह टैक्सी से उतर कर अन्दर दाखिल हुई तो उसने दाँत पीसते हुये अपने आपसे कहा ।

“मैं जहन्नुम तक तुम्हारा पीछा करूँगा मंडम...”

लेडी वाल्टर काफी देर के बाद प्राइवेट हाउस से निकली और टैक्सी में बैठ कर चल पड़ी । हमीद पीछे लगा रहा—।

इस बार लेडी वाल्टर काफी की टैक्सी एक क्लब के सामने रुकी और वह उतर कर अन्दर चली गई । कुछ देर बाद जब हमीद भी अन्दर दाखिल हुआ तो लेडी वाल्टर स्वाभिग पाल की ओर जा रही थी । हमीद उसे एक जगह खड़ा जाते देख रहा था कि अचानक वह मुड़ी । दोनों की निगाहें मिलीं और फिर लेडी वाल्टर ने उसे संकेत से अपने निकट बुलाया । इस समय वह वार्थिंग ड्रेस में थी ।

कहिये ?” हमीद ने उसके निकट पहुँच कर पूछी ।

“क्या आप मेरा साथ दे सकेंगे ?”

“अवश्य ! मगर थोड़ी देर बाद—” हमीद ने मुस्कुरा कर कहा ।

“नहीं—अभी—चलिये ना—” उसने मोहक मुस्कान के साथ कहा ।

पहले तो हमीद समझा था कि वह उसे पहचान गई हैं, मगर फिर उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी अपरिचित से मिल रही हो वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि लेडी वाल्टर को वह क्यों समझे ! लेडी वाल्टर से यह उसका चौथा मुलाकात था, मगर पहले के समान इस बार भी किसी अपरिचित ही क समान मिला था ।

“आप क्या सोचने लगे ।” लेडी वाल्टर ने टोका ।

“मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने पहले भी आप आपको कहीं देखा है ?” हमीद ने उसकी आंखों में देखते हुये ।

एक क्षण के लिये लेडी वाल्टर का चेहरा धुआँ हो गया, फिर उसने अट्टहास लगा कर कहा कहा ।

“नहीं मिस्टर ! हम पहली बार मिल रहे हैं ।”

“हो सकता है—” हमीद ने कहा ।

“अब देखिये ना ! मुझे आपका नाम भी मालूम नहीं—” लेडी वाल्टर ने हँसते हुये कहा “कहीं आपने सपने में तो मुझसे मुलाकात नहीं कर ली ।”

“हो सकता है—” हमीद ने कहा और सोचने लगा कि यह औरत कितनी बड़ी अभिनेत्री है ।

“सोचने की आदत बुरी होती है—आइये—” लेडी वाल्टर ने कहा और उसका हाथ पकड़ कर स्वीमिंग पोल की ओर बढ़ी—

पोल के निकट पहुँच कर उसने हमीद का हाथ छोड़ दिया और खुद पोल में कूद पड़ी ।

पोल में चारों ओर औरतें मर्द नहाने में लीन थे । कुछ लोग धूप में लेटे अपने नंगे बदन को सेंक रहे थे—किसी ओर शराब का दौर भी चल रहा था । हमीद एक खम्बे से टेक लगा कर सारा दृश्य देख रहा था ।

लेडी वाल्टर काफी देर तक नहाती रही, फिर बाहर निकली और हमीद के निकट ही से गुजरी मगर न तो उसने हमीद की ओर देखा था और न उसे सम्बोधित ही किया था । उसके इस व्यवहार पर हमीद चकित रह गया था और फिर उसके बारे में सोचने लगा था

थोड़ी देर बाद वह कपड़े बदल कर वह बरामद हुई और क्लब की इमारत के बाहर आ गई । हमीद फिर उसके पीछे लग गया ।

स्वीमिंग पोल से वह कई और बदनाम जगहों पर गई थीं। उनमें कासीनों भी सम्मिलित थे और प्राइवेट हाउसेज भी ! हमीद ने हर जगह उससे झुलाकात की थी और हर बार वह हमीद से किसी अपरिचित ही के समान मिली थी...

सन्ध्या होते होते वह रैंगेस्टर क्लब में दाखिल हुई थीं।

हमीद का दिल तो नहीं चाहता था कि वह अन्दर जाये, मगर हर्नल विनोद की आज्ञा टाली भी नहीं जा सकती थी इसलिये वह भी अन्दर दाखिल हो गया था।

और अब लेडी वाल्टर क्लब के हाल की एक मेज पर अट्टहास लगा रही थी और उसके सामने शराब का गिलास रखा हुआ था।

हमीद उससे कुछ दूर बैठा हुआ था।

अचानक लेडी वाल्टर उस मेज से उठ कर दूसरी मेज पर चली गई, मगर हमीद अब भी उसे देख रहा था।

फिर वह क्लबक रूम की ओर चली गई। हमीद भी उठने ही वाला था कि स्ट्रेपटीज के लिये आर्कस्ट्रा बजने लगा—फिर हाल में रोशनी कम होगई और स्टेज पर एक फ्रान्सीसी लड़की डान्स करने लगी...और हमीद ने इस प्रकार मुँह बनाया जैसे कोई कसैली कड़वी खुश्बू से नीचे उतर गई हो। इस प्रकार के डान्स से उसे हार्दिक घृणा थी और उसे उन लोगों पर बड़ा क्रोध आता था जो इसे आर्ट कहते थे।

उसने नजरें घुमा कर हाल का निरीक्षण किया...हर व्यक्ति की नजरें डान्सर पर लगी हुई थीं। उनकी आंखों में भी डान्स हो रहा था...कामाग्नि के शोलों का डान्स...उनके होंठ प्यासे नजर आ रहे थे।

“कुं !” हमीद घृणा वश होंठ सिकोड़ कर सोचने लगा कि अपने को सबसे अधिक प्रगतिशील समझने वाली जाति ने फैशन और

आर्ट के नाम पर सहस्रों वर्ष प्राचीन सम्यता को गले लगा लिया और उसे ही प्रगति समझ कर हर्षित है। अगर नंगे शरीर के प्रदर्श ही का नाम आर्ट है तो फिर कसाई सबसे बड़े आर्टिस्ट हैं जो कच्चे गोشت बेचते हैं... यह आर्ट कच्चे गोشت की तिजारत की अतिरिक्ति और क्या है ?”

हमीद को पाश्चात की हर बात पसन्द थी... मगर खोखलेपन वह पसन्द नहीं करता था।

नृत्य अपने यौवन पर पहुँच गया था। कामी लोग बदहवास चुके थे। हमीद ने घबड़ा कर अपनी आंखें बन्द कर लीं और उसे पता भी न चला कि कब डान्स समाप्त हो गया।

फिर... च च च... के लिये संगीत आरम्भ हो गया। हमीद फिर आंखें बन्द कर लीं और कुर्सी से टिक गया।

“क्या तुम मेरे साथ डान्स करना पसन्द करोगे ?” किसी कहा।

हमीद ने चौंक कर आंखें खोल दीं और फिर विस्मित रह गया यह लेडी वाल्टर ही थी जिसने उससे डान्स के लिये प्रश्न किया था।

हमीद ने एक क्षण के लिये कुछ सोचा, फिर मुस्कराता उठा और उसका हाथ पकड़ कर नाचने वालों की भीड़ में गया।

फ्लोर पर पैरों के साथ शरीर भी थिरक रहे थे। हमीद स्वीकार करना पड़ा कि लेडी वाल्टर बहुत अच्छा नाचती है। मुस्करा कर कहा।

“आप तो बहुत अच्छा नाचती हैं।”

“तुम भी तो कम नहीं हो...” उसने मुस्करा कर कहा।

“भला मैं किस योग्य हूँ...” हमीद ने कहा।

“तुम प्राच्य लोगों को बनना खूब आता है...।”

“लेकिन आपसे कम...” हमीद मुस्कराया।

“क्या मतलब ?”

“आज से पहले आपने मुझ पर कृपा दृष्टि डाली ही नहीं।”

“लेकिन हम तो आज पहली बार मिले हैं।” उसने कहा।

“शायद हमेशा के समान—” हमीद हँस पड़ा।

“मैं अब भी तुम्हारा मतलब नहीं समझ सकी...”।

“हर बार जब आप मिलती हैं तो वह मेरी ओर आपकी पहली मुलाकात होती है—” हमीद ने व्यंग भरे स्वर में कहा।

“क्या तुम मुझसे पहले भी मिल चुके हो ?”

“कई बार मेडम—” हमीद ने कहा।

“लेकिन मुझे याद नहीं पड़ता...”।

“हर बार यही होता है मेडम !”

“छोड़ो इस बात को। अगर हम पहली ही बार मिले हैं तो क्या अन्तर पड़ता है।”

“छोड़ दिया !” हमीद ने कहा, फिर मुस्करा कर बोला “यह बताइये कि डान्स के लिये आपने अपना साथी मुझे ही क्यों चुना ?”

“इसलिये कि इस पूरे हाल में तुम्हों सबसे सुन्दर नजर आये थे।”

“ओह...तो इस प्रकार आप मुझसे अपने सौन्दर्य की प्रशंसा करवानी चाहती हैं—” हमीद ने कहा, फिर हँस कर बोला “मगर इस मांमिले में मैं बहुत कंजूस हूँ।”

“नहीं—सचमुच तुम बहुत सुन्दर हो।”

“अब बस भी कीजिये वर्ना मैं बेहोश हो जाऊँगा—” हमीद ने कहा।

“तुम में पूर्ण रूप से पौष मौजूद है।”

“क्या आप किसी से मुझे लड़वाना चाहती हैं?”

“क्या मतलब—यह तुमने कैसा समझा?”

“मेरे सौन्दर्य की प्रशंसा करने का और क्या ध्येय हो सकता है—” हमीद ने हँस कर कहा “मुझे पानी पर चढ़ा कर आप कुबानी का बुगरा खां बनाना चाहती हैं—”

“तुम्हारा जो दिल चाहे समझो—मगर मैं सच कह रही हूँ।

“लेकिन यह सच कहने की आवश्यकता क्यों हुई?” हमीद ने उसकी आँखों में देखते हुये पूछा।

“पहले तुम बताओ कि इतने उदास क्यों हो?”

“न मैं बताऊँ न आप बताइये—बस खामोशी से डान्स कीजिये—” हमीद ने कहा।

“क्या तुम चिड़चिड़े भी हो...” उसने कहा और सांस खींची।

हमीद कुछ न कह कर उसे घूरने लगा।

“क्या स्ट्रेपटीज तुम्हें पसन्द नहीं?” उसने पूछा।

“बिलकुल नहीं—” हमीद ने कहा।

“और चा चा चा?”

“वह भी नहीं—”

“दूसरे राउन्ड में भी मेरे साथ नाचोगे ना?”

“नहीं—” हमीद ने झटकेदार आवाज में कहा।

“तुम्हारा नाम क्या है?”

“भूल गया हूँ—” हमीद ने कहा।

“किस देश से आये हो?”

“बता नहीं...”

“क्या मेरे हर प्रश्न का उत्तर नहीं में दोगे?”

“आखिर आप चाहती क्या हैं?” हमीद ने झल्ला कर पूछा।

“तुम सँ बातें करना...”

“वह तो कर ही रही हैं...मगर कुछ देर तो मौन रहिये—”

एक क्षण के लिये तो वह मौन हो गई, फिर बोल पड़ी।

“क्या सोचने लगे ?”

“जो मेरा दिल चाह रहा है।”

“क्या मुझसे उक्ताहट महसूस कर रहे हो ?”

“भूँ...” हमीद ने झुल्ला कर कण्ठ से आवाज निकाली।

“नहीं चलेगी...” वह हँस पड़ी “मैं इस प्रकार पीछा नहीं छोड़ सकती।”

हमीद ने भी यह महसूस कर लिया था कि लेडी वाल्टर सरलता से पीछा नहीं छोड़ेगी। यह चिपक जाने वाली बांतूनी औरत है। अगर इस समय उसका मूड ठीक होता तो वह उसे तिगनी का नाच नचा देता...मगर वह तो कर्नल विनोद के बारे में सोच रहा था।

अचानक लेडी वाल्टर ने कहा।

“मैं थकावट महसूस कर रही हूँ...”

“तो फिर नाचने की क्या आवश्यकता थी।” हमीद ने कहा।

“उस समय थकावट नहीं थी...” लेडी वाल्टर ने कहा “अब अगर नाचती रही तो गिर पड़ूँगी।”

हमीद ने कुछ नहीं कहा और उसको लिये हुये भीड़ से निकल आया और अपनी मेज की ओर बढ़ा। लेडी वाल्टर भी उसके साथ सगी रही और उसी की मेज पर बैठी।

“मुझे भूख महसूस हो रही है—”

“पता नहीं अभी तुम्हें क्या क्या महसूस होगा...” हमीद ने जल कर कहा।

“चलो...किसी होटल में चलकर भोजन किया जायें।”

“मेरे पास पैसे नहीं हैं...” हमीद ने कहा।

“चलो तो...” उसने हमीद का हाथ पकड़ कर कहा ।

हमीद ने इसी में कुशल समझा कि उसके साथ चल पड़े, वना हो सकता था कि वह उसे घसीटती हुई ले जाती । हाथ पकड़ कर उटाने का भाव कुछ ऐसा ही था ।

दोनों बाहर निकल कर एक टैक्सी में बैठ गये और लेडी वाल्टर ने टैक्सी ड्राइवर को एक होटल का नाम बता दिया ।

होटल पहुँच कर लेडी वाल्टर ने बैरा से खाना लाने के लिये कहा ।

खाना आने तक खमोशी रही । फिर खाना आरम्भ भी हो गया, मगर खामोशी नहीं टूटी । हमीद इस खामोशी से खुश था, क्योंकि वह जानता था कि अगर उसने कुछ कहा तो लेडी वाल्टर का चखाँ फिर चल पड़ेगा ।

लेडी वाल्टर यद्यपि मौन थी, मगर उसकी आँखें इस प्रकार हथर उधर नाच रही थीं जैसे उसे किसी की तलाश हो...

अचानक वह चौंकी और उसका हाथ एकदम से रुक गया । वह एक ओर अपलक देखने लगी थी हमीद की नजरों ने उसकी आँखों का पीछा किया और तब यह बात मालूम हुई कि थोड़ी दूर पर बैठा हुआ एक आदमी लेडी वाल्टर को इस प्रकार घूर रहा है जैसे उसे कच्चा ही चबा जायेगा ।

लेडी वाल्टर ने उस अज्ञात व्यक्ति की ओर से नजरें हटा कर हमीद की ओर देखा और फिर भोजन करने लगी... मगर हमीद अब भी उस अज्ञात आदमी को देखे जा रहा था । वह अज्ञात आदमी जर्मन था । कद नाटा था और सर के बाल खड़े थे । चेहरे के अनुपात से आँखें बड़ी थीं और इस समय उसकी आँखों से चिंगारियाँ निकल रही थीं ।

“अब उसे मत देखो—” अचानक लेडी वाल्टर ने कहा ।

“क्यों ?” हमीद ने पूछा और अज्ञात आदमी की ओर से नजरें हटा कर उसे ही देखने लगा ।

“यह बाद में बताऊँगी....।”

“अच्छी बात है....” हमीद ने कहा, मगर फिर अज्ञात आदमी की मेज की ओर देखा, लेकिन अब वह वहाँ नहीं था । उसकी मेज खाली थी ।

“तुम हिन्दुस्तानी हो ना ?” अचानक बेडी वाल्टर ने उससे पूछा ।

“हां—क्यों ?” हमीद ने चौंक कर पूछा ।

“तुम कर्नल विनोद को तो जानते ही होंगे ?”

“हां जानता हूँ—मगर तुम उसे क्यों पूछ रही हो ?”

“मैं उससे मिलना चाहती हूँ—”

“वह किस खुशी में ?”

“मैं अपने बारे में उससे कुछ बातें करना चाहती हूँ....।”

“किस प्रकार की बातें ?”

“यह मैं उसे ही बता सकूँगी....।”

“बड़ी अच्छी बात है....फिर मुझसे क्यों कहा ?”

“तुम्हारी सहायता प्राप्त करने के लिये ।”

“मैं कौन सी सहायता कर सकता हूँ ?”

“मुझे उसका पता तुम बता दो ।”

“आजकल वह यहीं लन्दन ही में है....।”

“अरे !” वह चौंकी, फिर बोली “उन तक मुझे पहुँचा सकते हो ?”

“हां....।”

“तो चलो....।”

“लेकिन वह तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकते....।”

“क्यों ?” वह हाथ रोक कर उसकी ओर देखने लगी ।

“वह जखमी है और यहाँ अपना इलाज करा आये हैं ।”

“तुम मुझे उनके पास ले तो चलो ।”

“मगर क्यों ?”

“तुमने अभी उस आदमी को देखा था ?”

“हां देखा तो था... फिर ?”

“वह उन लोगों में से एक है जो मुझे कत्ल करना चाहते हैं ।”

“कारण ?”

“कारण तो मैं भी नहीं जानती—।”

“कहीं आप भूल तो नहीं रही हैं मेडम !” हमोद ने व्यंग्य स्वर में कहा “बिल्कुल उसी प्रकार जैसे लोगों से मिलने के बाद आप उन्हें दूसरी बार पहचानने से इन्कार कर देती है ।”

“ओह !” लेडी वाल्टर ने होंठ सिकोड़कर कहा “तुम भ्रम में हो मैं तुम्हें पहले ही दिन पहचान गई थी, लेकिन जान बूझ कर भ्रम जान बनी रही थी । मैं चाहती ही यही थी कि तुम मेरा पीरो करो—इस प्रकार तुम मेरे बाडी गार्ड का कर्तव्य पूरा कर रहे थे और इसी कारण मेरे हथारों को इसका अवसर नहीं मिला था कि वह मुझे कत्ल कर सकें... और मैं अपनी इस सफलता हर्षित थी, मगर अब मुझे महसूस हो रहा है कि वह हर दशा में मुझे कत्ल कर डालेंगे ।”

“बहुत अच्छे !” हमीद हँस पड़ा ।

“समय नष्ट न करो—” वह झुल्ला कर बोली “मुझे कम्प्लेक्स के पास ले चलो ।”

हमीद बड़े असमंजस में पड़ गया, इसलिये कि विनोद अभी तक बात करने योग्य भी न हो सका था । जब से यहां आया था तब आज तक उसने खुद हमीद से भी कोई बात नहीं की थी । पछि

भी नहीं उतरी थीं। किंग जार्ज मेडिकल कालेज के नर्सिंग होम में उसके लिये एक कमरा खाली करा दिया गया था। स्काट लैन्ड यार्ड के दो इन्स्पेक्टर हर समय ड्यूटी पर रहते थे। नर्स भी सी० आई० डी० विभाग ही से सम्बन्धित थी। डाक्टरों का आदेश था कि कर्नल से बातें करने की कोशिश न की जाये। वह केवल इशारों से काम लेता था या फिर हमीद को लिखित आदेश मिलते थे। आदेश टाइप किये हेये होते थे और नीचे विनोद के हस्ताक्षर होते थे। फिर वह लेडी वाल्टर से कैसे बातें कर सकता था....

“क्या सोचने लगे ?” लेडी वाल्टर ने पूछा।

“सोच रहा हूँ कि कर्नल जखमी हैं। किसी से बात नहीं करते। डाक्टर का भी सख्त आर्डर है कि उनसे बात न की जाये और न वह किसी से बात करें—फिर वह तुमसे कैसे बातें कर सकेंगे।”

“वह जखमी हैं—उनका विवेक तो जखमी नहीं है...तुम मुझे उनके पास ले चलो।”

आखिर विवश होकर हमीद को उसकी बात माननी पड़ी। दोनों बाहर आये और ही गाड़ी पर बैठ गये बैठे, फिर उसी के कहने पर हमीद ने उसे स्टेयरिंग थमा दी।

और फिर हमीद को उसके अभ्यास की प्रशंसा करनी पड़ी। वह बड़े सुन्दर ढंग से कार ड्राइव कर रही थी, लेकिन अब मौन थी और हमीद उसी के बारे सोच रहा था।

वह सुन्दर थी। उसके सौन्दर्य में रानियों जैसा प्रभुत्व था। हमीद ने उसे वेश्यालय से लेकर बकिंघम पैलेस तक देखा था...हर रूप में देखा था, हर रंग में देखा था, मगर कोई न कोई बात उसमें ऐसी अवश्य थी जो दूसरों को उसकी ओर आकृष्ट होने के लिये विवश कर देती थी—और इन समस्त बातों के साथ साथ उसका रहस्य पूर्ण व्यक्तित्व था—सर वाल्टर उसका पति था, मगर शायद ही

उसने पतियों जैसा व्यवहार किया हो । दोनों एक दूसरे से अलग-अलग दिखाई दिये थे । सर वाल्टर के व्यक्तित्व में भी आकर्षण था । वह भी अधिक से अधिक तीस वर्ष का था । सर... उसकी खानदानी उपाधि थी—वह सम्मान जो इंग्लैण्ड में बहुत कम परिवारों को प्राप्त था । उसके बाल सुनहरे थे... आँखें काली थीं और वह औरतों का रसिया भी नहीं मालूम होता था ।

अचानक लेडी वाल्टर की आवाज ने उसे चौंका दिया । वह पूछ रही थी ।

“अब कार किधर मोड़े ?”

“दूसरी अनेक्सी की ओर—” हमीद ने कहा ।

उसने कार मोड़ दी—और मिर किंग जार्ज मेडिकल कालेज पहुँच कर रोक दी और दोनों नीचे उतरे ।

बरामदे ही में स्काट लैन्ड यार्ड के दोनों इन्स्पेक्टर मिले । उन्होंने हमीद को तो गुजर जाने दिया । मगर लेडी वाल्टर को रोक लिया और पूछा ।

“क्षमा कीजियेगा... आपको क्या कर्नल विनोद से मिलना है ?”

“हाँ...” उसने संक्षिप्त उत्तर दिया ।

“तब तो हम आपकी तलाशी लेने के लिये विवश हैं...” एक ने कहा ।

“यह मेरे साथ हैं...” हमीद ने मुड़ कर कहा ।

“हम आज्ञा से विवश हैं...” दोनों ने एक साथ कहा और लेडी वाल्टर को तलाशी देनी ही पड़ी । उसके बाद वह कमरे में दाखिल हुई ।

कर्नल विनोद बिस्तर पर पड़ा था । केवल उसकी आँखें नजर आ रही थीं । उसने हाथ उठा कर दोनों को बैठने का संकेत किया ।

दोनों पास में ही रखी हुई कुर्सियों पर बैठ गये ।

“हाँ...अब आप जो कहना चाहती हों कह डालें...” हमीद ने लेडी वाल्टर से कहा ।

“लल...लेकिन...” वह हकला कर रह गई ।

“लेकिन क्या...अब तो कर्नल साहब आपके निकट हैं ।”

“क्या यह मेरी बात सुन सके गे ?”

हमीद कुछ कहने ही जा रहा था कि विनोद के कण्ठ से कराह की आवाज निकली और हमीद उसकी ओर आकृष्ट हो गया ।

कर्नल विनोद आंख से कुछ संकेत कर रहा था ।

हमीद के साथ लेडी वाल्टर भी समझ गई कि वह तकिया उठाने को कह रहा है । हमीद ने तकिया उठाया । तकिये के नीचे एक तह किया हुआ कागज रखा था । उसने उसे उठा कर खोला । उस पर टाइप किया हुआ था :—

“हमीद,

यह जो कुछ भी कहना चाहें उसे सुन लो ।

तुम इनसे आवश्यक प्रश्न भी कर सकते हो । इनसे कह दो कि मैं इनका बयान सुन रहा हूँ । अगर मैं इनके लिये कुछ कर सका तो अवश्य करूँगा । अभी तो मैं किसी योग्य नहीं हूँ लेकिन इन्हें विश्वास दिला दो कि स्वस्थ होते ही मैं इनकी सेवा में लग जाऊँगा ।

बेकार बातें न करना ।

विनोद ।”

हमीद ने पढ़ने के बाद कागज लेडी वाल्टर की ओर बढ़ा दिया । उसने पढ़ने के बाद बड़ी उदासीनता से कहा ।

“मुझे दुःख है कि कर्नल इस दशा में हैं...भला इस दशा में कैसे

मेरे साथ चल सकते हैं ।”

“क्या कर्नल को कहीं जाना भी था ?” हमीद ने पूछा ।

“हाँ...।” उसने कहा ।

“कहाँ ?”

“नीला महल...” उसने ठण्डी साँस भर कर कहा ।

“नीला महल...क्या मतलब...यह नीला महल कहाँ है ?” हमीद ने उसे घूरते हुये पूछा ।

“यह एक लम्बी कहानी है कैप्टन ! और उस कहानी को कर्नल को सुना कर सहायता चाहती थी...लेकिन मेरा भाग्य खराब है ।”

“आप कहानी सुनाइये...कर्नल साहब सुन रहे हैं...और तो आपने पद ही लिखा है कि कर्नल ने आपकी सहायता का वचन दिया है ।”

“आप मेरी हँसी तो नहीं उड़ावेंगे ?”

“मैं केवल फास्ता उड़ाता हूँ...औरतों को उड़ाने वाली कबूतरों के नहीं आती...” हमीद ने कहा “अब आरम्भ हो जाइये...समस्या नष्ट न कीजिये ।”

“मैं वास्तव में एक कबीला की रानी हूँ...” उसने कहा ।

“मैं आपसे यह नहीं पूछूँगा हर हाइनेस कि आप किस कबीले की रानी हैं—वह कबीला कहाँ है और आप यहाँ क्या कर रही हैं ?” हमीद ने बड़े शुष्क स्वर में कहा ।

“मैं समझती थी कि तुम को विश्वास नहीं होगा...इसीलिये मैं अपनी कहानी कर्नल साहब को सुनाना चाहती थी...”

“आप कहती रहिये...कर्नल साहब सुन रहे हैं...लेकिन आप सचमुच किसी कबीले की रानी ही हैं तो वह क्या कर सकते हैं ?”

हैं...वैसे आप चाहती क्या हैं ?”

“मैं अपने कबीले में वापस जाना चाहती हूँ...इसी सम्बन्ध में कर्नाल से सहायता चाहती थी ।”

“लेकिन आपका नाम तो लेडी वाल्टर है...और दुनिया के किसी भी कबीले में शायद ऐसे नाम नहीं पाये जाते...” हमीद ने कहा ।

“तुमने ठीक कहा...वास्तव में मेरा बाप अंग्रेज था...”

“और माँ ?” हमीद ने पूछा ।

“माँ उसी कबीले की रानी थी जिसमें मैं वापस जाना चाहती हूँ ।”

“वह कबीला कहाँ आबाद है ?”

“अफ्रीका के घने जङ्गलों में...कांगों के निकट जहाँ एक नदी बहती है ।”

“तो आपके पिता वहाँ कैसे पहुँच गये ?” हमीद ने पूछा ।

“उन्हें संसार भ्रमण से दिलचस्पी थी । घूमते घूमते वह उन घने जङ्गलों में पहुँच गये थे । उस जमाने में माई काटा नाम के कबीले पर सन्तरी मां शासन करती थी । कबीले के कुछ नवजवानों ने मेरे पिता को गिरफ्तार कर लिया था और मां के पास लाये थे उनको देख कर मैंने जानें क्यों मां के हृदय में दया उत्पन्न हो गई थी और उन्होंने पिता को छोड़ देने की आज्ञा दे दी थी...मगर पिता जी मार्ग भूल गये थे । यह इस समय संसार में वापस आने के लिये कोशिश करते रहे ।

मगर सफल न हो सके । विवश होकर कबीले वालों के ही साथ रहने लगे थे...और अन्त में माँ ने उनसे शादी कर ली ।”

“आपको यह सब बातें कैसे मालूम हुई ?” हमीद ने पूछा ।

“अपने बाप की डायरी से...”

“वह डायरी कहाँ है ?”

“मेरे पास है...।”

“पास का क्या मतलब...घर पर या यहां?”

“यहीं है...” उसने कहा और एक पुरानी डायरी निकाल कर हमीद को थमा दी।

हमीद ने सरसरी तौर पर डायरी को देखते हुये कहा।

“हां...अपनी कहानी को आगे बढ़ाइये।”

“मेरी मां मेरे बाप को बहुत चाहती थी, लेकिन मेरा बाप सन्सार में आने के लिये तइयार रहा था। उसने मेरी मां को समझाया कि वह भी तैयार हो जाये, लेकिन मेरी मां सम्य सन्सार आने के लिये तैयार नहीं हुई। उसी जमाने में मैं पैदा हुई थी। मेरे बाप मुझे चाहता था। हर वक्त अपने साथ रखता था। उन जमानों में भी मुझे अंग्रेजी सिखाता रहा और सम्य सन्सार के बारे में बता रहा। लम्दन के बारे में भी बहुत कुछ बताया था। उसकी बात सुन सुन कर सम्य सन्सार को देखने की इच्छा मेरे मन में प्रबल हो गई थी।

“और आप सम्य सन्सार में पहुँच गईं!” हमीद ने कहा।

“इतने साधारण रूप में यह बात न कहो...” लेडी वाल्टर कहा “हम बहुत पुराने और बहुत बड़े एक नीले महल में रहते हैं वह महल नील मणि से बनाया गया था। मैं उसी महल में बैठी इस सम्य सन्सार के बारे में सोचा करती थी...”

“तो आपका महल नीलम और याकूत का बना हुआ था हमीद ने परिहासजनक स्वर में कहा।

“हँसी न उड़ाओ कैप्टन!” उसने कहा “वहाँ नीलम की हैं। वहाँ पत्थरों का कोई मूल्य नहीं है। वहाँ सबसे अधिक वह संभला जाता है जिसके पास सब से अधिक शक्त हो।”

“होगा...” हमीद ने उक्ताये हुये स्वर में कहा “कह बताइये

आप यहां तक पहुँची कैसे ?”

“वह एक तूफानी रात थी। हम अपने महल में भयभीत बैठे हुये थे। तेज हवायें चल रही थीं... मेरी माँ का विचार था कि यह देवता का प्रकोप है। चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ था। तेज हवा के कारण मशालें बुझ चुकी थीं... हम कमरों में भयभीत बैठे हुये थे। आपस में बातें भी नहीं कर रहे थे—कुछ ऐसा ही भय हम पर छा गेा हुआ था। अचानक हमारे कानों में गोलियाँ चलने की आवाजें पड़ीं। उसके बाद कभीले वालों के चोखने चिल्लाने की आवाजें सुनाई देने लगीं। मेरी माँ उठ कर खड़ी हो गई। बाप ने उसे बाहर जाने से रोका। मगर माँ नहीं मानी। वह तेजी से महल से बाहर निकल गई और जब वापस आई तो बाप से कहा कि ‘तुम्हारी जाति वालों ने हमारे कबोले पर रात्र्याक्रमण कर दिया है। माँ तो इतना कह कर फिर बाहर निकाल गई और मेरा बाप खड़ा होकर न जाने क्या सोचने लगा... फिर उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब मुझे गुप्त मार्ग से वह महल के बाहर लया।”

“क्यों... आपको आश्चर्य क्यों हुआ था... क्या आप गुप्त मार्ग से भिन्न नहीं थीं ?”

“नहीं—गुप्त मार्ग को केवल माँ ही जानती थी।”

“तो फिर आपकी माँ ने ही उन्हें मार्ग बताया होगा ?” हमीद ने पूछा।

“हां... बाप ने बाद में मुझे यही बताया था।”

“अच्छा... तो महल के बाहर आ जाने के बाद क्या हुआ पा ?”

“महल से बाहर निकल कर हम लोग छिपते छिपते एक खुले मैदान में पहुँचे। वहाँ कई छोटे छोटे हवाई जहाज खड़े थे जिन्हें देख कर मेरे बाप ने हर्ष ध्वनि की थी और फिर मुझे लेकर एक जहाज

में बैठ गये थे ।”

“और इस प्रकार आप लन्दन पहुँच गईं ?” हमीद ने कहा ।

“काश ऐसा ही हुआ होता...” उसने ठण्डी सांस खींच कर कहा “मुझे अच्छी तरह याद है कि जहाज पर बैठने के बाद मेरे बाप ने कहा था कि...आज मेरा भाग्य काम कर रहा है...फिर मेरे बाप ही ने उस जहाज को स्टार्ट किया था । मैं हवाई जहाज को बड़े आश्चर्य से देख रही थी, क्योंकि वह मेरे लिये बिल्कुल नवीन वस्तु थी । फिर मेरा बाप मुझसे बिल्कुल ही बेखबर हो गया था । वह जहाज उड़ाने में लीन हो गया था । फिर मैं सो गई थी । दूसरी बार जब मेरी आंख खुली थी तो मैंने अपने बाप की आंखों में चिन्ता के लक्षण देखे...घूटने पर उन्होंने बताया था कि वह मार्ग भूल गये थे । कुछ ही देर के बाद वह जहाज नीचे की ओर आने लगा था । बाप ने बताया था कि इंधन समाप्त हो गया था ।

थोड़ी देर बाद वह जहाज सागर में गिर पड़ा था ।”

“किस सागर में जहाज गिरा था ?” हमीद ने पूछा ।

“हिन्द महासागर में...” उसने कहा “चारों ओर पानी ही पानी नजर आ रहा था । मुझे भूख भी लगी हुई थी और भय भी लग रहा था । मैं फिर सो गई या पता नहीं बेहोश हो गई थी । जब आंख खुली तो एक टापू में थी और मेरा बाप मेरे निकट बैठा हुआ था । उसने बताया था कि अब हम हिन्दुस्तान के निकट हैं । वह टापू आबाद था । हम काफी दिनों तक वहाँ रहे थे और फिर हिन्दुस्तान चले आये थे और कुछ दिन हिन्दुस्तान में रह कर लन्दन चले आये थे । यहाँ लन्दन में हम आराम का जीवन व्यतीत कर रहे थे कि एक दिन मेरा बाप मुझे छोड़ कर पता नहीं कहाँ चला गया ।”

“जब वह गायब हुये थे उससे पहले आपने उनमें कोई परिवर्तन

महसूस किया था ?” हमीद ने पूछा ।

“हाँ—वह कुछ उखड़ा उखड़ा और भयभीत भी नजर आ रहा था । उसके चले आने के बाद मैं अपने चचा के साथ रहने लगी थी, मुझे अपने बाप से घृणा हो गई थी । काफी दिनों के बाद वह लौटा था और पूछने पर बताया था कि मैं नीला महल गया हुआ था । जब मैंने यह सुना था तो अपनी माँ के बारे में पूछे बिना न रह सकी थी ।”

“क्या उस बार भी वह आपकी माँ को साथ नहीं लाया था ?” हमीद ने पूछा ।

“नहीं—उसने बताया था कि मेरी मां मर चुकी है और नीले महल पर कुछ अज्ञात लोगों का अधिकार है । मेरे कबीले वाले उन अज्ञात लोगों से भयभीत हैं—और मेरा बाप खुद भी भयभीत था—फिर वह बीमार हो गया ।”

“तुम्हारा नाम क्या है ?” हमीद ने पूछा ।

“मेरी माँ ने मेरा नाम लूई सारा रखा था मगर मेरा बाप मुझे मेरी कहता था ।”

“फिर आप लेडी वाल्टर कैसे हो गईं ?” हमीद ने पूछा ।

“जिस जमाने में मेरा बाप बीमार था उसी जमाने में सर वाल्टर ने मेरे बाप से मुझे माँगा था । मेरे बाप ने सम्बन्ध स्वीकार कर लिया था और इस प्रकार मैं मेरी से लेडी वाल्टर हो गई ।”

“तुम्हारा बाप अब कहाँ है ?” हमीद ने पूछा ।

“दूसरी दुनिया में—” उसने दीर्घ साँस छोड़ते हुये कहा “बीमार होने के बाद वह बिस्तर से न उठ सका । मरने से पहले उसने मुझे अपने निकट बुलाया था और कहा था कि मेरा कबीला मेरी प्रतीक्षा कर रहा है । इसलिये मैं वहाँ अवश्य जाऊँ । उसी ने मुझे कर्नल विनोद का पता बताया था कि कर्नल अवश्य तुम्हारी सहायता पा—४

करेंगे ।”

“कर्नल विनोद इस सम्बन्ध में क्या कर सकते थे ?” हमीद पूछा ।

“यह मुझे नहीं मालूम—और न मैं यही बता सकती हूँ कि कर्नल विनोद से कब और किन परिस्थिति में भिन्न हुये थे ।”

“सर वाल्टर के साथ आपका दामपत्य जीवन कैसा व्यतीत रहा है ?” हमीद ने पूछा ।

“क्या बताऊँ—” उसने फिर लम्बी साँस खींची “हमारी शादी को केवल एक साल हुआ है । जब शादी हुई थी तो वह मेरा दीवाना था, मगर इधर एक महीना से वह मुझसे खिंचा खिंचा रहता है । उसके साथ मैंने कुछ ऐसे लोगों को भी देखा है जो संदिग्ध हैं । मैं कोई बात छिपाना नहीं चाहती, इसलिये पूरी सफाई से कहूँगी कि सर वाल्टर का सम्बन्ध येस० आई० येस० से है—।”

“यह क्या बला है ?” हमीद ने पूछा ।

“अरे ! तुम येस० आई० येस० के बारे में नहीं जानते—” उसने कहा, फिर विनोद की ओर देख कर मुस्कराती हुई बोली “कर्म साहब अवश्य जानते होंगे ।”

“इस समय कर्नल साहब नहीं बल्कि मैं आपसे बातें कर रहा हूँ—इसलिये आप मुझे बताइये—” हमीद ने कहा ।

“येस० आई० येस० एक खतरनाक संस्था का नाम है और इसकी शाखायें संसार भर में मौजूद हैं । यह संस्था पारिश्रमिक काम करती है और आजकल तुम्हारे देश पर विशेष रूप से इसकी कृपा दृष्टि है—।”

“पारिश्रमिक वाली बात मेरी समझ में नहीं आई—” हमीद ने पूछा ।

“पैसे लेकर काम करना—” उसने कहा ।

“पैसे देता कौन है ?” हमीद ने पूछा ।

“जो उससे काम लेता है...” उसने कहा ।

“हमारे ही देश पर उसकी कृपा दृष्टि विशेष रूप से क्यों है ?”

“इस सम्बन्ध में बस मैं इतना जानती हूँ कि जो देश तुम्हारे देश से विरुद्ध होगा वह अवश्य इस संस्था से सम्बन्ध स्थापित करेगा और इसे पैसा देगा । इधर तुम्हारे देश में जितने ध्वंसकारी कार्य हुये हैं उन सब के पीछे इसी संस्था का हाथ है...” और इस संस्था की नजर कदाचित नीला महल तक पहुँच गई है और मेरे जीवन का अन्त कर देना चाहती है ।”

“यह आये कैसे समझ लिया ?” हमीद ने पूछा ।

“तुमने देखा ही है कि मैंने आज का दिन इधर उधर मारे मारे फिरते रहने में व्यतात किया है—केवल तुम ही नहीं—कुछ और लोग भी मेरा पीछा करते रहे थे—मेरा अनुमान है कि वह संस्था ही के लोग थे...जो या तो मुझे जिन्दा गिरफ्तार करना चाहते हैं या फिर मुझे कत्ल कर देना चाहते हैं ।”

“अच्छा लेडी वाल्टर ! अब आप जा सकती हैं—हमीद ने थॉगड़ाई लेते हुये कहा “मेरा विचार है कि कर्नल अवश्य आपकी सहायता करेंगे—मगर सहायता की नवैयत क्या होगी, यह मैं अभी नहीं बता सकता ।”

“सवाल यह है कि मैं अब क्या करूँ ?” उसने पूछा ।

“यह मैं कल बताऊँगा—” कर्नल विनोद की भर्राई हुई आवाज सुनाई दी । उसने यह वाक्य ठहर ठहर कर पूरा किया था और हमोद हर्षित हो उठा था । क्योंकि बहुत दिनों के बाद उसने विनोद की आवाज सुनी थी ।

लेडी वाल्टर शुक्रिया कह कर उठी । हमीद उसे दरवाजे तक छोड़ने आया—फिर जब वह कार में बैठ गई और कार स्टार्ट हो गई

तो हमीद को भी अपनी मोटर साइकिल की ओर बढ़ना पड़ा, क्योंकि लेडी वाल्टर के पीछे एक टू सीटर लग गई थी, और हमीद ने टू सीटर ड्राइव करने वाले को पहचान लिया था।

यह सर वाल्टर था।

यह लोग जब सुनसान तटवर्ती इलाके की ओर आ गये और टेम्स का गन्दा पानी दूर से झलकने लगा तो अचानक सर वाल्टर ने अपनी टू सीटर रोक दी, मगर लेडी वाल्टर की गाड़ी आगे बढ़ती चली गई थी। टू सीटर के रुक जाने के कारण हमीद को भी अपनी मोटर साइकिल रोकनी पड़ गई थी।

सर वाल्टर अपनी टू सीटर से उतर कर उस भाग की ओर बढ़ा था जिधर कुछ अन्धेरा था। हमीद ने भी देर नहीं की। मोटर साइकिल छोड़ कर वह भी उधर ही बढ़ा जिधर सर वाल्टर गया था...

अचानक हमीद पर चार पाँच आदमी टूट पड़े और उसे घेरे पर रख लिया... चूँकि हमला बिल्कुल आकस्मिक तौर पर हुआ था इसलिए हमीद अपना बचाव न कर सका था और घराशायी हो गया था।

“इसे उठा कर नदी में फेंक दो...” एक आवाज उभरी।

“मम... मैंने... तुम्हें... पहचान लिया है... सर वाल्टर...” हमीद ने कहा।

“यहाँ कोई सर वाल्टर नहीं है...” दूसरी आवाज उभरी और फिर वह सब हमीद को बाँधने लगे।

बाँधने के बाद वह उसे उठा कर सचमुच नदी में फेंकने के लिए ले चले।

हमीद बेहोश तो नहीं था, मगर यह भी सच था कि वह बिल्कुल ही विवश था। इस ओर पुलिस वाले भी कम ही आते थे। हाँ

हलाका उस समय थोड़ी देर के लिये अवश्य आवाद हो जाता था, जब कोई अपराधी टोली इस ओर से पैदल या मोटर पर फरार होना चाहती और उसका पीछा किया जाता था।

उसे ले जाने वाले लोग किसी कानन की बात कर रहे थे और हमीद सोच रहा था कि यह नाम तो हिन्दुस्तानी लड़कियों जैसा है। उनकी बातों से उसे यह भी मालूम हुआ कि कानन अफ्रीका जाने वाली है और यह कि कानन का सम्बन्ध नीला महल से है और नीला महल का सम्बन्ध येस० आई० येस० से है। यह सारी बातें उसके लिये बहुत ही महत्वपूर्ण थीं मगर सवाल यह भी तो उसके सामने था कि वह जिन्दा बच भी सकेगा या नहीं। अगर टेम्स की लहरों ने दया भी दिखाई तो क्या होगा। नदी का ठण्डा पानी तो उसे मार ही डालेगा।

अचानक एक गरजदार आवाज सुनाई दी और एक क्षण के लिये हमीद दिल ही दिल में उछल पड़ा। इसलिये कि यह आवाज विनोद की आवाज से बहुत मिलती जुलती थी। कहा गया था।

“हैन्डस अप.....अगर कोई भी हिला तो गोली मार दूँगा।”

इस गर्जना से वह इतना चौंखला गया थे कि अनिच्छित रूप से उनके हाथों से हमीद छूट कर नीचे गिर पड़ा था और फिर उसने भागते हुये कदमों की आवाजें सुनीं यीं। उसने उठने की कोशिश की मगर असफल रहा, क्योंकि चारों हाथ पाँव बँधे हुये थे।

फिर किसी ने मुक कर उसके हाथ पाँव खोले। वह उठ कर खड़ा हो गया और अपने उपकारी की ओर देखने लगा। उसका कद और उसके शरीर की बनावट आश्चर्य जनक हद तक कर्नल

विनोद से मिलती थी। बालों का रंग भी विनोद ही के समान सुनहरा और चमकीला था। अगर विनोद और इसमें कोई अन्तर था तो बस चेहरे का अन्तर था। इस अपरिचित के चेहरे का रंग बिल्कुल लाल था। नाक जरा सी फूली हुई थी।

“तुम कैप्टन हमीद हो?” अपरिचित ने पूछा।

“जी हाँ—” हमीद ने कहा।

“इधर क्या करने आये थे?”

“यह बाद में बताऊँगा—पहले आप बताइये कि आपका नाम क्या है और आपको मेरे बारे में कैसे मालूम हुआ था?” हमीद ने कहा।

“शायद तुम मोटर साइकिल से आये थे?” उसने उत्तर देने के बजाय पूछा।

“जी हाँ...” हमीद ने कहा।

“चलो... मैं भी तुम्हारे साथ ही चलूँगा) कहीं बैठ कर काफ़ी पियेंगे और वहीं बातें भी करेंगे।”

हमीद ने मोटर साइकिल संभाली। अपरिचित पीछे बैठा और मोटर साइकिल वहाँ से चल पड़ी।

लन्दन में दिन और रात का अन्तर समाप्त हो जाता है। दिन तो सन्ध्या के समान अन्धेरे में डूबा हुआ दिखाई देता है और रात—दिन के समान रौशन रहती है। यहाँ जीवन का कारोबार किसी भी समय स्थगित नहीं होता। लन्दन हर समय जागता रहता है। इस समय की रात के दो बज रहे थे, मगर अधिकतर रेस्टुरेन्ट खुले हुए थे और वह एहसास ही नहीं हो रहा था कि इतनी रात व्यतीत चुकी है।

हमीद ने एक रेस्टुरेन्ट के समीप मोटर साइकिल रोकी और दोनों उतर कर कैफे में दाखिल हुये। अपरिचित ने कोने की ए

मेज चुनी ।

“एक ब्लैक काफी—एक क्रीम—” अपरिचित ने एक स्टेव वर्ड से कहा, फिर हमीद से धीरे से कहा “मैं जानता हूँ कि तुम शराब नहीं पीते । मैं ठण्डे देश का रहने वाला हूँ, लेकिन मैं भी ड्रिंक नहीं करता ।”

उसने इस बार हिन्दुस्तानी में बात का थी । इतनी शुद्ध भाषा थी कि हमीद दंग रह गया था । बड़े से बड़ा विशेषज्ञ भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि वह हिन्दुस्तानी नहीं है ।

“तुम क्या सोचने लगे ?” अपरिचित ने उसे टोका ।

“सोच नहीं रहा हूँ—बल्कि इस पर चकित हूँ कि आप मेरे बारे में इतनी सारी जानकारी कैसे रखते हैं—?” हमीद ने कहा ।

“सुनो कैप्टन ! मेरा नाम पापेन है—मैं पश्चिमी जर्मनी में सीक्रेट सर्विस का चीफ हूँ । येस० आई० येस० और नीला महल के सम्बन्ध में लन्दन आया था और यहीं मुझे कर्नल विनोद के जख्मी होने की सूचना मिली थी । मैं उनसे मिलना चाहता था, मगर सोचता हूँ कि जब वह काम करने योग्य ही नहीं हैं तो फिर उनसे मिलने से क्या लाभ—लेकिन तुम्हारी सहायता प्राप्त करने की इच्छा अवश्य रखता हूँ—मेरा साथ दे सकोगे ?”

“जब आप मेरे बारे में इतना जानते हैं तो फिर यह भी जानते होंगे कि वह मेरे चीफ हैं—” हमीद ने कहा ।

“विल्कुल जानता हूँ—” पापेन मुस्कुराया “मगर तुम कहना क्या चाहते हो ?”

“यही कि जब मेरा चीफ खुद यहाँ मौजूद है तो मैं उससे पूछे बिना आपको कैसे वचन दे सकता हूँ ।”

“कायदे की बात है—” पापेन फिर मुस्कुराया “पूछ कर मुझे उत्तर देना ।”

इतने में काफी आ गई। पापेन ने दो घोंट लेने के बाद जेब से सिगार निकाल कर उसका कोना तोड़ा, फिर उसे सुलगाने के बाद बोला।

“मेरा विचार है कि तुमने लेडी वाल्टर के साथ कुछ समय भी व्यतीत किया है और उससे अच्छी खासी जान पहचान भी पैदा कर ली है—?”

“जी हां—दोनों बातें सच हैं—” हमीद ने कहा। वह उसके काफी प्रभावित हो चुका था। इतनी ही देर में कई बार उसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ था कि वह वेतुकी बातें आरम्भ कर दे—अगर यह विनोद होगा तो फौरन प्रकट हो जायेगा—मगर फिर यह सोच कर ऐसा नहीं किया था कि अगर यह विनोद न हुआ तो फिर उसकी बकवास से खुद उसी का हल्का पन प्रकट हो जायेगा—वह बात भी उसके सामने थी कि विनोद तो मेडिकल कालेज के एक कक्षा में जल्मी पड़ा हुआ है—भला यह विनोद कैसे हो सकता है। इन दोनों विपरीत विचारों ने उसे उलझन में डाल दिया था।

“तुम रह रह कर सोचने क्या लगते हो !” पापेन ने उसे टोका।

“जी कुछ नहीं—” हमीद ने जल्दी से कहा “मेरा ध्यान कर्नल साहब की ओर चला गया था।”

“चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है—कर्नल जीवित बच गये हैं तो फिर बहुत जल्द अच्छे भी हो जायेंगे—।”

“खुदा करे ऐसा ही हो—आमीन—” हमीद ने कहा, मगर उसका कण्ठ भर आया था।

पापेन कुछ क्षणों तक उसे ध्यानपूर्वक देखता रहा, फिर बोली।

“लेडी वाल्टर को इस पर तैयार करो कि वह तुम्हारे साथ अफ्रीका जाने को तैयार हो जाये... और हमें नीला महल तक पहुँच

दे ।”

“मान लीजिये कि अगर ऐसा हो भी गया तो हम दो तीन आदमी वहाँ क्या कर सकेंगे ?”

“मुझे कर्नल विनोद के असिस्टेंट कैप्टन हमीद के मुख से यह बात सुन कर दुख हुआ !” पापेन ने कहा “क्या तुम को याद नहीं रह गया कि कर्नल विनोद ने बड़े बड़े मार्के केवल तुम्हारे साथ सर किये हैं—और फिर...”

“कहिये कहिये—आप रुक क्यों गये ?” हमीद ने पूछा ।

“संसार का हर देश येस० आई० येस० नाम की संस्था को जानता है—और यह ममभक्ता है कि इस संस्था की संचालिका एक हिन्दुस्तानी लड़की है—जमा करना कैप्टन । स्वयं मैं भी यही विचार रखता हूँ—लेकिन वास्तविकता क्या है...यह तो पता लगाने ही से मालूम हो सकता है—तुम खुद सोचो कैप्टन कि येस० आई० येस० जैसी खतरनाक संस्था का संचालन यदि सचमुच एक हिन्दुस्तानी ही लड़की कर रही है तो यह तुम्हारे देश के लिये कितनी खतरनाक बात है । इसकी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया कितनी भयानक होगी । सारे देश हिन्दुस्तान ही को इस षडयन्त्र का जिम्मेदार समझेंगे जब कि स्वयं हिन्दुस्तान भी इन षडयन्त्रों का शिकार हो रहा है—मगर दूसरे देश वाले यही समझेंगे कि हिन्दुस्तान अपने यहाँ ऐसी कार्यवाइयाँ इसलिये करा रहा है ताकि इस उत्तरदायित्व से बचा रहे—ऐसी दशा में क्या तुम्हारा यह कर्त्तव्य नहीं है कि तुम संस्था और उसके संचालक या संचालिका को वे नकाब कर दो...संसार को बता दो कि असलियत क्या है ?”

“आपने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल सच है—” हमीद ने कहा “लेकिन इसके साथ ही साथ मेरा यह भी कर्त्तव्य है कि जब चीफ यहाँ मौजूद है तो मैं उससे आज्ञा लिये बिना कोई कदम न

उठारूँ ।”

“ठीक है...तुम अपने चीफ से पूछ लेना ! कल मैं तुमसे चेरिंग क्रसिंग के किंग जार्ज हास्पिटल में मिलूंगा और अगर तुम्हारे चीफ ने तुम्हें आशा दे दी तो वहीं आगे के लिये प्रोग्राम भी बनाया जायेगा... ठीक है ना ?”

“जी हाँ...” हमीद ने कहा “लेकिन वह हिन्दुस्तानी लड़की या औरत जो उस संस्था की संचालिका कही जाती है...क्या आपको उसका नाम भी मालूम है ।”

“हाँ...उसका नाम कानन है...” पापेन ने कहा ।

कानन का नाम सुन कर हमीद के कानों में सीटियाँ बजने लगीं ।

—o—

कानन इसका परीक्षण कर चुकी थी कि उसे मिलने वाली नोटें असली थीं ।

आज तीन दिन व्यतीत हो चुके थे और अभी तक उसे किसी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था जो- चिन्ताजनक होती या दूसरे लोगों की नजरों में उसे संदिग्ध बनाती । नोटों तथा नीला महल के अतिरिक्त और कोई वस्तु उसे नहीं मिली थी और न कोई उसके पास आया ही था ।

नोटों की गड़बड़ियाँ अब भी उसके कमरे ही में थीं और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह नोटों को कैसे व्यय करे ! बस यही एक उल्झन थी जिससे मुक्ति पाने का कोई मार्ग उसे नजर नहीं आ रहा था ।

आज वह फैक्टरी नहीं गई थी और अभी तक नाइट गाउन

पहने महसूरी पर ही पड़ी हुई थीं। उसे थकावट और पीड़ा महसूस हो रही थी। उलझन के कारण सर भी भारी भारी सा हो रहा था।

विस्तर पर लेटे ही लेटे उसने अँगड़ाई ली, फिर उठी और नीचे उतर कर स्लीपर पहने। फिर अँगड़ाई ली और बाथ रूम की ओर बढ़ गई।

जब बाथ रूम से निकली तो उसके चेहरे पर शान्ति थी। गर्म पानी से स्नान करने के बाद वह अपने आपको काफी हल्का महसूस कर रही थी... फिर जैसे ही वह सिंगार मेज की ओर बढ़ी... नजरें सामने मेज पर रखे हुये नीले महल पर पड़ीं और न जाने क्यों वह भय महसूस करने लगी। उसका दिल चाहा कि वह महल को उठा कर खिड़की से फेंक दे—।

और शायद इसी विचार से वह मेज की ओर बढ़ी ही थी कि किसी ने बाहर से दरवाजा खट खटाया।

उसे आश्चर्य हुआ कि इस समय कौन हो सकता है, क्योंकि उसके जानने वाला यह बात अच्छी तरह जानते थे कि यह समय उसके फैक्टरी जाने का है। उधर दरवाजा खटखटाया जा रहा था। उसने आगे बढ़ कर चिटखिनी गिरा दी—मगर दूसरे ही क्षण उसे भिन्निक कर पीछे हट जाना पड़ा।

उसके सामने वही सुन्दर हिन्दुस्तानी नवजवान खड़ा था, जिसने एक दिन पहले उसे “बहन जी” कह कर सम्बोधित किया था। आज भी उसके अधरों पर वही रहस्यपूर्ण मुस्कान थी।

“क्या आप अन्दर आने की आज्ञा नहीं देगी...?” नवजवान ने कोमल स्वर में कहा।

“आँ—जज...जरूर...” वह हँकला कर एक ओर हटती हुई बोली “आइये।”

वह मुस्कराता हुआ अन्दर दाखिल हुआ और एक कुर्सी पर बैठ गया। कानन अभी तक खड़ी उसे देख रही थी ! उसके चेहरे पर एक रंग आ रहा था और एक रंग जा रहा था।

“बहन जी ! क्या मेरा यहां आना आपने पसन्द नहीं किया...” अपरिचित ने एक सिगार सुलगाते हुये कहा।

“नहीं तो...” कानन ने चौंक कर कहा “मगर आप कैसे आये हैं ?”

“अरे ! आप ही ने तो आज बुलाया था ?” अपरिचित ने कहा।

“मैंने ?” कानन ने आश्चर्य से कहा।

“क्या आप भूल गईं ?” नवजवान ने सिगार का कश लेकर कहा “आज आपने मुझे नीला महल के बारे में बताने के लिये कहा था।”

“नीला महल !” वह जैसे स्वप्न में वड़वड़ाई और उसकी नजरों में जग पर रखे हुये नाला महल की ओर उठ गईं।

नवजवान की नजरों ने उसकी निगाहों का पीछा किया और दूसरे ही क्षण वह चौंक कर खड़ा हो गया... फिर धीरे धीरे चलता हुआ उस मेज के पास पहुंच गया, फिर कुछ क्षण तक उसे देखने के बाद बोला।

“ओह... यह तो आपके पास मौजूद है।”

कानन मौन रहा। उसका दम घुट रहा था !

“यह आपका कहाँ मिला ?” युवक ने पूछा।

कानन ने फिर भी उत्तर नहीं दिया।

युवक मुझ और उसका आंखों में देखता हुआ बोला।

“आपने मेरा प्रश्न का उत्तर नहीं दिया ?”

कानन ने ऐसा महसूस किया जैसे जादू हो गया हो। उस

निगाहें झुक गईं और उसने भर्राये हुये स्वर में कहा ।

“आप...कक...कौन हैं ?”

“मैं...” युवक ने कहा “अगर आप पसन्द करें तो कहूँ कि आपका एक मित्र ।”

“आप क्या चाहते हैं ?”

“मैंने आपसे पहले भी कहा था और अब फिर दुहरा रहा हूँ । मैं नीला महल के बारे में जानना चाहता हूँ...मालूम करना चाहता हूँ कि आप नीला महल के बारे में क्या कुछ जानती हैं ?”

“मैं...मैं तो कुछ भी नहीं जानती...”

“यह आपके पास कैसे आया ?”

“मुझे यह भी ज़हीँ मालूम...केवल इतना जानती हूँ कि यह मेरे कमरे में किसी तरह आ गया है ।”

“मैं इसे लें जा सकता हूँ ?”

“अगर आप चाहें तो ले जा सकते हैं...मगर ले जाकर करेंगे क्या ?”

“इसके बारे में कुछ मालूम करने का प्रयास करूँगा ।”

“क्या आपका सम्बन्ध पुलिस से है ?”

“हाँ...”

“स्काट लैण्ड यार्ड से ।” कानन के स्वर में व्यङ्ग्य था ।

“जी हाँ...” युवक ने इस बार गम्भीरता से कहा ।

“आपका नाम ?”

“आप मुझे स्काट लैण्ड यार्ड में फोन करके आई० सिक्स थ्री के नाम से सम्बोधित कर सकती हैं ।”

कानन हँस पड़ी । उसने चाहा कि युवक को धूर कर देखे, मगर जैसे ही उसकी नजरें युवक की नजरों से टकराईं...वह कुछ

बोखला गई और फौरन ही नजरें झुका लीं... फिर बोली ।

“लेकिन मैंने तो यह सुन रखा है कि स्कॉट लैण्ड यार्ड वालों से कोई भी व्यक्ति सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता...।”

“आपने सच सुना है और मैंने भी सच ही कहा है—बस इससे अधिक विवरण में नहीं जा सकता...।”

“आपने उस दिन मुझसे नीला महल के बारे में पूछा था और उसके बाद ही नीला महल मेरे कमरे में आ गया था क्या यह मैं जान सकता हूँ कि नीला महल के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये आपने मुझे ही क्यों चुना—आपके पूछने के बाद यह नीला महल मेरे कमरे में क्वाँ आया और यह है क्या बला ?”

“सुनिये बहन जी” युवक ने पूरी गम्भीरता के साथ कहा “नीला महल क्या है... यह तो आपका बाद में मालूम होगा... मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि आपकी शकल सूरत उस औरत से एकदम मिलती जुलती है जो नीला महल की स्वामिन थी... इतनी मिलती है कि यह मान लेने को दिल चाहता है कि वह औरत आप ही है ।”

“आपको भ्रम हुआ है ...” उसने कहा ।

“फिर भी अगर कभी आपको मेरी आवश्यकता हो तो आप मुझे फोन कर सकती हैं... और आपकी आज्ञा से मैं यह नीला महल ले जा रहा हूँ ।”

युवक ने अपनी बात समाप्त करके नीला महल उठा कर जेब में रखा और कमरे से बाहर निकल गया ।

उसके जाने के बाद कानन के मानस पर उसके व्यक्तित्व का जादू छाया रहा और वह सोचती रही कि यह युवक चोधरी से कहीं अधिक सुन्दर आकर्षक है । इसकी आंखें हर सनम सोच में डूबी रहती हैं, और कदाचित् इसी कारण से ऐसा लगता है

जैसे इसकी पलकों पर सैकड़ों फूलों का बोझ हो ।

फिर उसने दरवाजा खोला... बाहर आई और चकित रह गई ।

जिस इलाके में वह रहती थी यह मिल एरिया कहलाता था और यहाँ अधिकतर मजदूर वर्ग के लोग रहते थे । मार पीट, झगड़ा लड़ाई यहाँ के लिये कोई नई बात नहीं थी । गलियाँ भी काफी थीं... इसलिये हंगामे के बाद लोग पुलिस के बन्धन में भी नहीं आते थे, भाग निकलते थे... सारांश यह कि यहाँ के लोग इस बात के आदी हो चुके थे और पुलिस से डरते भी नहीं थे । इसलिये कानन को इस पर आश्चर्य नहीं हुआ कि एक कोने में चार आदमी एक आदमी पर दूट पड़े हैं... बल्कि वह यह देख कर चकित हुई थी कि वह अकेला आदमी उन चारों पर भारी पड़ रहा था... और भारी पड़ने वाला वही युवक था जो अभी अभी उसके कमरे से निकल कर गया था ।

चारों उसे अपने घेरे में लेकर उसे दबोच लेना चाहते थे, मगर वह उन्हें घेरा बनाने नहीं दे रहा था । उसके दोनों हाथ बिजली के समान चल रहे थे । कानन बड़ी दिलचस्पी से यह दृश्य देख रही थी ।

कुछ ही देर में युवक ने चारों को जमीन पर लिटा दिया और हाथ भाड़ता हुआ अपनी राह लग गया ।

वह चारों कराहते हुये उठे और युवक को जाता हुआ देखने लगे । अब वह उसकी नजरों से आभूत हो गया तो वह मुड़े और उसी के कमरे की ओर बढ़ने लगे...

वह जल्दी से कमरे के अन्दर आ गई ।

कुछ ही क्षण बाद वह चारों भी कमरे में दाखिल हुये । उनमें माटे कद वाला वह बर्मन भी था जो उसे नाटों की गड़ियों दे

गया था ।

“तो तुम उससे नीला महल छीनने में सफल न हो सके....”
उसने जर्मन से कठोर स्वर में पूछा ।

“जी !” कर्नल ने सर झुका कर कहा “हमने पूरी कोंशिर की थी, मगर वह हम चारों की संयुक्त शक्ति से भी कहीं बहुत अधिक शक्तिशाली था ।”

“इसकी सजा जानते हो ?” उसने पहले से अधिक कठोर स्वर में कहा ।

“प्राण दण्ड....” जर्मन ने कहा “मगर मैं यह भी जानता हूँ कि आप दयालु हैं.... क्षमा करने वाली हैं.... अवश्य क्षमा कर देंगी ।”

उसने कुछ नहीं कहा । कुछ देर तक सोचती रही, फिर उसी जर्मन ही से कहा ।

“मैंने यह निर्णय किया है कि अब मैं यह कमरा छोड़ दूँगी ।”

“बहुत ही उचित निर्णय है....” जर्मन ने हर्षित होकर कहा “वहाँ अव्यवस्था फैली हुई है । प्रजा व्याकुल है, इसलिये नीला महल आपका पहुँचना अत्यन्त आवश्यक हो गया है ।”

“ठीक है—हमारी यात्रा की पूर्ण व्यवस्था की जाये । हम कहीं भी नीला महल के लिये प्रस्थान करेंगे....” उसने महारानियों जैसे शान के साथ कहा ।

“आज्ञा का पालन किया जायेगा....” जर्मन ने नत मस्तक होकर कहा ।

“हमारे साथ कौन चलेगा ?” उसने पूछा ।

“जिसे आप आज्ञा दें....”

“तुम.... तुम ही चलोगे....” उसने उसी जर्मन से कहा ।

“आज्ञा शिरोधार्य है....” जर्मन ने कहा ।

“मगर जाने से पहले हम यह चाहेंगे कि मेरे दो भाई जो हिन्दुस्तान में हैं उन्हें हमारी ओर से कुछ रुपये भेज दिये जायें।”

“क्या आप उनसे मिलना भी पसन्द करेंगी।” जर्मन ने पूछा। वह दिल ही दिल में चौंक उठी.....मगर उसने अपने स्वर में प्रतिभा उत्पन्न करते हुये कहा।

“यदि कोई कठिनाई न हो तो....।”

“बहुत अच्छा....”

“और सुनो....तुम चौधरी को जानते हो।”

“नहीं जानता तो जान जाऊँगा....आप आज्ञा दीजिये।”

“उसे लाकर हमारे सामने खड़ा करना है....”

“जी अच्छा....” जर्मन ने कहा, फिर हिचकिचाहट के साथ बोला “क्या हम लोग यह समझ लें कि हमें क्षमा कर दिया गया।”

“हाँ....हमने तुम सब को क्षमा कर दिया....।”

जर्मन ने कुछ नहीं कहा। जेब से एक दूसरा नीला महल निकाला जो साइज में पहले वाले से बहुत छोटा था। उसे उसकी ओर बढ़ाते हुये कहा।

“इसमें ट्रान्स मिशन है महारानी जी।”

“हमें मालूम है....” उसने शुष्क स्वर में कहा, फिर उसे अपने हाथों में लेती हुई बोली “अब तुम जा सकते हो।”

“हमारी जब भी आवश्यकता हो....आप हमें तलाब कर सकती हैं....” जर्मन ने कहा।

“बस....जाओ....” उसने बहुत ही कठोर स्वर में कहा।

वह चारों सर झुकाये हुये उल्टे पैरों कमरे से निकल गये और उसने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया और मसहरी पर बैठ कर

उस नये नीला महल को देखने लगी ।

कुछ ही मिनट बीते होंगे कि वह नीला महल छोटे से टेलीविजन सेट में परिवर्तित हो गया ।

नीचे वाली तखती प्रज्वलित स्क्रीन के समान नजर आने लगी और उस पर एक गतिशील परछाईं दिखाई दी... फिर मन्द मन्द साफ आवाज सुनाई दी ।

“योर मेजेस्टी ! मैं आपका सेवक श्री एक्स बोल रहा हूँ । आप ए० डी० सी० आपसे बात करना चाहते हैं । गुम्बद की नोक दिखाइये । एक छोटा सा माइक निकलेगा । उस पर बात कीजिये...”

वह स्क्रीन की चकित दृष्टि से देख रही थी । आवाज बन्द हो गई । उसने आदेशानुसार गुम्बद की नोक दिखाई... छोटा सा माइक निकला... उसने कहा ।

“हाँ... ए० डी० सी०... कहों, क्या बात है !”

“शुभ प्रभात योर मेजेस्टी...” इस बार आवाज बदली हुई । “आप कब आ रही हैं । नीला महल आपकी राह देख रहा है । आपके हस्ताक्षर के लिये सारे कागजात पड़े हुये हैं ।”

“हम कल सन्ध्या को रवाना हो रहे हैं ।”

“आपकी सेवा में बाख को भेजा गया था । आपने उसे आदेश दे दिये हैं ।”

उसने सोचा कि उन्हीं चारों में से किसी का नाम बाख था... और अगर यह सच है तो फिर उसी नाटे कद वाले जर्मन ही का नाम बाख होगा । उसने जल्दी से कहा ।

“हाँ—हमने यात्रा के सम्बन्ध में उसे आदेश दे दिया है ।”

“यदि आप कोई नया आदेश देना चाहें और नीला महल

सम्बन्ध स्थापित करना चाहें तो यही प्रणाली प्रयोग कीजियेगा। आपके भाई लन्दन पहुँचा दिये जायेंगे हैं। कत आप उनसे मुलाकात कर सकेंगे—क्या आप कर्नल विनोद को जानती हैं?”

“नहीं—।”

“आपसे कोई हिन्दुस्तानी कभी मिला?”

“बहुत से मिले?”

“उनमें से किसी ने नीला महल के बारे में आपसे कुछ पूछा था?”

एक क्षण के लिये वह मोन रही, फिर उसने कहा।

“हाँ—और वह आज भी आया था। नीला महल के बारे में पूछ रहा था। हमने अनभिज्ञता प्रकट की, फिर उसने हमारे पास वाला नीला महल ले जाने की इच्छा प्रकट की और हमने यह सोच कर उसे दे दिया कि उसे सन्देह न होने पाये। उसने अपने बारे में यह बताया था कि वह स्काट लैण्ड यार्ड से सम्बन्ध रखता है। उसके बारे में जानकारी प्राप्त की जाये...”

“आशा का पालन किया जायेगा—।”

इसी वाक्य के साथ ही रोशनी गायब हो गई—गुम्बद के खटके से निकला हुआ माइक अन्दर चला गया। उसने नीला महल उठा कर बिस्तर के अन्दर छिपा दिया।

इन कुछ क्षणों में उसने अपने जीवन के बारे में अत्यन्त महत्वपूर्ण फैसले किये थे। अब तक वह जिन्दगी से लड़ती चली आई थी—और अब अचानक उसके पास इतने रुपये आ गये थे। इतने सारे लोग सामने आ गये थे जो उसे किसी नीला महल की महारानी समझ रहे थे—इसलिये उसने निर्णय किया था कि जब यह लोग उसे महारानी समझ ही रहे हैं तो फिर उसे महारानी बन ही जाना चाहिये। इसमें उसकी कोई हानि तो है नहीं—लाभ ही लाभ है।

वह कौन सी स्टेट है जिसकी वह महारानी है ?—उसे कहाँ जाना है ?—किन लोगों में रहना है ?—यह और इसी प्रकार के कुछ दूसरे प्रश्न उसके मस्तिष्क में आये थे मगर उसने इनकी उपेक्षा कर दी थी—और सोचा था कि उसका पिगड़ता ही क्या है । जब उसके दोनों भाई काम पर लग जायेंगे तो वह जहाँ भी ले जाई जा रही है—वहाँ से भाग निकलेगी और अपने गाँव वापस चली जायेगी—दूसरा निर्णय यह था कि वह चौधरी को गिरफ्तार करवा कर अपने सामने अवश्य खड़ा करायेगी और फिर उसे उसी प्रकार अपमानित करेगी जिस प्रकार उसने अपने आफिस में उसे अपमानित किया था ।

इन फैसलों के साथ ही साथ उसके साथ एक अनजाना सा भय भी लगा हुआ था जो किसी प्रकार भी दिमाग से नहीं निकल रहा था । उस हिन्दुस्तानी की तख्वीर उसकी आँखों के सामने नाचती रहती थी । नीला महल के बारे में उसकी जिज्ञासा यह साबित कर रही थी कि केवल उसको महारानी बनाने का ही चक्कर नहीं है—कोई दूसरी बात भी आवरण में है—और अब जब उसने नीला महल को ट्रान्समीटर, टेलीविजन के रूप में देखा तो उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसे महारानी बनाने के पीछे कोई दूसरा गूढ़ रहस्य है—कोई दूसरा ध्येय है...

मगर फिर भी वह अपने फैसलों पर जमी रही । सोचती रही कि—ठीक है—जो होना होगा वह होगा...देखा जायेगा—।

दूसरे दिन जब नीला महल फिर ट्रान्समीटर, टेलीविजन बन गया और उसे यह सूचना मिली कि उसकी यात्राकी सारी व्यवस्था पूरी हो चुकी है और अगर वह चाहे तो अपने भाइयों से मिल सकती है । वह वाल्ड्राफ में ठहरे हुये हैं तो उसने सूटकेस में नोट भरे । टैक्सी की ओर रवाना होगी ।

वाल्ड्राफ में अपने भाइयों से मिलते समय उसकी आँखों में खुशी के आँसू भर आये, जिन्हें वह पी न सकी। आँखों से निकल कर वह गालों पर आ गये। पूछने पर भाइयों ने बताया कि उन्हें रुपये और पासपोर्ट देकर कहा गया था कि उन्हें लन्दन पहुँचना है... और कल सन्ध्या ही को वह हिन्दुस्तान से वायुयान द्वारा चल दिये थे।

“तुमको इतने रुपये कहाँ मिले बहन ?” दोनों भाइयों ने प्रश्न किये।

“मिल गये... मगर तुम लोग यह न समझ बैठना कि तुम्हारी बहन ने कोई गलत मार्ग अपना कर रुपये प्राप्त किये हैं... ऐसा विचार भी मन में लाओगे तो पाप के भागी बनोगे।

और हाँ... इसके साथ ही साथ तुम लोगों को इसका भी विचार रखना होगा कि किसी को यह न मालूम होने पाये कि तुम्हें इतने रुपये कैसे और कहाँ से मिले। इन्हें धीरे धीरे खर्च करना ताकि किसी को सन्देह न होने पाये। मैं तुम दोनों को अलग अलग पाँच पाँच हजार पौंड दे रही हूँ। यह हिन्दुस्तानी करेन्सी में तुम्हें हिन्दुस्तान ही में मिलेंगे...।”

दोनों कुछ नहीं बोले... बस फटी फटी आँखों से अपने बहन को देखते रहे।

“मेरे पास समय कम है... फिर किसी उचित अवसर पर मुलाकात होगी...” उसने कहा और घन्टी बजाई।

वही नाटे कद वाला जर्मन अन्दर दाखिल हुआ और उसने अपने अनुमान के अनुसार उसे बारव ही के नाम से सम्बोधित किया।

“वाल् !”

“जी !” उसने कहा और उसे पूरा विश्वास हो गया कि इसी का नाम वाल है... अगर इसका नाम वाल न होता तो यह अवश्य कुछ न कुछ कहता।

“यात्रा के सारे प्रबन्ध हो गये ।”

“जी हाँ—”

“कब चलना है ?”

“आज ही... सन्ध्या को छः बजे...।”

“तुम्हारे अतिरिक्त हमारे साथ और कौन कौन होगा ।”

“केवल आपके दो बाड़ी गार्ड... और कोई नहीं ।”

“ठीक है...” कानन ने बड़ी लापरवाही से कहा “एक चौथाई रकम यहाँ के आफिस में छोड़ दी जाये... एक चौथाई जर्मनी आफिस में... एक चौथाई हिन्दुस्तान में जायेगा और शेष हमारे साथ जायेगा । दस हजार पौंड हिन्दुस्तानी करेंसी में हमारे भाइयों को हिन्दुस्तान में दिया जायेगा... समझ गये ना ।”

“जी हाँ...” बाख ने कहा और सूटकेस उठा लिया ।

कानन ने अपने भाइयों को गले लगाया और कमरे से निकल कर नीचे आई । यहाँ एक शानदार टैक्सी खड़ी थी और एक आदमी टैक्सी के पास खड़ा था । उसने उसे पहचान लिया । वह बाख के दोनों साथियों में से एक था । वह टैक्सी में बैठ गई । इस समय तीन बज चुके थे ।

एयर पोर्ट के लाउन्ज में उसे एक लम्बे कद का आदमी दिखाई पड़ा । उसने सफर के कागजात और पासपोर्ट दिये । कानन ने पासपोर्ट खोल कर देखा । उसी की तस्वीर थी मगर नाम उसका नहीं था बल्कि किसी प्रिन्सेज रोजा मेरी का था... और इसका पता उसे लाउन्ज ही में चला गया था कि उसके सामान का कस्टम हो चुका है और उसे अफ्रीका में ल्यु पोल्ड वेले अर्थात् बेलनियेन कांगों के इलाके में जाना है ।

थोड़ी ही देर बाद बाख भी पहुँच गया । वह बन्द गले का कोट और पतलून पहने हुये था । कोट के कालर पर सुनहरी गी० सी० लगी हुई थी । अब जो कानन ने ध्यान से देखा तो इसी पौशाक में उसे चार आदमी नजर आये । वह समझ गई कि यह चारों उसके

सांथी हैं। थोड़ी देर के बाद वह जहाज की सीढ़ियाँ से करने के लिये जैसे ही आगे बढ़ी, एक आदमी तेजी से उसके निकट आया। वह उसे आश्चर्य से देखने लगी। क्योंकि आने वाला उसके लिये बिल्कुल ही अपरिचित था... मगर जब वह बोला तो वह एकदम से से चौंक पड़ी। यह वही आदमी था जो दो बार उससे मिल चुका था और दोनों ही बार उसे "बहन जी" कह कर सम्बोधित किया था। वह कह रहा था।

"बहन जी! आपको मालूम है कि आप कहाँ जा रही हैं।"

"मैं ल्यु पोल्ट वेले जा रही हूँ..." उसने कहा "मगर तुमने वह प्रश्न किस अधिकार से किया... तुम कौन होते हो!"

"आपका एक हमदर्द।" अपरिचित ने कहा "जाइये! भगवान आपको रक्षा करेगा, मगर कोई ऐसा काम न कीजियेगा जिससे देश की मान मर्यादा पर बड़ा लगे।"

कानन शायद कुछ कहती। मगर इतने में उसके बाड़ी गाड़ और बाख वहाँ पहुँच गये, इसलिये उसने कुछ नहीं कहा और रेलिंग से निकल कर यात्रियों में मिल गई, जो तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे।

वायुयान में उसके लिये कैबिन रिजर्व कराई गई थी। और जहाज जब उड़ा है उस समय से लेकर ल्यु पोल्ट वेले तक उसके बाड़ी गाड़ हर पन्द्रह मिनिट बाद उसके कैबिन के सामने दिखाई देते रहे। जहाज के उड़ने के बाद वह कुछ देर तक तो भेगजीन देखती रही थी और फिर सो गई थी। एयर होस्टेस उसके सामने बहुत अधिक भयभीत और शिष्ट दिखाई देती थीं।

जब उसकी आँख खुली तो एयर होस्टेस उसकी एग्जेलिवाँ सहला रही थी।

"क्या है।" उसने फाड़ खाने वाले स्वर में पूछा।

“जहाज ल्यु पोल्ड वेले में लैन्ड कर चुका है...”

“मेरे सेक्रेटरी को बुलाओ...” उसने कहा ।

“वह कैबिन के बाहर मौजूद हैं...”

वह उठी और कैबिन से बाहर निकली । थाल और उसके बाईं गार्ड अदब से खड़े थे ! थाल ने उसके ऊपर मखमल का लिबाव डाल दिया जिसके गले और आस्तीनों पर सुनहरा काम बना हुआ था । फिर उसने मुक कर लिबादे के कोने को चूमा... फिर आगे बढ़ा । पीछे बाड़ी गार्ड थे ।

एयर पोर्ट के लाउन्ज में चार आदमी पहले से मौजूद थे । उनमें से एक अंग्रेज था और तीन हव्शी थे । वह तीनों उस को देख कर जमीन पर गिर पड़े थे, फिर उठ कर उसके लिबादे के कोने को चूमा था ।

कानन ने किसी फिल्म में एक महारानी को देखा था जो हाथ उठा कर अपनी प्रजा के मान और सम्मान के प्रदर्शनों को स्वीकार किया करती थी—इसलिये उसने भी दोनों हाथ फैला दिये, और तीनों हव्शी फिर मुक गये । उनके साथ जो अंग्रेज था उसके नेत्रों में हलका सा विस्मय था ।

एयर पोर्ट के बाहर एयर कन्डीशन्ड केडी लाक खड़ी थी । दो बाड़ी गार्ड अगली सीट पर बैठ गये और पिछली सीट पर कानन लेट सी गई । केडी चल पड़ी पीछे दो कारें और दो जीपें थीं ।

दोपहर तक यह काफिला चलता रहा, उसके बाद गाड़ियाँ रोक दी गईं ।

कानन उतरी । भूमध्य रेखा का सूरज आग बरसा रहा था । सामने जंगलों का न समाप्त होने वाला सिलसिला था । इतने में वह अंग्रेज आगे बढ़ा जो कानन के स्वागत के लिये आया था । उसने कहा ।

“घोर मेजेस्टी ! आप जीप से चलना पसन्द करेंगी ?”

“नहीं—हाथी से—” कानन ने कहा ।

वह अंग्रेज कुछ चकित नजर आने लगा ।

“हाथी से—” कानन ने एक एक शब्द पर जोर दे कर कहा ।

लगभग दो घंटे हाथी लाने में लग गये । कानन उस पर सवार हो गई । एक बाड़ी गार्ड उसके पीछे बैठा । शेष लोग जीपों से चले—।

लेकिन जब यह काफिला जंगल के मध्यवर्ती भाग में पहुँचा तो अचानक चारों ओर से कवायलियों ने जीपों को घेर लिया । वह इतने अचानक तौर पर आये थे कि जीपों पर बैठे हुये लोगों को रिवाल्वर निकालने का भी अवसर नहीं मिल सका था । उन्होंने अपने बछे जीप में बैठे हुये लोगों की गर्दनो में लगा दिये थे । वास्तव में वह जीपों में भरे हुये सामानों को लूटना चाहते थे ।

कानन ने अपने पीछे बैठे हुये बाड़ी गार्ड के हेल्स्टर से रिवाल्वर निकाला और बाड़ी गार्ड को हाथी बैठाने का संकेत किया—।

फिर जैसे ही हाथी बैठा, वह रिवाल्वर लिये हुये कूद पड़ी और लगातार दो हवाई फायर किये, इस क्रिया से आक्रमणकारी चौंखला गये—फिर उसने उन्हें डांटा और एक फायर फिर किया । फलस्वरूप एक के हाथ बर्छा उड़ गया ।

बस इतना अवसर काफी था । जीप में बैठे हुये लोगों ने भी रिवाल्वर निकाल लिये और आक्रमणकारी शोर मचाते हुये भाग निकले ।

“हवाई फायर करो । किसी की जान नहीं जानी चाहिये—” कानन ने कठोर स्वर में कहा और फिर हाथी पर बैठ गई ।

सूर्य अस्त होने में कुछ ही देर थी जब उन्हें जंगलों के मध्य

गगन चुम्बी नीला महल दिखाई पड़ा...सुन्दरतम इमारत जो शक्य में विलंबित नजर आ रही थीं।

कानन हाथी से जब उतरने लगी तो उसने क्रोध भरे स्वर में कहा।

“तुम सब अयोग्य हो—मुझे एक हिन्दुस्तानी संरक्षक चाहिये...”

“आज्ञा का पालन—होगा—” बाबू ने नत मस्तक होते हुये कहा।

—०—

कासिम का मूड आज सवेरे से ही बहुत खराब था... बात केवल इतनी सी थी कि नाश्ता करने के बाद उसकी बीबी ने—अपनी एक सहेली की वर्ष गांठ पर तुहफा देने के लिये उससे कहा था कि वह सोने का निकलेस ला दे...बस इसी बात पर वह भड़क गया था और बिगड़ कर कहा था।

“मैं नाहीं लाऊँगा...किया तुम्हारा नौकर हूँ...किसी से मँगवा लो।”

और फिर बात बढ़ती ही चली गई थी।

इस समय भी वह अपने कमरे में बैठा क्रोधावस्था में फूल पचक रहा था फिर अचानक उसे महसूस हुआ कि उसे प्यास लगी है...बस यह ख्याल आते ही वह दहाड़ा।

“अब मर गये किया सालो—पानी लाओ !”

एक नौकर जल्दी से कमरे में दाखिल हुआ। उसके हाथ में एक छोटा सा पानी का गिलास था।

“यह किया है ?” उसने नौकर को घूरते हुये कहा।

“पानी साहब...” नौकर ने घबड़ाये हुये स्वर में कहा ।

“अवे किया... इत्ते से पानी से मैं खुशखशी करूँगा...” उसने आखें निकाल कर कहा ।

“जी साहब...” नौकर ने कुछ न समझते हुये कहा ।

“किया कहा... यानी की मैं मर जाऊँ ?” वह दहाड़ा ।

“अरे नहीं साहब... मैं बड़े गिलास में पानी लेकर आता हूँ...”

वह धिधियाता हुआ बोला ।

“अवे तो अब खड़ा खड़ा किया मुँह देख रहा है...” कासिम गरजा ।

वह बेचारा बीखला कर बाहर जो निकलने लगा तो कासिम की बीबी से टकरा गया । जो कासिम के कमरे में दाखिल हो रही थी—परिणाम यह हुआ कि हाथ में दवे हुये गिलास का पानी उछल कर कासिम की बीबी पर पड़ा और उसके कपड़े भीग गये । पहले तो उसने घूर कर नौकर की ओर देखा, फिर उसने मन्नाये हुये स्वर में कासिम से कहा ।

“यह सब क्या मचा रखा है आपने ?”

“कक... कुश तो नाहीं...” कासिम ने घबड़ाये हुये स्वर में कहा ।

“अमी जाकर चूँचा जान से कहती हूँ...” उसकी बीबी ने धमकी दी !

“जिआवो जिआवो कह दो... मैं किया किसी से डरता हूँ...” कासिम ने औरतों के समान हाथ नचाते हुये कहा ।

उसकी बीबी बड़बड़ाती हुई कमरे से निकल गई । वह कुछ क्षण तक तो मुँह फैलाये बैठा रहा, मगर फिर “अगे बाप ने” का मारा मार कर कमरे से निकल भागा । कारण यह था कि बीबी के जाने के बाद उसे अपने निर्दयी बाप का हन्टर याद आ गया था ।

फिर उसकी इम्पाला अकारण नगर की सड़कों पर चक्कर लगा हुई दिखाई दी।

काफी देर तक चकराते रहने के बाद उसने इम्पाला का आलेंक्चून की ओर मोड़ दिया।

आज वहाँ फ्री स्टाइल कुश्ती का मुकाबिला होने वाला था। जर्मन का कोई प्रसिद्ध फ्री फाइटर आया हुआ था। आलेंक्चून स्टेज पर उसका मुकाबिला देश के एक नकाबपोश फाइटर से होना वाला था। यह खबर कासिम ने सुबह के अखबार में देख रखी थी। इसलिये सोचा था कि सन्ध्या इस प्रकार व्यतीत की जाये।

जब से हमीद कर्नल विनोद के साथ लन्दन गया था तब से उसकी बोरियत बढ़ गई थी—और वह सोचने लगा था कि “सचमुझे हमीद भाई के बिना दुनिया में कुछ मजा नहीं...” यह सच था कि वह हमीद से बराबर लड़ता झगड़ता रहता था। मरने मारने के तैयार हो जाता था, मगर यह भी सच था कि हमीद के बिना कितना बस्तु में उसका दिल नहीं लगता था। घर में उसके कथनानुसार “गिलहरी जान” का शासन चलता था—इसलिये घर के खयाल से उसे उलझन होती थी—और बाहर बिना हमीद के सब कुछ बेकार था। किसी भी प्रकार के मनोरंजन में उसका दिल नहीं लगता था...”

सारांश यह कि वह अत्यन्त चिड़चिड़ा हो रहा था और बात पर काटने को दौड़ता था। आलेंक्चून के रिक्रियेशन हाल में तिल रखने का स्थान नहीं था। तमाम सीटें खर्चाखर्च भरी हुई थीं मगर चूँकि कासिम वहाँ का स्थायी सदस्य था, इसलिये उसे एक सीट मिल गई। आज स्थायी सदस्यों तथा नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अतिरिक्त और किसी के प्रवेश की आज्ञा नहीं थी। प्रतिष्ठित सज्जनों को क्लब की ओर से निमन्त्रण कार्ड भेजे गये थे।

प्रतियोगिता आरम्भ होने में अब कुछ ही मिनिट की देर थी। और लोग जर्मन फाइटर को जिसका नाम कोयलर था देखने के लिये व्याकुल हो रहे थे। कोयलर कोई साधारण फ्री फाइटर नहीं था। उसके बारे में प्रसिद्ध था कि उसने पूरे यूरोप में अपनी धाक जमा रखी थी और अब कुछ दिनों के लिये हिन्दुस्तान आया था। यहाँ भी अब तक उसे कोई पराजय नहीं कर सका था... और आज का मुकाबिला एक नकाबपोश से था... और यह उसका अन्तिम मुकाबिला था। इसके बाद उसे किसी दूसरे देश जाना था... मगर यह किसी को नहीं मालूम था कि यहाँ से उसे किस देश जाना है।

दर्शकों की इच्छा तो यही थी कि विजय नकाबपोश की ही हो। क्योंकि वह बहरहाल हिन्दुस्तानी था और नकाबपोश की भी ख्याति काफी थी, मगर इसकी आशा कम ही थी क्योंकि कोयलर ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका था और हिन्दुस्तान में भी अब कितक पराजित नहीं हुआ था... यहाँ के नामी नामी फ्री फाइटर भी उससे पराजित हो चुके थे।

कुछ क्षण बाद क्लब का मैनेजर स्टेज पर आया और उपस्थित सज्जनों को सम्बोधित किया।

“लेडीज ऐन्ड जेन्टिलमेन्स !

हमें यह घोषित करते हुये हर्ष हो रहा है कि आज हमारे मध्य यूरोप विजेता फ्री फाइटर मिस्टर कोयलर जो जर्मन हैं... मौजूद हैं और जिन्होंने हमारा निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया है। इस समय उनका मुकाबला एक नकाब पोश से है। नकाबपोश की इच्छा है कि उनका नाम प्रकट न किया जाये, इसलिये हम विवश हैं, किन्तु इतना बता देते हैं कि वह हिन्दुस्तानी है और प्रसिद्ध फ्री फाइटर है। जीत किसकी होगी... इस सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता... समय हो गया है। मुकाबिला देखने के लिये तैयार हो जाइये।”

इतना कह कर मैनेजर स्टेज के पीछे चला गया और दूसरे क्षण स्टेज पर रेफरी की सीटियाँ गूँजने लगीं... फिर स्टेज की एक ओर से एक नकाबपोश धीरे धीरे बढ़ने लगा। उसका पूरा शरीर काले रेशमी जालियों से ढका हुआ था। वह साढ़े छः फीट लम्बा था। बहुत ही शाली प्रतीत हो रहा था। उसकी लाल लाल आँखें नज़रों के अन्दर झाँक रही थीं...

दूसरे किनारे से कोयलर प्रकट होकर आगे बढ़ रहा था। उसका कद भी सात फीट से कम नहीं मालूम हो रहा था। भारी भालू और गेंडे के समान शक्तिशाली शरीर रखने वाला था। उसका वजन तीन मन से किसी भी प्रकार कम नहीं मालूम हो रहा था। वह इस प्रकार गुराँता हुआ आगे बढ़ रहा था जैसे कोई हाथी सड़क में झूमता हुआ बढ़ता है... और फिर दोनों एक दूसरे पर वार करने के लिये दाँव पेच के बारे में सोचने लगे।

हाल पर एक गहरी खामोशी छा गई थी और हर आदमी के दिल में लीन था, मगर प्रत्येक व्यक्ति का हृदय व्याकुल भी था...

कुछ ही मिनट में कोयलर नकाब पोश पर भारी नज़र आया। फिर कोयलर का घूँसा नकाब पोश के पेट पड़ा और वह पड़कर स्टेज पर ढेर हो गया... गिनती गिनी गई, मगर नकाबपोश उठ न सका...

मुकाबिला समाप्त हो गया था। नकाब पोश की पराजय कोयलर की विजय की घोषणा कर दी गई थी... और अब कोयलर स्टेज पर खड़ा डींगें मार रहा था।

“उपस्थित सज्जनों !

मैं समझता था कि आपके देश में एक ही शक्तिशाली पहलवान होंगे... मगर अब मुझे दुख है कि यह कहना पड़ रहा है कि यहाँ का कोई भी पहलवान

मेरे मुकाबिले में पाँच मिनिट भी न ठहर सका । यहाँ के लोग औरतों से भी अधिक कमजोर साबित हुये... शायद इसका कारण अच्छा खाद्य न हो...!”

इसी प्रकार की अनाप शनाप बातें वह बक रहा था... और तमाम लोगों को जैसे सांप सूँघ गया था । वह अपनी अपनी सीटों पर पड़लू बदल रहे थे । नकाब पोश की हार उन्हें अपनी हार मालूम हो रही थी, इसलिये कुछ कह भी नहीं सकते थे । कभी कभी उनकी निगाहें कासिम पर पड़ जाती और उनके चेहरे पर आशा की मन्द सी झलकियाँ दिखाई पड़तीं कि शायद यह कोयलर को ललकार दे— फिर वह सोच कर हताश हो जाते कि यह भारी लुँद वाला कोयलर क्या बिगाड़ सकता है ।

और कासिम अपनी सीट पर इत्मीनान से बैठा हुआ था और ऐसा लग रहा था जैसे वह कोयलर की बात सुन ही न रहा हो । उसके दाहिने बायें सुन्दर लड़कियाँ बैठी हुई थीं और शायद वह उन्हीं के विचारों में खोया हुआ था... फिर उसे इसकी क्या गरज होती कि कौन हारा कौन जीता !

लड़कियों में एक लड़की उसके कथनानुसार “तगड़ी” थी... एक बार जब कासिम ने उसे फिर कनखियों से देखना चाहा तो गर्दन कुछ अधिक घूम गई और नतीजे में दोनों की निगाहें टकरा गईं । लड़की मुस्कुरा पड़ी और कासिम के मन में लड्डू फूटने लगे । उसने सोचा कि काम बन गया था ।

दूसरी बार उसने बाकायदा तौर पर लड़की की ओर देखा और लड़की ने अपना बायाँ हाथ कुछ ऊपर उठा कर कलाई में पड़ी हुई चूड़ियों पर दाहिने हाथ की अंगुलियाँ रखीं और दो तीन बार अंगुलियों से चूड़ियों को बजाया ।

प्रकट है कि यह किसी प्रकार का संकेत ही था, मगर कासिम की

समझ में नहीं आ सका था। वह भाड़ सा मुँह खोले बस देखे ब
रहा था...।

अचानक वह लड़की अपनी सीट से उठ कर उसके पास आ
और बोली।

“मेरी बात आपने समझी?”

“नन—नाहीं—” कासिम ने चौखला कर कहा “अ
बात?”

“मैं जो अपनी चूड़ियाँ बजा रही थी?”

“नन...नाहीं...आप...कक...किया कह रही थीं?”

“मैं यह कह रही थी कि चूड़ियाँ हाजिर हैं...” उसने अपने
चूड़ियों की ओर संकेत करके कहा “इन्हें पहन लीजिये और
तशरीफ ले जाइये...”।

“ही ही ही...” उसने शमाये हुये भाव में हँसते हुये क
“आप मजाख कर रही हैं। चूड़ियाँ तो औरतें पहनती हैं।”

“आप क्या औरतों से कम हैं!” लड़की ने बड़ी जहरील
मुस्कान के साथ कहा।

“यह आप किया कह रही हैं...” कासिम को कुछ आश्च
हुआ।

“मैं ठीक कह रही हूँ...इतना बड़ा डील डौल लिये आप खामोश
बैठे हैं और वह पूरे मुल्क को गाली दे रहा है...” लड़की ने कहा।

“काउन गाली दे रहा है...सर तोड़ दूँगा साले का...” कासि
को ताव आ गया।

“कौयलर...मुनिये नां...”

कासिम ने स्टेज की ओर गर्दन घुमाई। कौयलर अब स्टेज
सीना ताने खड़ा कह रहा था।

“अभी आप लोगों ने देखा कि मैंने इस नकाब पोश पहलवा

को चींटी के समान मसल कर रख दिया। आपके पूरे देश में मुझसे मुकाबिला करने वाला कोई नहीं रहा। आप के यहाँ के पहलवान मोटे अवश्य हैं, मगर उनके शरीरों में भूसा भरा हुआ है... किसी में...।”

“अबे चूँ...” कासिम की गरजदार आवाज में कोयलर की आवाज दब गई और दर्पकण अपनी अपनी सीटों पर उचक उचक कर देखने लगे कि ललकारने वाला कौन है।

उधर कासिम बहे जा रहा था।

“अब तक जो कुश कहा वह कहा... अब अगर कुश कहोगे तो बवान खीन लूँगा... हाँ नहीं तो... अबे जियादा जोर बढ़ा है तो मुझ से मुकाबिला कर ले...।”

कोयलर चकित रह गया। फिर उसने मैनेजर से पूछा।

“वह आपसे मुकाबिला करना चाहता है...” मैनेजर ने कहा।

“ओह... अच्छा...” कोयलर ने मुसकुरा कर कहा और फिर कासिम की ओर देखने लगा।

मगर उसके चेहरे पर हर्ष की आभा थी... जब कि इस प्रकार की ललकार सुनने के बाद क्रोध से उसे लाल हो जाना चाहिये था। फिर उसने मैनेजर की ओर गर्दन घुमाई और बोला:

“क्या यह मुकाबिला अभी होगा...”

मैनेजर उत्तर नहीं दे सका, क्योंकि उसी समय कासिम “फो फो” करता हुआ स्टेज पर पहुँच गया था।

“क्या आप मुझसे फ्री स्टाइल कुश्ती लड़ेंगे?” कोयलर ने पूछा।

“अमे... फ्री स्टाइल साली तूम इंसने घर पर लड़ना...” कासिम ने कहा। फिर आँखें निकाल कर बोला “पहले यह बताओ कि तूम्ने कहा किया था?”

“क्या बात है...आप...”

मगर बात समाप्त होने से पहले ही कासिम का हाथ कोयलर की गर्दन तक पहुँच गया था, और वह आँखें निकाल कर कह रहा था ।

“साले...तूम खूद औरत हो...गाली काहे दे रहे थे साले ।”

बड़ी कठिनाई से लोगों ने कासिम के हाथों से कोयलर की गर्दन छुड़ाई और रेफरी उसे समझाने लगा कि इस प्रकार मुकाबिला नहीं किया जाता, जिस प्रकार वह कह रहा है ।”

“फिर कैसे किया जाता है ?” कासिम गरज उठा ।

“केवल घूँसे मारे जाते हैं और दाँव पेच लगाये जाते हैं ।”

“अमे तो ऐसे ही कर लो...मैं किया किसी साले से कमजोर हूँ ।”

“तो आप मुकाबिला करने के लिये तैयार हैं ?” रेफरी ने पूछा ।

“अमे तूम बहरे हो किया...कितनी बार कहूँ कि हाँ तैयार हूँ...”

“तो फिर आप फ्री स्टाइल कुश्ती का लिवास पहन लीजिये ।”

“किया मतलब ?” कासिम आँखें निकाल कर बोला ।

“मतलब यह कि कुश्ती वाला ड्रेस पहन लीजिये ।”

“ठेंगा पहन लीजिये...ऐसे ही लड़वाना हो तो लड़वाओ...समझे ।”

“जैसी आपकी मर्जी !” रेफरी ने कहा और एक ओर हट कर मुकाबिले के लिये सीटी बजाई ।

कोयलर खूँखार नजरों से कासिम को देखता हुआ उसकी ओर बढ़ने लगा ।

“अमे...यह तूम इस तरह घूर कियूँ रहे हो ?” कासिम उसकी

और देखता हुआ बोला ।

मगर दूसरे ही क्षण उसके सोने पर एक घूँसा पड़ा था ।

और फिर कोयलर यह देख कर चकित रह गया था कि कासिम अपने स्थान से हिला तक नहीं था... जब कि वह इतना ही जँचा तुला हाथ था कि अगर किसी जंगली भैंसे पर भी पड़ा हाता तो वह डकार कर बैठ गया होता... मगर वह उसी प्रकार खड़ा मुस्कुरा रहा था ।

“अमे और मारो... किया एक ही हाथ में थक गये...” उसने कहा और उसे आँख मारी । प्रकट है कि इस प्रकार उसकी दोनों आँखें बन्द हो गई होगी ।

कोयलर भन्ना गया । उसने लगातार कासिम पर कई घूँसे बरसाये और टाँगों से कैची लगा कर उसे गिराने का प्रयास किया... उसी समय कासिम का एक जोरदार घूँसा उसका दाहिनी भुजा पर पड़ा और उसे ऐसा लगा जैसे दाहिनी भुजा बेकार हो गई हो और फिर कासिम कहाँ रुकने वाला था । उसके घूँसे कोयलर के शरीर पर हथौड़े के समान पड़ते रहे ।

अन्त में कोयलर कराह कर स्टेज पर गिर पड़ा, मगर कासिम पातालों के समान घूँसे बरसाता ही रहा... अन्त में कोयलरने अपना बायाँ हाथ ऊपर उठाया और इस प्रकार अपनी पराजय स्वीकार कर ली । कासिम को बड़ी कठिनाई के बाद काबू में लाया गया वना उसके हाथ तो रुकने का नाम नहीं ले रहे थे ।

पूरा हाल “वाह वाह—शाबाश शाबाश” के नारों से गुँज रहा था और कुछ जियाले तो स्टेज पर चढ़ आये थे और कासिम को गोद में उठाने की कोशिश कर रहे थे और कासिम—वह तो इस समय अपने को किसी फ़िल्म का हीरो समझ रहा था । उसके लिये तो इतना ही बहुत था कि लड़कियाँ उसे प्रश्नात्मक दृष्टि से देख रही

थीं—और उस समय तो सचमुच उसका सीना गर्व से फूल गया जब स्टुडेंट लड़के और लड़कियों ने उसे घेर लिया ।

“श्रीमान जी ! हमें आपके आटोग्राफ चाहिये । आप जैसा बहादुर और ताकतवर आदमी तो हमने अब तक नहीं देखा—” एक सुन्दर लड़की ने कहा ।

“आपने देश की लाज रख ली—” एक दूसरी लड़की ने कहा ।

“मगर साहब ! आपने उसे खूब पछाड़ा । कैसा बढ़ बढ़ कर बोल रहा था ।”

और कासिम हवन्नकों के समान उत्तर में “जी हाँ—जी गाँ” करता जा रहा था ।

मगर दिल ही दिल में यह भी सोचता जा रहा था कि—“न हुये गमीद भाई तूम—दर्ना देखते मेरा कारनाना—मगर साले—तूम होते तो देख कर जल जाते—।”

अन्तिम वाक्य उसके मुँह से जरा जोर से निकल गया था और वह आदमी एकदम से चौंक पड़ा था जो उसे बड़े ध्यान से देख रहा था—फिर वह पूछ भी बैठा ।

“क्या आपने मुझसे कुछ कहा था—?”

“किया ?” कासिम बौखला गया ।

“शायद आपने मुझसे कुछ कहा था ?” उसी आदमी ने कहा ।

“अरे नहीं—” वह हँस पड़ा “वह तो मैंने अपने गमीद भाई को कहा था ।”

उसी समय सुन्दर लड़कियों की एक दूसरी टोली आ गई और बारी बारी सब उसकी प्रशंसा करने लगीं । ऐसे अवसरों पर कासिम बिल्कुल नर्वस नजर आने लगता था—और यही हाल इस समय भी हुआ । वह “जी गाँ—और किया” कहता जा रहा था और लजा

कर अपनी अँगुलियाँ मरोड़ता जा रहा था—फिर एकदम से चीख पड़ा।

“अरे बाप जे—।”

“क्या हुआ ?” एक लड़की ने घबड़ा कर पूछा।

“कुश नाहों—” कासिम ने कहा।

“फिर आप चिल्लाये क्यों ?”

“अरे—वह जरा जोर से दब गई थी ?” कासिम ने लज्जाते हुये कहा।

“क्या जोर से दब गई थी ?”

“अँगुली —” कासिम ने कहा।

इस पर तनाम लड़कियाँ और लड़के खिलखिला कर हँस पड़े। वह सब कासिम की मूर्खताओं से पूरा पूरा आनन्द उठा रहे थे।

फिर यह लोग वहाँ से डाइनिंग हाल में आकर बैठ गये। यहाँ चमचों की झनझनाहट और प्लेटों की खनक सुन कर कासिम की भूल जाग उठी और वह अपने अवरों पर जवान फिरने लगा।

उसी समय उसकी नजर कोयलर पर पड़ी जो धीरे धीरे कदम रखता हुआ हाल में दाखिल हो रहा था। उसके साथ चार विदेशीय सशक्तियाँ और तीन पुन्न थे। उसने बैरा को खाने का आर्डर दिया—और जब उसके सामने खाना लगाया गया तो कासिम के साथ वाले चौंक पड़े। उसके सामने बकरे की एक मुसल्लम रान और एक मुना हुआ मुर्ग था। चूँकि वह कासिम की मेज के पास ही वाली मेज पर बैठा था इसलिये कासिम तथा उसके साथ वाले उसे अच्छी तरह देख रहे थे। जब उन्होंने खाने की यह मावा देखी थी तो चौंक पड़े थे और एक लड़की ने कहा।

“ओह ! इस आदमी का कितना बड़ा पेट है—।”

“इतना खाता है तब ही तो इतनी शक्ति रखता है—” दूसरी ने

कहा ।

तीसरी जो सबसे सुन्दर और चञ्चल थी । उसने कासिम को सम्बोधित करके कहा ।

“क्या आप भी इतना ही खाते हैं ?”

“यह साला किया खायेगा—” कासिम ने अकड़ कर मगर धीरे से कहा, फिर बैरा को बुला कर दो पूरी रान और दो भुने हुये मुँग लाने को कहा ।

जब बैरा चला गया तो उसी चंचल लड़की ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा ।

“क्या सचमुच आप इतना ही खाते हैं—?”

“और नहीं तो किया—” कासिम ने गर्दन अकड़ा कर कहा “तभी तो मुँह से लोहे के गोले निकालता हूँ—सवार समेत मोटा साइकिल उठा कर एक फुट पाथ से दूसरे फुटपाथ पर रख आता हूँ—चूल्हे पर से भरी देग अकेले उठा लेता हूँ—अजी और किया किया बताऊँ—अपने मुँह से अपनी तारीफ अच्छी नहीं लगती—ही ही ही—।”

“तब तो आपको किसी सर्कस में होना चाहिये था—” एक लड़के ने कहा ।

“जी हाँ—और किया—” कासिम धुन में कह गया । मगर फिर तत्काल ही भड़क कर बोला “आपने किया कहा—किया साला मैं कोई जोकर हूँ—।”

लड़का उसका रंग देख कर एक दम से बौखला गया । दूसरों की भी यही दशा हुई थी, मगर चञ्चल लड़की ने जल्दी से बात बराबर कर दी ।

“आप गलत समझे मिस्टर कासिम—यह तो आपकी ताकत की तारीफ कर रहे थे ।”

“अच्छा अच्छा—ही ही ही—” कासिम हँस पड़ा, फिर बोला “अगर तारीफ ही करनी है तो इनसे कहिये कि ठीक से तारीफ करें—।”

इतने में उसके सामने खाना लग गया और वह सब कुछ भूल कर रान उधेड़ने में जुट गया। अब कोयलर तथा उसके साथी चक्रित दृष्टि से उसे देख रहे थे।

“यह आदमी तो बिल्कुल देव मालूम होता है—” कोयलर ने धीरे से कहा।

“साथ ही साथ उतना ही शक्तिशाली भी—” उसके एक साथी ने कहा।

“इसकी शक्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता—” कोयलर ने कहा “मैंने बड़े बड़े शक्तिशालियों को देखा—मगर इतना शक्तिशाली आज तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा।”

“ओह—देखिये—दूसरी टांग पर हाथ साफ कर रहा है—।”

“जिस समय इसने मुझे पहला घूँसा मारा था तो बस यही मालूम हुआ था जैसे कोई पत्थर टूट कर मेरी भुजा पर गिर पड़ा हो—” कोयलर ने कहा।

“यह आदमी हमारे काम कामालूम होता है—” तीसरे ने कहा।

“तुमने बिल्कुल ठीक कहा है हिटन ?” एक लड़की बोली “सचमुच यह हमारे काम का है।”

“मगर यह बहुत बड़े धनी आदमी का लड़का है। सरलता से काबू में नहीं आयेगा—” कोयलर ने कहा। अब वह भोजन समाप्त करके सिगरेट सुलगा रहा था।

“कोई कितना ही धनी क्यों न हो—मगर उसकी दौलत की भूख नहीं मिटती—” उस लड़की ने मुस्कुराते हुये कहा।

“तुम कइना क्या चाहती हो ?” दूसरी लड़की ने कहा।

“यही कि—इसे भी दौलत की लालच देकर अधिकार में किया जा सकता है।”

“बिल्कुल गलत....” कोयलर ने कहा “इसकी नजरों में रुपये का कोई मूल्य नहीं है—इसलिये नहीं है कि यह अभी तक पैसा पैदा करने के चक्कर में नहीं पड़ा है। केवल खर्च करता रहा है—जितना दिल चाहता है खर्च करता है—कोई रोकने वाला नहीं—कोई टोकने वाला नहीं। मुझे यहाँ तक खबर मिली है कि इसके नाम लाखों का बैंक बैलेन्स है—और उसका यह खुद मासिक है—फिर ऐसा आदमी रुपयों के बल पर कैसे कानून में लाया जा सकता है।”

“फिर ?” हिटन ने निराश भरे स्वर में पूछा “क्या यह हमारे हाथ नहीं लग सकता ?”

“लग सकता है—मगर दूसरी तरह—” कोयलर ने मुस्कराते हुये कहा “यह आदमी मुझे पूरा मूल्य मालूम होता है—और मैं यह भी समझ गया हूँ कि इसकी कमजोरी लड़की है।”

“यह आपने कैसे समझा ?” हिटन ने चौंक कर पूछा। दूसरे साथी भी कोयलर के इस विचार पर चौंक पड़े थे।

“इस तरह कि मैं बड़ी देर से स्टेज पर डींगें खार रहा था और वह भी वहाँ मौजूद था। मगर इसकी कान पर जूँ नहीं रेंगी थी। डींगें मारते समय मेरी नजरें अधिकतर इसी पर थीं... क्योंकि दर्शकों में इस डील डौल का कोई आदमी नहीं था... और मैं इसे भी पहचान ही समझ रहा था... और सच पूछो तो मैं इसी को ताब दिया रहा था... मगर उस से मस नहीं हुआ था... फिर एक लड़की अपनी सीट से उठ कर इसके निकट गई थी... मैं नहीं कह सकता कि उसने इस देव से क्या कहा था... मगर उसी समय यह भड़क गया था और उठ कर तनतनाता हुआ स्टेज पर पहुँच गया था। उसके बाद जो कुछ हुआ था उसे तुम लोगो ने देखा ही था... इसी से मैं इस

निष्कर्ष पर पहुँचा था कि इसकी कमजोरी लड़कियाँ हैं... खुद ही देखो... लड़कियों के मध्य में किस प्रकार अपने को राजा इन्द्र महसूस कर रहा है !”

“आपने बिल्कुल ठीक कहा है...” हिटन ने कहा “मगर इसके बारे में आपको और बातें कैसे मालूम हुईं ?”

“मैनेजर ने बताया था...” कोयलर ने कहा और कासिम की ओर देखने लगा ।

कासिम भोजन समाप्त कर चुका था और अपने पेट पर हाथ फेरते हुये लम्बी डकारें ले रहा था । लड़कियाँ तथा लड़के अभी उस के साथ बैठे हुये थे और वह उनकी बातों से आनन्द उठा रहा था ।

“चलो... चल कर उससे बातें की जायें...” कोयलर ने कासिम के साथियों से कहा ।

फिर सब उठ कर कासिम के पास आये और कोयलर ने बड़ी शिष्टता के साथ कासिम से पूछा ।

“अगर आपकी इजाजत हो तो हम आपके पास बैठ जायें ।”

“जरूर जरूर... बड़ी खुशी से...” कासिम ने दांत निकाल कर दर्प का प्रदर्शन किया, मगर तत्काल ही यह सोच कर परेशान भी हो गया कि उन्हें बैठाये कहाँ । तमाम कुर्सियाँ तो भरी हुई थीं । उसके साथ बैठे हुये लड़कियों तथा लड़कों ने स्थिति भाँप ली और वह जल्दी से उठ कर खड़े हो गये ।

फिर एक लड़के ने कहा ।

“अब हमें इजाजत दीजिये कासिम साहब...”

“किस बात की इजाजत ?” कासिम ने कहा ।

“हम लोग अब जाना चाहते हैं... फिर दर्शन को आयेंगे ?”

“दर्शन को नहीं...मंगल को आइयेगा...किथू...ठीक है न
कासिम ने कहा।

उन्होंने कासिम की इस बात पर बड़ी कठिनाई से अपनी
रोकी और फिर उससे हाथ मिला मिला कर चले गये।

“आप लोग तशरीफ रखिये...” कासिम ने उनसे कहा।
उस लड़की को देखने लगा जो चारों में सबसे अधिक सुन्दर थी
और स्वस्थ भी।

बैठने के बाद कोयलर ने कासिम को कहा।

“अगर आप मुनासिव समझें तो थोड़ी देर के लिये हमारे
चलें।”

“कहाँ...?” कासिम ने पूछा।

“ऊपर कमरे तक...”

“वह कहाँ?”

“आपसे कुछ जरूरी बातें करनी है...”

“अमे तो यहीं कर लो ना...”

“नहीं जनाव...बातें कुछ ऐसी हैं जो यहाँ नहीं की
सकती...” कोयलर ने बड़े कोमल स्वर में कहा।

“नाहीं नाहीं...मैं नाहीं जाऊँगा...यहीं बातें करो...”
इट पकड़ गया।

कोयलर ने उसी लड़की को धीरे से कुहनी मारी जो सबसे
और स्वस्थ थी और जिसे कासिम अब तक न जाने कितनी बार
चुका था। उस लड़की ने बड़ी अदा से वल खाते हुये कहा।

“प्लीज मिस्टर कासिम...हम आपके मेहमान हैं...हमारा
न तोड़िये...चलिये...”

“आप कहती हैं तो चलता हूँ...चलिये।”

फिर यह लोग वहाँ से उठ कर एक कमरे में आये, जो

बड़ा भी था और हवादार भी था। बीच में एक मेज थी और उसके
इधर उधर कुर्सियां पड़ी हुई थीं।

“बैठिये...” उसी लड़की ने एक कुर्सी की ओर संकेत करते
हुये कासिम से कहा।

“जी नहीं... पहले आप तशरीफ़ रखिये...” कासिम ने कहा।
वह खिला जा रहा था।

“लीजिये...” लड़की ने बैठते हुये कहा “अब तो बैठिये।”

“जी हां... अब बाटूँ गा...” कासिम ने कहा और बैठ गया।

फिर कोयलर तथा उसके शेष साथी बैठे।

जिस समय कोयलर ने कासिम से अपने कमरे में चलने के लिये कहा
था, उस समय उसके दिमाग में यह सारे सवाल एक के बाद एक
करके गूँजे थे कि... आखिर यह लोग क्या चाहते हैं?—फिर
तर्ह की बातें करना चाहते हैं?... यह आदमी कोयलर जिसे कुछ
देर पहले उसने बुरी तरह पीटा था, आखिर उससे इस प्रकार की
लगावट की बातें क्यों कर रहा है?—कहीं कोई घपलों तो नहीं है...?
और इसीलिये वह कोयलर के साथ जाने से इन्कार भी कर रहा
था—मगर था तो कासिम ही... जिसकी मानसिक धारा प्रतिक्षण
बदलती ही रहती थी—और विशेष रूप से उस समय तो वह अपनी
मूक वृक विलकुल ही गँवा बैठता था जब कोई लड़की उससे लगावट
की बातें करने लगती थी। इस समय भी यही हुआ था। जब तक
कोयलर उससे अपने साथ चलने के लिये कहता रहा था तब तक तो
उसे अपने अच्छे बुरे तथा घपले और खतरे का ख्याल था, मगर
जब उस लड़की ने चलने के लिये कहा था तो सारी बातें उसके दिमाग
से निकल गई थीं और वह उठ कर यहाँ चला आया था। लड़कियों
के चक्कर में पड़ कर न जाने वह कितनी बार मूर्ख बन चुका था—
पीटा गया था—रुपये बर्बाद हुये थे... जान जाते जाते बची थी—

मगर यह सारी बातें उस समय भूल जाया करती थी जब कोई लड़के फिर लिफ्ट देती थी।

“मैं आपको बधाई देता हूँ मिस्टर कासिम ?” अचानक कोयल ने कहा।

“काहे की बधाई भाई साहब ?” कासिम ने आश्चर्य के साथ कहा।

“आपने जिस आसानी से मुझे हरा दिया उसकी बधाई कोयल ने मुस्कुरा कर कहा।

“जी हां—यह मिस्टर कोयलर समझ रहे थे कि हिन्दुस्तान कोई पहलवान ही नहीं—यहां के लोगों के वदन में ताकत ही नहीं मगर आपने उनके दांत खट्टे कर दिये—” उसी लड़की ने कहा।

“आप किया कह रही हैं...?” कासिम ने कहा।

“मैं ठीक कह रही हूँ मिस्टर कासिम—” लड़की ने कहा “की ताकत देख कर मैं तो दंग रह गई... अब सोचती हूँ काश...।”

“हां हां कहिये—यह आप चूप कियूँ हो गईं—” कासिम ने कहा।

मगर लड़की ने कुछ कहने के बजाय अपना सर झुका लिया।

“मुझे आपसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं मिस्टर कासिम कोयलर ने कहा।

“अमें कुश किया... बहुत ही जरूरी बातें कर लेना... मगर पता हनसे तो कर लेने दो...” कासिम ने कहा।

“उन बातों में कुछ बातें मिस सोनी की भी हैं...” कोयलर ने कहा।

“किया ?”

“मिस सोनी आपको पसन्द करने लगी हैं...”

“अच्छा...” कासिम झटके में कहा गया, फिर चौंक कर बोला
 “भगर यह मिस सोनी है कहाँ ?”

कोयलर ने उसी लड़की की ओर संकेत कर दिया और कासिम
 एक क्षण के लिये बिल्कुल ही गड़बड़ा गया, फिर वह उसे देखने
 लगा। लड़की सचमुच सुन्दर थी और इस समय हल्के गुलाबी स्केट
 में तो बड़ी ही जैव रही थी। कासिम तो पहले ही उस पर मर मिटा
 था और अब कोयलर के मुख से यह सुन कर कि लड़की भी उस पर
 मर मिटी है... उसका सीना और फूल उठा।

“मिस सोनी आपसे कोर्टशिप करना चाहती हैं—” कोयलर ने
 फर कहा।

“अमे जिआवो...” कासिम हँसता हुआ बोला “किया...
 को बेकूत बनाना...”

“इसमें बेकूत बनाने की बात क्या है मिस्टर कासिम ?”

“और नहीं तो किया है... अभी कुश हुआ ही नहीं और कोर्ट
 पहुंच गये।”

“ओह !” कोयलर हँस पड़ा “आप समझे नहीं...”।

“तो समझाओ ना ?”

“हमारे यूरोप में शादी से पहले लड़का और लड़की एक साथ
 रहते हैं। साथ साथ सैर तंफरीब करते हैं—यह इसलिये होता है कि
 दोनों एक दूसरे को खूब अच्छी तरह समझ वूम लें... इसे कोर्टशिप
 कहा जाता है—फिर शादी होती है।”

“तो यह मेरे साथ चलेगी ?” कासिम ने पूछा।

“आप खुद ही इनसे पूछ लीजिये...” कोयलर ने कहा।

“आसे पूछूँ—यह तो नीचे देख रही हैं...” कासिम ने

सोनी ने सर उठाया। दोनों की नजरें टकराईं और कोयलर ने

अपने साथियों को संकेत किया। वह धीरे धीरे बाहर निकल गये।

“अच्छा मिस्टर कासिम। आप लोग बातें कीजिये। मैं आता हूँ...” कोयलर ने कहा और उठ कर बाहर चला गया।

“हाँ अब बताइये... आप मेरे साथ चलेंगी ?” कासिम पूछा।

“नहीं... आप मेरे साथ चलेंगे...” सोनी ने कहा।

“किया फरक पड़ता है... दोनों एक ही बात है...” कासिम

कहा।

“तो फिर आप चलेंगे ना ?” सोनी ने पूछा।

“जल्द—मगर कहाँ चलेंगे ?”

“...या की सैर करने...” सोनी ने कहा।

“जल्द चलोँगा...” कासिम हर्षित होता हुआ बोला “कसम बड़ा मुजा आयेगा।”

“तो फिर तैयार हो जाइये।”

“कब चलना होगा ?”

“आज ही...” सोनी ने कहा।

“यह कैसे हो सकता है... कल बैंक से रुपये निकलेंगे चलेंगे...”

“रुपयों की फिक्र मत कीजिये...” सोनी ने कहा।

“काँहे ना करूँ... तुमने मुझे किया समझा है ?” कासिम गया।

“मैं आपको क्या समझती हूँ यह तो मेरा दिल ही जानता है” सोनी ने बड़ी अदा के साथ मुँकुरा कर कहा “रुपयों की बात इसलिये कहाँ थी कि हमारे यूरोप में यह भी कायदा है कि जो आशिक होता है वही खर्च भी करता है... और यह तो आप ही लेंगे कि पहले मैं... इसलिये पैसे मेरे ही खर्च होंगे... बस

अपना पासपोर्ट मँगवा लीजिये ।”

“वह तो मेरी जेब में ही रहता है...” कासिम ने कहा ।

“लाइये... निकालिये...” सोनी ने कहा ।

और इस प्रकार सवेरा होने में जब कुछ घंटे शेष रह गये तो कासिम इन लोगों के साथ हवाई लहाज से रवाना हो गया ।

“मेरा अनुमान है कि हर मैजिस्टी इसे देख कर हर्षित होगी...” कोयलर ने अपने साथी से कहा “और शायद उन्हें ऐसी ही बाड़ी गार्ड की आवश्यकता भी है ।”

“लेकिन यदि इसे यह पता चल गया कि यह किसी का बाड़ी गार्ड है तो बड़ी उधम मचायेगा, क्योंकि इसमें यह अपना अपमान समझेगा...” साथी ने कहा ।

“हां—यह तो है—” कोयलर ने चिन्ताजनक स्वर में कहा, फिर हर्षित होता हुआ बोला “हम हर मैजिस्टी से कह देंगे कि प्रकट में इसे कोई अच्छा सा पद दिया जाये और काम बाड़ी गार्ड का लिया जाये... और हम इसे उसी नाम से पुकारेंगे जो पद इसे दिया जायेगा...”

“यह ठीक है... लेकिन यदि इसने सोने के लिये जिद की तो क्या होगा ?”

“चिन्ता न करो...” कोयलर ने सुसुरा कर कहा, ऐसे लोगों को सोनी अच्छी तरह भुगुतना जानती है ।”

ल्यु पोल्डवेल से कासिम को कार से ले जाया गया था—फिर जीप द्वारा जंगल पार कराया गया था । कुछ लोग साथ छोड़ गये थे और कुछ अब भी साथ थे । साथ रहने वालों में सोनी भी थी—

और फिर जब कासिम नीला महल के निकट पहुँचा तो उसको आखें फैल गईं । नीलम तथा याकूत से बना हुआ यह महल ऐसा ही लगता था जैसे शून्य में विलंबित हो । ऐसा इसलिये प्रतीत होता

था कि काफी ऊँचाई पर बनाया गया था। और जब कासिम को भ्रन्दर पहुँचाया गया तो वह सचमुच चौखला गया, क्योंकि सोने की बेंसी बहुत सारी लड़कियाँ वहाँ मौजूद थीं और वह सब भी विदेशी ही थी।

कानन से पहले ही बता दिया गया था कि वह कासिम को बाड़ी गार्ड के बजाय ए० डी० सी० नम्बर दो कहा करे—इसलिये वह कासिम को उसके सामने प्रस्तुत किया गया तो उसने उसको ए० डी० सी० ही कह कर सम्बोधित किया।

“यानी कि सेक्रेटरी—” कासिम ने कहा और फिर उसकी ही ही आरम्भ ही होने वाली थी कि कानन ने उसे घूरा और उसे अपनी से माँ बन्द कर लिया। सच्ची बात यह थी कि वातावरण से उसे आतंकित कर दिया था।

फिर कानन के साथ उसे एक बड़े कमरे में आना पड़ा। यहाँ शीशे की बड़ी बड़ी स्क्रीनें लगी हुई थीं। मध्य में एक बड़ी सी मेज थी जिसमें सैकड़ों बटन लगे हुये थे और हर बटन पर संसार के एक बड़े शहर का नाम लिखा हुआ था। जिस बटन को दबाया जाता, उस शहर के नाम वाली स्क्रीन प्रज्वलित हो जाती—फिर ऊपर पर एक आदमी का चेहरा नजर आता—जो पहले नत मस्तक होता और फिर बोलने लगता था। बटन दबाने का काम कानन ही करता था। कभी कभी प्रकाश का लहरें कानन के चेहरे पर भी पड़ जाती जाती थीं—मगर खुद कानन भी अभी तक यह नहीं समझ पाती थी कि इन सब का मतलब क्या है ?

इस समय भी कानन ने एक बटन दबाया। बटन पर जिस नगर का नाम लिखा हुआ था उसी नगर के नाम वाली स्क्रीन प्रज्वलित हो गई—एक चेहरा उमरा और फिर वह रिसोर्ट देने लगा।

“कर्नल विनोद अभी तक हास्पिटल में ही है मगर उस

असिस्टेंट कैप्टन हमीद बहुत जल्द लेडी वाल्टर के साथ रवाना होने वाला है।”

“कोशिश करो कि उन्हें मार्ग ही में खत्म कर दिया जाये—” कानन ने कहा।

“अगे अगे...” कासिम जल्दी से बोल उठा।

“चुप रहो—” कानन ने गर्दन घुमा कर कहा। फिर अपने सामने लगे हुये माइक की ओर मुँह करते हुये कहा “लेडी वाल्टर को या तो कत्ल कर दो या फिर उसे गायब कर दो...बस...”

कासिम आँखें फाड़े कानन को देख रहा था।

—:—

कैप्टन हमीद ने लेडी वाल्टर की ओर देखा, फिर बोला।

“मगर तुम इतनी सुन्दर तो नहीं लगती कि तुम्हें रानी या महारानी समझ लिया जाये!”

“क्या रानियाँ इतनी ही सुन्दर होती हैं?” लेडी वाल्टर ने पूछा।

“इतनी ही नहीं...बहुत ही सुन्दर होती हैं—दूध भी देती हैं...” हमीद ने कहा “अभी कुछ ही दिन हुये कि एक जंगल की महारानी से मेंट हुई थी। वह ब्रैठी जुगाली कर रही थीं। मैंने बहुत कोशिश की...कि वह उठ कर मेरे साथ डांस करें मगर वह टस से मस नहीं हुईं। जब एक मोटर ने हार्न दिया तो मुँह बनाती हुईं उठीं और एक ओर चली गईं—”

“मैंने सुना था कि कर्नल विनोद बहुत गम्भीर आदमी है...”

“मगर मेरा नाम कर्नल विनोद नहीं बल्कि हमीद है। तुम मुझे हमाइड भी कह सकती हो। मास्को वाले हमीद यूफ कहते हैं और

अमरीकन हेमिड कहते हैं—”

“तुम्हारी और कर्नल की निमती कैसे हैं...आखिर वह तुम्हें कैसे सहन करता है ?”

“जिस तरह मैं तुम्हें आज तीन दिनों से सहन कर रहा हूँ...”
हमीद ने कहा ।

अचानक लेडी वाल्टर चौंक पड़ी...फिर उसने एक ओर संकेत करते हुये हमीद से पूछा ।

“यह कौन है...इसे पहचानते हो ?”

“इसकी सात पुश्त को पहचानता हूँ—मगर तुमने यह सवाल क्यों किया ?”

“मैंने इसे कई बार सर वाल्टर का पीछा करते हुये देखा था...”

हमीद ने कुछ नहीं कहा और उस आदमी की ओर देखने लगा जिसकी ओर लेडी वाल्टर ने संकेत किया था । यह पापेन था । कलई रंग का सूट पहने हुये । बड़ी लापरवाही से कदम रखता हुआ उन्हीं दोनों की ओर आ रहा था ।

पिछले तीन दिनों में हमीद को लगातार चौबीस घन्टों में से लगभग बारह सोलह घन्टे लेडी वाल्टर के साथ व्यतीत करने पड़े थे । इस काम में सब से बड़ी कठिनाई यह हुई थी कि वह एकाकीय का शिकार रहा था और बहुत ही बोर होता रहा था । आरम्भ में तो उसने रिपोर्ट लिखकर विनोद के हवाले कर दी थी और नीचे यह भी लिख दिया था कि यह मक्खी मार काम उससे नहीं हो सकता...लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई थी और उसे दो दिन तक और लेडी वाल्टर के पीछे लगे रहने पड़ा था...फिर उसे विनोद की ओर से एक पुर्जा मिला था जिसमें केवल एक लाइन की इबारत टाइप की हुई थी “आखिर कब तक अँगुली पकड़ कर चलते रहोगे...”

इस इवारत ने उसके स्वाभिमान को जगा दिया था और वह निश्चय कर बैठता था कि वह खुद ही परिस्थिति को समझेगा और फिर जो उचित समझेगा वह करेगा। प्रकट है कि लेडी वाल्टर के जीवन की रक्षा करना न उसका कर्त्तव्य था और न इसका उत्तरदायित्व उस पर था। लेडी वाल्टर से उसे कोई विशेष सहानुभूति भी नहीं थी...लेकिन लेडी वाल्टर की कहानी ने उसके मन में लेडी वाल्टर के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर दी थी...दूसरे उसे अपने देश की ओर से सख्त आदेश मिला था कि वह येस० आई० येस० नाम की संस्था का पता लगाये और यह मालूम करने की पूरी कोशिश करे कि इस संस्था की संचालिका हिन्दुस्तानी औरत कौन है। बाद में यह सूचना भी मिली थी कि इस संस्था का ~~हिन्दुस्तानी~~ नीला महल है...और पिछले दिनों देश के सीमाना प्रदेशों में जो विनाशात्मक कार्य किये गये थे...उससे यही नीला महल लेडी वाल्टर के साथ सम्बन्धित था।

इन सारी बातों को सामने रखते हुये उसे पूरा विश्वास हो गया था कि वह लन्दन केवल कर्नल विनोद की परिचर्या के लिये ही नहीं आया है...और फिर यह बात भी उसकी समझ में आ गई थी कि विनोद अपना इलाज हिन्दुस्तान में भी करा सकता था...उसके लन्दन आकर इलाज कराने का मतलब यही था कि उसे यह सारी बातें मालूम थीं और वह इस जखमी हालत में भी अपना कर्तव्य नहीं भूला था...इस दशा में होते हुये भी वह काम करना चाहता था।

और अब इसी लिये वह नीली वाल्टर और पापेन को महत्व दे रही था... इसलिये कि यह दोनों नीला महल तक पहुँचना चाहते थे और पापेन येस० आई० येस० की संस्था को तोड़ना चाहता था। आज उसे पापेन का सन्देश मिला था। जिस में उसने रिवाल्वों

में मिलने के लिये कहा था और यह भी संयोग ही था कि लेडी वाल्टर ने भी उसे रिवाल्वो ही में बुलाया था...मगर इन दोनों से अधिक महत्व पूर्ण बात यह थी कि उसे विनोद ने एक पुर्जा भेजा था जिसमें लिखा गया था कि...“उसे तीन बजे हर दशा में रिवाल्वों पहुंच जाना है...अगर वहाँ कोई हिन्दुस्तानी मिले और तुम्हें कोई वस्तु दे तो चुपचाप ले लेना, और मिली हुई वस्तु को अपने निवास स्थान पर ही आकर देखना।”

और अब वह लेडी वाल्टर के साथ रिवाल्वों में बैठा उसी किसी हिन्दुस्तानी का इन्तजार कर रहा था...मगर किसी हिन्दुस्तानी के बजाय उसे पापेन अपनी ओर आता हुआ दिखाई दे रहा था।

पापेन सीता हमीद ही वाली मेज पर आया था...और बिना पूजा मांगे ही बैठ गया था...और अपने हाथों में दवे हुये कई समाचार पत्रों को खोल कर पढ़ने लगा था...लेडी वाल्टर को पापेन का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा था...वह हमीद से कुछ कहने ही जा रही थी कि पापेन ने समाचार पत्रों से नजरें हटा कर उसकी ओर विचित्र निगाहों से देखा और वह बुरी तरह चौखला गई। हमीद उस की चौखलाहट भांप गया और मुस्कुरा कर बोला।

“यह मिस्टर वान पापेन हैं...मेरे दोस्त ! तुम इन पर भरोसा कर सकती हो। यह तुम्हारे हमदर्द है...” फिर उसने पापेन से कहा “यह लेडी वाल्टर हैं।”

“ओह !” पापेन ने मुस्कुरा कर कहा फिर हमीद से बोला “तो इसका यह अर्थ हुआ कि तुम्हें पहले ही से सूचना मिल गई थी।”

“किस बात की सूचना !” हमीद ने पूछा।

मगर पापेन ने उसके प्रश्न का उत्तर देने के बजाय सारे अखबार मेज पर रख दिये, फिर उन में से सन्डे टाइम्स उठाया और उसे जरा सा तिर्छा करके हमीद को संकेत किया। हमीद झुक कर देखने लगा।

सन्डे टाम्स के इस वीकली एडिशन में एक औरत की छोटी सी तस्वीर छपी थी जिस का शीर्षक था “अपराधी का कोई देश नहीं होता।”

खबर में एक ऐसी औरत का उल्लेख किया गया था जिस के बारे में अभी तक यह पता नहीं लगाया जा सका है कि वह संसार के किस देश से सम्बन्ध रखती है। इसी के साथ एक ऐसे आदमी के बारे में भी लिखा गया था जो अपनी सूरत शक्ल के विचार से संसार के किसी भी देश का निवासी कहा जा सकता था। खबर की अन्तिम पक्ति यह थी कि—और आज वह दोनों रिवालों जायेंगे। उन्होंने सन्डे टाइम्स के पाठकों के नाम यह सन्देश भेजा है।

“तो फिर!—” हमीद ने पूरी खबर पढ़ने के बाद पापेन पर प्रश्नात्मक दृष्टि डालते हुये कहा “तो क्या मैं यह समझूँ कि वे औरत लेडी वाल्टर हैं और वह आदमी खुद मैं हूँ।”

“नहीं नहीं...मैं तो यह जानना चाहता था कि तुम ने यह खबर पढ़ी थी या नहीं!” पापेन ने मुस्कुरा कर कहा।

“यह तो मैं सवेरे ही पढ़ चुका था...” हमीद झूठ बोल गया।

“क्या सूचना भी सवेरे ही मिल गई थी!” पापेन ने पूछा।

“नहीं—लगभग दस बजे मिली थी।”

“फिर तुमने कोई प्रबन्ध किया!”

“मैं इसका कायल नहीं हूँ—समय पर जो सूझती है वही करता हूँ—” हमीद ने कहा।

रिवालों में नित्य के अनुसार प्रोग्राम हो रहे थे—मगर केवल यही तीन ऐसे थे जो बातों में लीन थे वना तमाम लोगों की निगाहें उस नर्तकी पर जमी हुई थी जो विक्टोरिया काल का वेले नाचने का प्रयास कर रही थी और इस प्रयास से अधिक दिलचस्प उस की वह हरकतें थीं जिन पर लोग दिल खोल कर अट्टहास लगा रहे थे...

अचानक हाल में एक हिन्दुस्तानी जोड़ा दाखिल हुआ। पापेन ने

हमीद को टहोका दिया । हमीद ने नजरें उठा कर उस जोड़े को देखा फिर लेडी वाल्टर को अफ्रीका और आस्ट्रे लिया के कगाँरू का अन्तर बताने लगा—।

“तो फिर मैं जा रहा हूँ...” पापेन ने कहा ।

“वाह...यह कैसे हो सकता है—” हमीद ने कहा “अभी तो मुझे इस प्रसँग पर एक भाषण देना है कि नीला महल का कगाँरू से क्या सम्बन्ध है ।”

“तुम इस समय मनोरंजन के मूड में हो...हालांकि तुमने बताया भी हूँ है कि तुम्हें सूचना मिल चुकी है...” पापेन ने कहा ।

“हाँ...और सूचना के अनुसार मैं पूरी तरह सावधान और चौकन्ना है...” हमीद ने एक-एक शब्द पर जोर दे कर कहा फिर लेडी वाल्टर ने कहा लगा “मैं इस पर विचार कर रहा हूँ कि जानवरों में भी इन्टर कास्ट शादियां होनी चाहिये...मिसाल के तौर पर इतना तो होना ही चाहिये कि खरगोश की शादी गधी से और हथिनी की शादी शेर से...और...”

“तुम अब बोर हो रहे हो...” पापेन ने बात काट कर कहा ।

“बिल्कुल...” हमीद ने कहा “मगर उस जोड़े से कम जो स्टेज पर संयुक्त प्रकार की उल्लल कूद मचाये हुये है । अर्थात् आधा नाच रहा है... और आधा जानवरों की तरह कूद रहा है ।”

वह बातें भी करता जा रहा था और पापेन की निगाहों का पीछा भी करता जाता था । पापेन रह रह कर उस हिन्दुस्तानी जोड़े को देखता जाता था ।

हमीद उस जोड़े को पहचान गया था । एक मिस्टर चौधरी था और दूसरी उसकी विजिनेस पार्टनर लीला मारेस थी । लीला मारेस हिन्दुस्तानी थी और उसने लन्दन में शादी कर ली थी । मिस्टर चौधरी एक महत्व पूर्ण व्यापारिक संधि के सम्बन्ध में लन्दन आया हुआ,

था ।

हमीद ने यह भी देखा था कि मिस्टर चौधरी और लीला मारेस के हाल में दाखिल होते ही कुछ और लोगों ने भी चौंक कर उन दोनों को देखा था... और उनकी निगाहें उस समय तक उनका पीछा करती रही थी जब तक कि वह मेज पर बैठ नहीं गये थे और वह लोग अब भी कभी कभी उन दोनों की ओर देखते जाते थे... मगर वह दोनों बड़ी निश्चिन्तता से बातें कर रहे थे ।

अचानक पापेन ने हमीद से कहा ।

“क्या तुम अब भी कुछ नहीं करोगे—क्या तुम इन दोनों को मर जाने दोगे !”

अब हमीद इतना गाउदी भी नहीं था जो यह न समझ पाता कि पापेन जिस सूचना की ओर अब तक संकेत करता चला आ रहा था वह शायद कुछ इसी प्रकार की रही होगी कि चौधरी और लीला रिवाल्वो में आने वाले हैं और उनकी जानों को खतरा है... मगर प्रश्न यह था कि अगर खतरा है तो वह कर ही क्या सकता है ? लेकिन उसने पापेन पर यही प्रकट किया था कि वह इस खतरे को जानता है और इस खतरे से निपटने के लिये पूरी तरह तैयार भी है...।”

“मैं भी यही समझता हूँ कि नीला महल...।”

“समझने के लिये तो मैं भी यही समझ रहा हूँ...।” हमीद ने जल्दी से कहा “मगर सवाल यह है कि हमला करने वाले या वालों का भी तो कुछ पता हो ।”

इतने में लेडी वाल्टर के मुँह से आश्चर्य भरी मन्द सी चीख निकली ।

“क्या हुआ ?” हमीद ने चौंक कर पूछा ।

“सर वाल्टर !”

“कहाँ !” पापेन पूछ बैठा ! उसके चेहरे पर चिन्ता के लक्षण दिखाई देने लगे थे ।

लेडी वाल्टर ने एक ओर संकेत किया और हमीद तथा पापेन की नजरें एक साथ उधर ही घूम गईं ।

सर वाल्टर मध्यवर्ती द्वार से दाखिल हो कर धीरे धीरे कदम बढ़ाता हुआ बाईं ओर बढ़ रहा था । उसके चेहरे पर कठोरता झलक रही थी और आंखों से गहरी घृणा टपक रही थी । वह आगे बढ़ता हुआ एक मेज पर इस प्रकार बैठा कि यह लोग केवल उसकी पीठ ही देख सकते थे ।

“पता नहीं कि उसने तुम्हें देखा है या नहीं...” हमीद ने लेडी वाल्टर से कहा ।

“मेरा विचार है कि नहीं देखा है...” लेडी वाल्टर ने कहा “इसलिये कि अगर देखा होता तो सीधा इसी मेज पर आता और यहीं मुझसे झगड़ा आरम्भ कर देता ।”

“तुम उससे तलाक क्यों नहीं ले लेतीं...” हमीद ने कहा ।

“मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है कि क्या करूँ...” लेडी वाल्टर ने ठण्डी सांस खींच कर कहा “अभी कुछ ही दिनों पहले की बात है कि सर वाल्टर मेरे नाम की माला जपान करता था... मगर अब तो ऐसा लगता है जैसे वाल्टर हाउस उसके लिये एक होटल है और मेरे लिये किसी अपरिचित का घर...”

इतने में फायर हुआ और हमीद तथा पापेन झटके के साथ अपनी कुर्सियों से उठे । उनकी निगाहें उसी ओर उठी हुई थी जिधर से फायर की आवाज आई थी कि अचानक हाल में एकदम से अन्धेरा हो गया और पूरा हाल लोगों के चीखने और चिल्लाने से गूँजने लगा ।

इसी अन्धकार में हमीद कुर्सियों तथा लोगों से टकराता हुआ

उस ओर बढ़ रहा था जिधर लीला मारेस और चौधरी बैठे हुये थे !

अचानक किसी ने टार्च जलाई और रोशनी के मडराल में हमीद ने देखा कि पापेन किसी से गुथा हुआ है ।

टार्च का प्रकाश फौरन ही गायब हो गया और लगातार दो फायर हुये...दूसरी चीखों के साथ हमीद ने चौधरी की भी चीख सुनी...और फिर सीटियां गूँजने लगीं ।

हमीद जहां था वहीं रुक गया...फिर हाल में पहले जैसा प्रकाश फैल गया ।

हमीद ने देखा कि चौधरी फर्श पर है और लीला मारेस उसे उठा रही है...लेकिन चौधरी को हल्की सी खरौंच भी नहीं आई है । इसलिये वह यही सोचने पर विवश हो गया कि उसके कुर्सी से गिरने और चीखने का कोई दूसरा कारण रहा होगा...फिर वह तेजी से मुड़ कर अपनी मेज की ओर बढ़ा, क्योंकि हर दरवाजों से पुलिस वाले अन्दर दाखिल होने लगे थे ।

हमीद अपनी मेज पर आ गया और लेडी वाल्टर के चेहरे की ओर देखा जिस पर भय के चिन्ह अंकित थे मगर उसने उससे कुछ पूछा नहीं । जेब से पाउच निकाला...पाइप भरा...दो तीन कश लिये...फिर लेडी वाल्टर की ओर धुये के लच्छे फेंके और बोला ।

“यह लच्छे तुम्हें कैसे लगते हैं ।”

“तुम्हारे जैसा आदमी आज तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा...”

लेडी वाल्टर ने बड़ी गम्भीरता के साथ कहा ।

हमीद समझ नहीं सका कि लेडी वाल्टर ने किस बात को सामने रख कर यह बात कही है...सोचा पूछे, मगर फिर न जाने क्या सोच कर बकवास आरम्भ कर दी ।

“एक लड़की ने भी मुझसे यही बात कही थी जो पैदाइशी तौर पर गूंगी थी...वैसे योर लेडी शिप ! यह बात आपको भी मान लेनी चाहिये कि गूंगी लड़कियां बहुत अच्छी होती हैं...क्या आप गूंगी नहीं हो सकतीं ।”

“तुम्हारे लिये सब कुछ हो सकती हूँ...!” लेडी वाल्टर ने कहा ।

“क्या मेरे लिये यह गाना भी गा सकती हो...।” हमीद ने कहा और बहुत ही मन्द स्वर में गुनगुनाने लगा “सैयाँ ने अंगुली मरोड़ी रे...।”

“यह तुम क्या बकने लगे...” लेडी वाल्टर ने उसकी बात काट कर कहा “यह सच है-कि तुमने मेरी जान इस समय बचाई है... लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि जान बचा कर इस तरह मुझे बोर करो...।”

हमीद ने ध्यानपूर्वक उसके चेहरे की ओर देखा । लेडी वाल्टर ने जो कहा था वह अर्थहीन नहीं हो सकता था...मगर उसने कुछ कहा नहीं ।

“जान तो बच गई, मगर स्नायु के तनाव से अब भी मुक्ति न पा सकी...” लेडी वाल्टर ने कहा ।

हमीद अब भी कुछ नहीं बोला । चुपचाप कश लेता रहा ।

“तुम्हारा वह दोस्त कहां गया...” लेडी वाल्टर ने कहा “वह मुझे कुर्सी से उठा लेना चाहता था...।”

“कौन उठा लेना चाहता था...मेरा दोस्त ?” हमीद ने आश्चर्य से कहा ।

“मैं नहीं बता सकती कि वास्तव में वह कौन था...मेरा विचार है कि तुम अवश्य उसे जानते होंगे...” लेडी वाल्टर ने कहा “मैं तो इतनी जानती हूँ कि उसका एक हाथ पूरी शक्ति से मेरे मुँह पर

जम गया था ताकि मैं चीख चिल्ला न सकूँ—और दूसरे हाथ से उसने मुझे उठा कर सांप के समान लटकाने की कोशिश की थी। उसी समय मैंने तुम्हें झपटते देखा था। तुमने जिस प्रकार उसे टक्कर मारी थी वह मैं शायद जीवन भर नहीं भूल सकती...।

वह उछल कर दूर जा गिरा था और मैं जो कुछ ऊपर उठा ली गई थी धप से अपनी कुर्सी पर गिर पड़ी थीं...फिर मैं नहीं जानती कि क्या हुआ था।”

हमीद की आंखें विस्मय के कारण उबली पड़ी जा रही थीं, इसलिये उसने जल्दी से अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया ताकि लेडी वाल्टर उसके मनोभाव को ताड़ न सके वैसे प्रकट में तो वह लापरवाही के साथ पाइप के कश लगाता रहा, मगर अन्दर से उसकी बुद्धि कलाबाजी खा रही थी...अगर लेडी वाल्टर का बयान सच था तो फिर उसको किसने बचाया था...वह तो चौधरी की ओर गया था...और जब रोशनी वापस आई थी तो वह चौधरी से केवल दस गज की दूरी पर था।

अभी वह यह सोच ही रहा था कि उसने लीला मारेस को अपनी ओर आते हुये देखा...।

निकट आकर उसने सम्मान की दृष्टि से हमीद को देखा और धीरे से बोली।

“क्या आप मुझे थोड़ा समय दे सकेंगे।”

हमीद उठ गया। कुछ कदम आगे बढ़ कर लीला ने धीरे से कहा।

“मैं आपकी आभारी हूँ। दूतावास में आपके कर्तव्य पालन की अवश्य प्रशंसा करूँगी...आपकी फोटो देकर मुझे यह बताया गया था कि रिवाल्वो में आप हमारी रक्षा करेंगे...।”

हमीद का दिल चाहा कि वह सर के बल खड़ा होकर मुर्ग की

बोली बोलना आरम्भ कर दे। उधर लीला कहती जा रही थी।

“मैं अत्यन्त चकित हूँ। जिस सफाई से आपने मिस्टर चौधरी को धक्का देकर उनकी जान बचाई थी, उसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकती।”

“शुक्रिया मादाम ! जीवन भर धक्का खाने के बाद अगर एक आध बार इस प्रकार का अवसर मिलता है तभी जौहर खुलते हैं....।” हमीद ने कहा “यह बताइये कि आपका मिशन सफल रहा या नहीं।”

“ओह...आपको यह भी मालूम था....” लीला ने कहा “जी हाँ...शत प्रतिशत—का गजात रुझको मिल गये—अब मैं जा रही हूँ—एक बार फिर धन्यवाद।”

अपनी बात समाप्त करके उसने एक पैकेट निकाला और हमीद की ओर बढ़ा दिया।

“मैं ताश नहीं खेलता—” हमीद ने कहा।

“यह ताश नहीं है—” लीला ने मुस्कुरा कर कहा।

“फिर जो कुछ भी है—उसे आप ही तक रहना चाहिये—” हमीद ने कहा और एबाउट टर्न हो गया।

वास्तव में हमीद ने उस पैकेट को लेने से इसलिये इन्कार कर दिया था कि उसमें से उसे एक नोट भाँकता हुआ दिखाई दे गया था। वह फिर आकर अपनी सीट पर बैठ गया।

इतनी देर में पुलिस तलाशी ले चुकी थी। केवल नीला महल का प्रतिरूप प्राप्त हुआ था। उसमें एक कागज चिपका हुआ था जिस पर लिखा था।

“आज की असफलता कल की सफलता में भी परिवर्तित हो सकती है।”

अब धीरे धीरे हाल खाली होने लगा था। हमीद ने लेडी वाल्टर

से पूछा ।

“आखिर कब तक यहां बैठी रहोगी---सब लोग जा रहे हैं !”

“मैं यह चाहती हूँ कि आज इसका निर्णय हो जाये कि तुम कब मेरे साथ चलोगे ।” लेडी वाल्टर ने कहा ।

“कहां ?” हमीद ने पूछा ।

“नीला महल---।”

“मैं वहाँ जाकर क्या करूँगा---।”

“तुम वस वहां तक मुझे पहुँचा दो---उसके बाद अपना अधि-
कार प्राप्त करना मेरा काम होगा---।”

“तुमने मुझे क्या समझ रखा है---” हमीद ने मुँह बना कर कहा ।

इतने में उसे फिर पापेन आता हुआ दिखाई दिया । जब वह निकट आया तो हमीद उसे घूरने लगा ।

“इस प्रकार क्यों घूर रहे हो कैप्टन ।” पापेन ने मुस्कराते हुये पूछा ।

“आप कहां चले गये थे ।” हमीद ने पूछा ।

“जरा एक काम से गया था” पापेन ने कहा “लेकिन मेरा विचार है कि यहां लन्दन में बैठे रहने से काम नहीं चलेगा ।”

“तो फिर ।” हमीद ने पूछा ।

“चलना ही पड़ेगा-”

“कहां !”

“नीला महल...”

“क्यों !” हमीद फिर उसे घूरने लगा ।

“आज येस०आई०येस० वालों ने मेरे राष्ट्र के कुछ महत्वपूर्ण काग
जात चुरा लिये हैं, और वह उनके हेड क्वार्टर पहुंचा दिये गये हैं ।”

हमीद ने विचित्र नज़रों से पापेन की ओर देखा, फिर बोला ।

“अच्छा दोस्त ! अब तो मैं चला ।”

“कहाँ !”

“नीला महल....” हमीद ने कहा “वहीं आराम से लेट का सोऊँगा ।”

“तुम मेरी बात को मजाक में टालने की कोशिश कर रहे हो....!” पापेन ने बुरा सा मुँह बना कर कहा “बहरहाल....अगर तुम कर्नल विनोद से परामर्श कर सको तो अच्छा है !”

“किस बात के लिये !” हमीद ने कहा !

“मैं कल अफ्रीका रवाना हो जाऊँगा....”

“क्यों !”

“उस महल की तलाश करने के लिये जिसने आज संसार के सारे राष्ट्रों का जीवन अजीर्ण बना रखा है.. ” पापेन ने कहा और उठ कर चल दिया ।

“इससे यह तो पूछ लो कि अगर तुम इससे मिलना चाहो तो कहाँ मिल सकोगे....” लेडी वाल्टर ने हमीद से कहा !

“तुम खुद क्यों नहीं पूछ लेती !”

“न जाने मुझे क्यों इससे डर लगता है....इसकी आंखें....”

“तुम्हारे लिये यह भी सहन कर लेता हूँ....” हमीद ने कहा और उठ कर तेजी से बढ़ा ! पापेन दरवाजे से बाहर निकल ही रहा था कि हमीद ने लपक कर उसके कन्धे पर हाथ रख दिया ।

पापेन चौंक कर मुड़ा और अपने सामने हमीद को देख कर कठोर स्वर में बोला ।

“अब क्या है ?”

“तुम नाराज हो गये ?” हमीद ने मुस्कुरा कर कहा ।

“नहीं....” पापेन ने कहा मगर अब भी उसके स्वर में कठोरता थी ।

“तुमने एक बार मेरी जान बचा कर मुझ पर जो उपकार किया था...उसके बदले मेरा तो यही कर्त्तव्य है कि तुम जो कहो उसे मैं बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लूँ...लेकिन डियर पापेन ! तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं स्वतंत्र नहीं हूँ... मेरे साथ कुछ प्रतिबन्ध हैं...मैं अपने चीफ और अपने विभाग दोनों को जवाब दह दूँ...इसलिये कोई कदम उठाने से पहले मुझे आदेश प्राप्त करने होंगे...”

“तुम ठीक कह रहे हो...” पापेन ने कोमल स्वर में कहा, फिर बोला “लेडी वाल्टर तुम्हारे साथ है और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उसके बारे में सब कुछ जान गये होंगे...”

“जैसे...?”

“यह कि नीला महल वास्तव में अफ्रीका के घने जंगलों में कबायली स्टेट का राज महल है और लेडी वाल्टर उसकी अस्ल खामिन है...उस महल पर अब येस० आई० येस० का अधिकार है...लेडी वाल्टर नीला महल तक पहुँचने के लिये व्याकुल है।”

“हाँ.. यह सब मैं जान गया हूँ...” हमीद ने कहा।

“सभ्य संसार नीला महल तक नहीं पहुँच सकता...बरसों लग जायेंगे...” पापेन ने कहा, “यह हमारा सौभाग्य है कि लेडी वाल्टर तुम्हारे साथ लग गई है...लेकिन मुझे खतरा है कि कहीं वह हर नली जाये...शायद तुम्हें न मालूम हो...आज उसके अपहरण ही का प्रयास किया गया था।”

“फिर बच कैसे लई ?” हमीद ने उसकी आंखों में देखते हुये पूछा।

“यह मैं नहीं जानता...मैंने तो बस इतना देखा था कि अन्धेरा हो जाने पर किसी ने उसे उठाने की कोशिश की थी—खैर इसे छोड़ो...मैं यह चाहता हूँ कि जब लेडी वाल्टर हमारे हाथ लग ही

गई है तो फिर हम क्यों न उससे लाभ उठायें...क्यों न उसी के माध्यम से नीला महल तक पहुंचने की कोशिश करें—।”

“बहुत उचित विचार है....” हमीद ने गम्भीरता के साथ सर हिला कर कहा “मैं आज ही इस बात की पूरी पूरी कोशिश करूँगा कि अपने विभाग के अध्यक्ष से सम्बन्ध स्थापित करके आदेश प्राप्त कर सकूँ—उसके बाद आपको सूचित करूँगा.....आप कहाँ मिलेंगे...?”

“मैं ग्रेट ईस्टर्न में ठहरा हूँ—अगर मैं मौजूद न रहूँ तो मेरे लिये सन्देश छोड़ देना...फिर मैं खुद ही तुम से मिल लूँगा....” पापेन ने कहा और उसे अपना फोन नम्बर बताने के बाद दरवाजे से बाहर निकल गया।

हमीद भी अपनी मेज की ओर वापस लौटा।

रिवाल्वो का हाल लगभग खाली हो चुका था। होटल का मैनेजर पुलिस के सार्जेंट को अपना बयान लिखवा रहा था। दो एक स्टोवर विचित्र निगाहों से लेडी वाल्टर को देख रहे थे। लेडी वाल्टर अपनी सीट पर बैठी शून्य में घूर रही थी...फिर जैसे ही हमीद उसके निकट आया उसने बड़ी उत्सुका से पूछा।

“तुमने उसका पता पूछ लिया ?”

“हाँ....” हमीद ने कहा।

“अब तुम कहाँ जाओगे ?”

“कर्नल के पास—?”

“मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी और अब तुम्हारे ही साथ रहूँगी भी।”

“चलो....” हमीद ने कहा और लेडी वाल्टर उठ गई।

बाहर आकर दोनों कार में बैठे और जब कार रवाना हो तो हमीद ने कहा।

“एक बात समझ में नहीं आती !”

“क्या ?” लेडी वाल्टर ने पूछा ।

“येस० आई० येस० की संस्था बहुत ही खतरनाक है—इसका सिलसिला संसार के लगभग हर देश में फैला हुआ है—संस्था के सदस्य तुम्हारी ताकत में हैं—तुम उनकी नजरों के सामने भी हो—लेकिन न तो वह तुम्हें अब तक हर सके हैं—न गिरफ्तार कर सके हैं—न तुम्हें कत्ल कर सके हैं—आखिर वह कौन सी शक्ति है जो तुम्हारे साथ है—तुम्हारी रक्षा कर रही है ?”

लेडी वाल्टर मुकुराई—कुछ क्षण तक मौन रही—फिर बिन्ड क्रीन पर नजरें जमाये हुये ही बोली ।

“तुम्हें यह प्रश्न नहीं करना चाहिये था । तुम इतने दिनों तक मेरा पीछा करते रहे थे—तुम ने मुझे लगभग हर प्रकार के लोगों के देखा है—तुम्हें इसी से अनुमान लगा लेना चाहिये या कि मैं कोई साधारण औरत नहीं हो सकती ।”

“तुम कलू पुना की चर्चा हो—” हमीद ने जले भुने स्वर में कहा “मुझे इससे मतलब नहीं है—मैं केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम ने अपनी रक्षा का प्रयत्न किया है या नहीं—?”

“मैं लन्दन में जब तक हूँ सुरक्षित हूँ—” लेडी वाल्टर ने कहा “मगर साथ ही साथ यह बात भी है कि जिन लोगों की मैंने सेवाये प्राप्त की हैं वह मेरी जान तो बचा सकते हैं मगर मुझे नीला महल तक नहीं पहुँचा सकते—।”

“मान लो मैं तुम्हारे साथ चलाऊँ—और तुम नीला महल पहुँच भी जानी हो—मगर इस की क्या गारन्टी है कि तुम अपना खोया हुआ अधिकार भी प्राप्त कर लोगी !”

“कदाचित्त तुम भूल गये—” लेडी वाल्टर ने कहा “मैंने तुम्हें पहले ही बताया था कि वहाँ के लोग—अर्थात् मेरे कबीले मुझेवाले

खुदा की मेजी हुई अमानवी सनभने हैं... इसलिये जब मैं उनके पहुँच जाऊंगी तो फिर मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा...

हमीद ने फिर कुछ नहीं कहा। लेडी वाल्टर भी मौन ही रही। कार हास्पिटल के उस भाग की ओर रुकी जिधर विनोद कमरा था। दोनों कार से उतरे।

लेडी वाल्टर को रोक लिया गया, मगर हमीद कमरे में दाखिल हो गया।

हर्ष के कारण हमीद की बाँछें खिल उठीं।

कारण यह था कि विनोद पलंग पर बैठा हुआ था। यद्यपि उसके चेहरे पर अब भी पट्टियाँ बँधी हुई थीं, मगर ऐसा लग रहा था कि उसकी तबीयत पहले से बहुत ठीक है।

हमीद को देख कर उसने हाथ बढ़ाया... और फिर जैसे ही हमीद उसके निकट आया उसने हमीद का कान पकड़ कर पीठ पर एक धुँप जड़ दिया। हमीद की आँखों में आंसू आगये। उसने मुँह फेर कर अपनी आवाज में खनक पैदा करते हुये कहा।

“ओह ! आज बहुत दिनों के बाद जिसका दर्द कम हुआ है दो चार और लगा दीजिये तो बिल्कुल ही खत्म हो जाये।”

विनोद ने कुछ नहीं कहा और हमीद ने महसूस किया कि वह हँस रहा है। देखने के लिये गर्दन घुमाई तो देखा कि विनोद राई के पैड पर कुछ लिख रहा है। देखने के लिये वह कागज पर झुक पड़ा लिखा गया था।

“आज तो बहुत जांच रहें हों हमीद—।”

“शुक्रिया—” हमीद ने कहा “क्या आप बोल नहीं सकते ?”

विनोद फिर लिखने लगा ।

“जयान का अपरेशन हुआ है । बोलने के लिये बड़ी सखती से मना कर दिया गया है—बोलने से टांके खुल जाने की सम्भावना है । पलंग पर पड़े पड़े तंग आ गया हूँ, मगर उठ कर कहीं जा भी नहीं सकता । डाक्टरों ने मेरे चारों ओर सख्त पहरा लगवा रखा है ।”

“कहीं जाने की जरूरत ही क्या है ? हमीद का पट्टा लन्दन में कुलेलें कर रहा है—आप भी आराम कीजिये—।”

“तुम अकेले आये हो !” विनोद ने लिखा ।

“नहीं—लेडी वाल्टर भी साथ आई है—मगर उसे बाहर ही रोक लिया गया है—” हमीद ने कहा और विनोद लिखने लगा ।

“बाहर जाकर सेक्रेटरी गार्ड से कह दो कि उसे बैठा रहने दिया जाये । थोड़ी देर बाद उसे अन्दर बुला लिया जायेगा—।”

हमीद उठ कर बाहर चला गया । सेक्रेटरी गार्ड को आदेश देकर लेडी वाल्टर से बोला ।

“इन्तजार करो—मैं जरा कर्नल साहब से महत्वपूर्ण बातें कर रहा हूँ ।”

“क्या कर्नल बातें करने योग्य हो गये ?” लेडी वाल्टर ने कहा, उसके स्वर से दवा हुआ जोश झलक रहा था ।

“नहीं—” वह लिख कर बातें कर रहे हैं—अच्छा—मैं जा रहा हूँ—” हमीद ने कहा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना फिर कमरे में आ गया ।

विनोद उसी तरह बैठा हुआ था । हमीद को देख कर फिर पैड पर लिखने लगा ।

“भेज पर सिगार रखा हुआ है । एक उठा कर सुलगाओ—” उन्हें ही पीता देख कर कुछ न कुछ तस्कीन हो जायेगी ।”

हमीद ने सिगार सुलगाया, मगर पहले ही कश में खांसने लगा !

चेहरा लाल हो गया और आंखों में पानी भर आया ।

“फूहड़पन से पी रहे हो बेटे... सिगार इस तरह नहीं पिया जाता...” विनोद ने लिखा ।

“अब हाथी दांत का सिगार बनवा कर पीऊंगा...” हमीद ने कहा ।

“आज तक की रिपोर्ट क्या है ?” विनोद ने लिखा ।

हमीद ने ट्रेन के डब्बे नदी में गिराये जाने वाली रात से ले कर अब तक की सारी बातें सुनाने के बाद कहा ।

“नीला महल के बारे में तमाम बातें साफ हो गई हैं । यह वेस० आई० वेस० नाम की संस्था का हैंड क्वार्टर है । यह अप्रीवा के बंगलों में बसने वाले एक कबीले का राज महल है—जिसे संस्था वालों ने अपने अधिकार में कर लिया है । इस महल के प्रतिरूप इन्जनीयर का भी नाम देते हैं... यह बातें मुझे पापेन से मालूम हुई थी...”

विनोद सर उठाये चुन रहा था । जैसे ही हमीद मौन हुआ, वह लिखने लगा ।

“फर्जन्द ! अगर इतनी ही सी बात होती तो मैं तुम्हें आदेश दे दिये होता कि मुझे वापस देश ले चलो । वहीं मेरा इलाज होगा...” नीला महल का जो रूप तुमने बयान किया है... वह केवल दिखावा है... नीला महल उसी प्रकार रहस्यपूर्ण है जिस प्रकार जीरो लैण्ड...”

हमीद मुँह खोले कागज की तहशीर को देखता रहा । कागज पर लिखे गये यह शब्द कि “नीला महल उसी प्रकार रहस्यपूर्ण है जिस प्रकार जीरो लैण्ड” उसके लिये किसी विस्फोट से कम नहीं थे... और यह शब्द नीला महल से भी कहीं अधिक रहस्यपूर्ण प्रतीत हो रहे थे । विनोद लिखता जा रहा था ।

“तुम स्वयं विचार करो—अगर इतनी ही सी बात होती तो फिर सीक्रेट सर्विस की क्या आवश्यकता थी। तमाम बातें मालूम ही हो चुकी थीं—संसार के राष्ट्र वहाँ अपने वायुयान भेजते—सशस्त्र धैनिक पैराशूट द्वारा वहाँ उतारे जाते और वह नीला महल जो संसार में अन्धेरे मचाये हुये हैं—देखते ही देखते धराशायी हो जाता। येस० ब्राई० येस० की संस्था भी अपने हेड क्वार्टर के तबाह होने के बाद रसातल में मिल जाती—नहीं प्यारे—कैप्टन हमीद ! वास्तव में नीला महल बहुत ही रहस्यपूर्ण है—पता लगाना है कि यह है क्या...?”

हमीद पढ़ता जा रहा था। एक एक शब्द इतना गूढ़ और तर्क इतना सुदृढ़ था कि ज्ञान लेने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था।

“तो फिर वह नीला महल जिसका प्रतिरूप देखा जा रहा है क्या है ?” हमीद ने पूछा।

“एक चिन्ह... एक लक्षण...” विनाद ने लिखा।

“और जहाँ लोडी वाल्टर हमें ले जाना चाहती है ?” हमीद ने पूछा।

“बोले की-ट्टी... जिसे अंग्रेजी में FARCE कहते हैं।”

“तो फिर इसका यह मतलब हुआ कि लोडी वाल्टर के साथ जाना मूर्खता ही होगी ?”

“नहीं... अवास्तविक से वास्तविक का मार्ग खुलता है... अवाश्यक जाओ। मुझे तुम्हारे विवेक पर पूरा पूरा भरोसा है।”

“अरे ! कोई वचाओ मुझे.....” हमीद ने दोनों हाथों से सर थाम कर कहा “बना यह विवेक मुझे सर के बल खड़ा कर देगा।”

विनाद के शरीर में गति उत्पन्न हुई। कदाचित्त यह हँस रहा

था... फिर उसने लिखा ।

“हाँ हमीद..... मुझे तुम्हारे विवेक पर पूरा भरोसा है... मुझे विश्वास है कि तुम नीला महल का वास्तविक रहस्य जान लोगे !”

“पापेन और लोडी वाल्टर दोनों ही मुझे विवश कर रहे हैं कि मैं कल ही रवाना हो जाऊँगा...” हमीद ने कहा ।

“कदाचित् इधर की परिस्थितियों का तुम्हें ज्ञान नहीं है...” विनोद ने लिखा “तकिये के नीचे कुड़ी रखी हुई है... मेज की दराज खोलो... एक ग्रीन फाइल मिलेगा... निकाल लाओ ।”

हमीद ने फाइल निकाला और विनोद के सामने ही उसे खोला । उसमें बहुत ही तस्वीरें थीं और कुछ कागजात भी थे । तस्वीरों में एक औरत की भी तस्वीर थी... जो लोडी वाल्टर ही की मालूम होती थी । तस्वीर बहुत धुँधली थी ।

“लोडी वाल्टर !” हमीद के मुख से निकल गया ।

“नहीं हमीद साहब...” विनोद ने लिखा “यह तस्वीर एक हिन्दुस्तानी औरत की है । उसका नाम कानन है... और इस समय यही एस० आई० येस० नाम की संस्था का संचालन कर रही है...”

“यह हिन्दुस्तानी औरत...”

“जी हाँ हमीद साहब ।” विनोद ने लिखा “यह कानन यहीं लन्दन ही में रहती थी इसे यहाँ से ले जाया गया है और अब संसार भर में नीला महल की पब्लिसिटी की जा रही है—इसलिये कि संसार की नजरों में हमारे देश के प्रभुत्व और गौरव को गिराया जा सके... और दूसरी ओर इसी की आड़ लेकर हमारे देश के विरुद्ध एक दूसरा पड़यन्त्र रचा जा रहा है—।”

फिर उसने दूसरी सीट निकाली और उस पर लिखने लगा ।

“लीला मारेस और मिस्टर चौधरी एक व्यापारिक संधि के सिमसिले में यहाँ आये थे। हमारे देश को चार जल यान शस्त्रों से भरे हुये जाने वाले हैं। उनमें फालतू पुर्जे—साइन्सी यन्त्र तथा शस्त्र होंगे। येस० आई० येस० की संस्था उन चारों जल यानों को मार्ग में ही तबाह करने का प्रोग्राम बना रही है—लाइटर निकालो...।”

“हमीद ने लाइटर निकाला। विनोद ने कागज की यह दूसरी वाली शीट लाइटर पर रख दी। जब कागज जल गया तो राख उगालदान में डाल दी और फिर पहली वाली शीट पर लिखा।

“तुम कल रवाना हो जाओ—।”

“पापेन के बारे में क्या विचार है।” हमीद ने पूछा।

“अब यह तुम जानो—।”

“जब आप अस्पताल में पड़े पड़े इतनी महत्वपूर्ण सूचनाये प्राप्त कर सकते हैं तो फिर पापेन के बारे में भी बताइये—उस पर यकीन किया जाये या नहीं।”

“हर उस आदमी पर यकीन करो जो अपने को तुम्हारा दोस्त कहे—और उस समय तक विश्वास करते रहो जब तक वह तुम्हें धोखा न दे—मगर किसी पर विश्वास करने का वह अर्थ नहीं होना चाहिये कि आखें बन्द कर ली जाये—आखें हमेशा खुली रखनी चाहिये।”

“सर वाल्टर के बारे में क्या विचार है।”

“मैंने बताया ना कि किसी के बारे में मेरा कोई विचार नहीं है...” विनोद ने लिखा “जो मित्र बन कर आये वह मित्र...और जो शत्रु बन कर आये वह शत्रु...किसी से...यहाँ तक कि शत्रु से भी बिना कारण के नहीं उलझना चाहिये...सदैव यह विचार रखना चाहिये कि अकारण उलझने से कोई लाभ नहीं होता...”

“रिवाल्वो में आज...।”

“हाँ....” विनोद लिखने लगा “मुझे सूचना मिली है कि तुमने आज रिवाल्वो में लेडी वाल्टर और लोला मारेस दोनों की जानें बचाई हैं—लेकिन तुम चकित हो...क्योंकि इन दोनों में से तुमने किसी एक की भी जान नहीं बचाई।”

“कुकड़ू कूँ....” हमीद ने हांक लगाई “यानी सवेरा हो गया... आपको इसकी भी सूचना मिली गई।”

“मुझे तो इसकी भी सूचना मिली है कि लेडी वाल्टर... सर वाल्टर से तलाक लेकर तुमसे शादी करने का इरादा रखती है....।”

“भेज।” हमीद ने कड़क कर कहा “भेज ऊपर वाले...अजब के परिश्रमे भेज ताकि मैं घन्टा घर घन कर हाइड पार्क में खड़ा हो जाऊँ...जब आपका बिस्तर पर पड़े पड़े यह हाल है तो....।”

“मैं यहाँ अपरिचित नहीं हूँ....” विनोद ने लिखा।

“क्या यहाँ भी ब्लैक फोर्स है।” हमीद ने पूछा।

“हाँ..”

“हक अल्लाह।” हमीद ने नारा लगाया, फिर बोला “आप आदमी हैं या सहारा का रेगिस्तान...जिसका कोई सिरा ही नहीं....।”

“अब तुम आराम करो.....कल यात्रा को प्रबन्ध करना है....।”

“बिना आपके....।”

“कब तक अंगुली पकड़ कर चलते रहोगे जाने मन...अब बालिग हो गये हो... खुद भी चलो...यह समझ लो कि मेरा शरीर कदाचित्त तुम्हारे सामने न रहे...मगर मेरी आत्मा हर स्थान पर तुम्हारे साथ रहेगी...कोशिश करूँगा कि तुम से सम्बन्ध स्थापित किये रहूँ—।”

“क्या ऐसा नहीं हो सकता कि यह काम आपके अच्छा होने तक स्थगित रहे।” हमीद ने पूछा।

“नहीं हमीद---तब तक बहुत देर हो जायेगी और शत्रु अपना काम कर जायेंगे---डाक्टरों ने मुझे अभी एक महीना और विस्तर पर ही पड़े रहने का आदेश दे रखा है।” विनोद ने लिखा।

“लेडी वाल्टर आपसे मिलना चाहती है---”

“बुला लो...मगर मैं उससे बातें करने योग्य हूँ नहीं...और अब लिख भी नहीं सकता। तुम ही बातें कर लेना और उसे विश्वास दिला देना कि तुम उसके साथ जाओगे...शायद चल ही।”

हमीद कमरे से निकला। बाहर लेडी वाल्टर बैठी हुई थी। हमीद को देखते ही बोली।

“अकेले और खाली बैठे बैठे बोर हो गईं...”

“क्यों...लुये मारना आरम्भ कर देतीं...” हमीद ने कहा।

“कभी कभी तुम बड़ी फूडू बातें करने लगते हो कैप्टन।” उसने मुँह बना कर कहा।

“अगर यह फूडू बात है तो अब मैं रंगीन बातें करने जा रहा हूँ---” हमीद ने कहा, फिर मुस्कुरा कर बोला “हां तो लेडी वाल्टर इस सुहानी सन्ध्या में तुम्हें इन दोनों सेकोरेटी गाड़ों से इश्क लड़ाना चाहिये था---यह बोरियत न होती समय अच्छा फट गया होता।”

“मेरे बारे में तुम इस प्रकार के विचार रखते हो---।”

“मैं हर औरत के बारे में एक ही विचार रखता हूँ---।” हमीद ने मुस्कुरा कर कहा, मगर उसके मुस्कुराने का भाव चिढ़ाने वाला था।

“क्या।” लेडी वाल्टर ने उम्मुकता के साथ पूछा।

“यही कि वह औरत है...और उसका काम इश्क करना...”

इश्क खाना... इश्क पीना और आगे तुम खुद सोचो---बहरहाल इश्क ही इश्क---”

“कर्नल से क्या बातें हुईं ।” लेडी वाल्टर ने पूछा ।

“बड़ी मुश्किल से राजी हुये हैं ” हमीद ने कहा “कह रहे थे कि जब तक लेडी वाल्टर तुमसे शादी नहीं कर लेतीं तब तक उनके साथ जाना किसी भी प्रकार उचित नहीं होगा ।”

“मजाक छोड़ो कैप्टन—मैं बहुत परेशान हूँ—।”

“मगर मुझे तुम्हारी परेशानी का कोई कारण नहीं दिखाई दे रहा है—” हमीद ने कहा “यहाँ लन्दन में तुम एक धनी आदमी की पत्नी हो---आली शान मकान में रहती हो । आजादी के साथ घूमती फिरती हो । जो चाहती हो खाती पहनती हो---फिर तुम्हें कौन सी परेशानी है—हाँ बस इतना नहीं है कि तुम यहाँ रानी और महारानी नहीं हो---शायद तुम्हारी परेशानी का कारण यह है कि तुम महारानी एलेज़ान्थ बनना चाहती हो !”

“ऐसी कोई बात नहीं है कैप्टन !”

“यही बात है लेडी वाल्टर । तुम एक लालची औरत हो ।”

“तुम मेरा अपमान कर रहे हो —” लेडी वाल्टर ने बुरा मानते हुये कहा ।

“मेरे ऊपर आरोप मत लगाओ मादाम---मेरी बात का उत्तर दो--” हमीद ने कटोर स्वर में कहा “मुझे बताओ कि तुम्हें क्या परेशानी है--अगर तुम नीला महल न पहुँच सको तो कौन सी कयामत आ जायेगी ।”

“कैप्टन ! नीला महल वही सुन्दर इमारत नहीं है जिसका प्रति रूप तुमने रिवालों में देखा था--” लेडी वाल्टर ने चुभते हुये स्वर में कहा ।

हमीद की आंखों के सामने बिनोद के लिखे हुये वाक्य नाचने

लगे। कुछ देर पहले जो बात विनोद ने लिखी थी वही लेडी वाल्टर के मुँह से फिसल पड़ी थी। उसके सारे शरीर में सनसनी दौड़ने लगी थी। मगर उसने अपने मनोभाव को छिपाते हुये जहरीले स्वर में कहा।

“तो फिर क्या है---क्या शुतुमुर्ग के अण्डे से निकलने वाला हाथी का बच्चा है !”

“काश... मैं तुम्हें बता सकती---”

“जाने भी दो... बता कर क्या करोगी—” हमीद ने लापरवाही से कहा “हो सकता है कि मैं कल ही नीला महल के लिये रवाना हो जाऊँ !”

“ओह कैप्टन—हाऊ स्वीट यू आर—” कहते हुये लेडी वाल्टर ने हमीद के गले में भुजाये डाल दीं—और फिर कदाचित् हर्ष प्रदर्शित करने के लिये चुम्बन लेना चाहती थी कि “अरे बाप रे...” कह कर हमीद इस प्रकार उछल पड़ा जैसे किसी साँप ने उसे काट लिया हो—।

लेडी वाल्टर भी बौखला कर खड़ी होगई और बोली।

“क्या हुआ कैप्टन ?”

“एलेक्ट्रिक शॉक...!” हमीद ने बिसूरते हुये कहा।

“ओह !” वह हँस पड़ी, फिर बोली “तुमने तो मुझे डरा ही

दिया था।”

“मैं हिन्दुस्तानी हूँ डार्लिंग... इसे हमेशा याद रखना...” हमीद ने पूरी गम्भीरता के साथ कहा “अब तुम जा सकती हो... कल मुला-बात होगी...”

“मगर मैं जाऊँगी कहाँ ?” लेडी वाल्टर ने बड़ी विवशता से कहा।

“जहन्नूम में...” हमीद ने झल्लाये हुये स्वर में कहा और उस कमरे की ओर बढ़ा जो उस के लिये था।

“किसी दिन तुम मेरा सम्मान करोगे कैप्टन...” लेडी वाल्टर ने कहा।

“केवल दिन ही क्यों कहा...” हमीद ने पलट कर कहा “तुम भी कह सकती थीं।”

“बड़े सुवर हो...” लेडी वाल्टर ने कहा।

“बड़ा सुवर आजकल उखमी है इसलिये अधिक खतरनाक हो गया है...” हमीद ने कहा और पलट कर फिर अपने कमरे की ओर बढ़ा।

फिर जब ताला खोल कर अन्दर दाखिल हुआ तो खोपड़ी गान कर रह गई, क्यों कि लिफ्ट की मेज पर टेलीफोन के बराबर नीला मइल का प्रतिरूप रखा हुआ था।

कुछ देर तक तो हमीद आँखें मल मल कर उस प्रतिरूप को देखता रहा, फिर धूँसा तान कर उसका और लपका और दाँत निखाव कर बोला।

“क्यों वे...तू यहाँ क्या करने आया है ?”

अचानक अपने आप प्रतिरूप की कुर्सी पर लगी हुई पट्टी प्रज्वलित हो उठी...विल्कुल उसी प्रकार जिस प्रकार टेलीवीजन की स्क्रीन प्रज्वलित हो जाती है...फिर उसी स्क्रीन पर हमीद को एक चेहरा दिखाई दिया जो विल्कुल धुँधला था...फिर धीरे धीरे साफ होता गया और वह एक दम से उड़ल पड़ा...क्योंकि यह वही चेहरा था जिस की तस्वीर अभी वह विनोद की ग्रीन फाइल में देख चुका था और जिस के बारे में विनोद ने बताया था कि यह हिन्दुस्तानी औरत है... इसका नाम कानन है और येस० आई० येस० की संस्था का संचालन

वही कर रही है—।

फिर उसी के पास एक दूसरा चेहरा उभरा और हमीद के मुख से आश्चर्य भरी चीख निकल गई... क्योंकि यह कासिम का चेहरा था... और अब दोनों के होठें हिलने लगे थे।

फिर स्त्री की रोशनी गायब होगई... मगर हमीद अपने स्थान से पर स्तब्ध खड़ा रहा... और फिर वह अपनी तथा लेडी वाल्टर की आवाजें सुनने लगा। वह वह बातें थी जो दोनों ने रिवालों में उत्पात के बाद की थीं...

फिर वह आवाजें भी बन्द हो गईं।

हमीद कुछ देर तक उस प्रतिरूप को धूरता रहा, फिर जैसे ही उसने प्रति रूप को हाथ लगाया... उसे ऐसा महसूस जैसे वह गतिशील है... वह जल्दी-से पीछे हट आया।

“कैप्टन हमीद... सुनी” एक आवाज गुँजी।

कुछ ही क्षण बाद हमीद ने एक ऐसी आवाज सुनी जो उसकी जानी पहचानी थी... फिर दूसरी आवाज सुनाई दी... उसके बाद तीसरी... चौथी और पाँचवीं।

हमीद स्तब्ध... खड़ा था क्योंकि यह पाँचों आवाजें उसकी जानी पहचानी थीं। कता जा रहा था।

“हमीद... कैप्टन हमीद। हम तुम्हें आतंकित नहीं करना चाहते... हम तुम्हारे सामने तीन बातें रख रहे हैं... सुनो और सोचो पहली बात तुम्हारा कमरा बन्द था... बाहर से ताला लगा हुआ था। सन्दन पुलिस और तुम्हारे दूतावास की ओर-से इतना सख्त पहरा था कि बिड़िया भी घर नहीं पार सकती थी—मगर फिर भी नीला महल का प्रति रूप तुम्हारे कमरे के अन्दर मौजूद है—इस पर विचार करो कि प्रतिरूप तुम्हारे कमरे के अन्दर पहुंचा कैसे—?”

“दूसरी बात—रिवालों में मैं तुमने अपने जीवन का बहुत बड़ा

कारनामा किया था—इस के सपर्यंक हम भी हैं—उसी रिवाजों में व
तुम लेडी वाल्टर से बातें कर रहे थे तो तुम्हारे आस पास कोई नहीं था
हाल लगभग खाली हो चुका था—फिर तुम दोनों की आवाजें किस
प्रकार टेप हो गईं—केवल तुम्ही दोनों की—।”

एक क्षण के लिये खामोशी छा गई—फिर आवाज आने लगी ।

“तीसरी बात—कुछ देर पहले तुम ने पाँच आवाजें सुनी थीं
हमें पूरा विश्वास है कि तुम ने पाँचों आवाजों को अच्छी तरह पहचान
लिया होगा—अब प्रश्न यह उठता है कि क्या नीला महल उनके निजी
जीवन में भी महत्व रखता है ?”

आवाज रुकी और फिर आने लगी ।

“कैप्टन हमीद—इन बातों और इन सवालों पर अच्छी तरह
विचार कर लो—उसके बाद फिर यह सोचना कि नीला महल क्या
है—और तब कोई कदम उठाना—अच्छा—अब मेरे पास से हट
हट जाओ—मैं जलने जा रहा हूँ—।”

हमीद अनिच्छित रूप से पीछे हट गया ।

विजली सी चमकी—एक शोला भड़का और पकट में पत्थर का
बना नजर आने वाला नीला महल का प्रतिरूप कागज और लकड़ी
के समान जलने लगा ।

एक आवाज अब भी आ रही थी—दूर होती हुई आवाज !

“मेरा जलना भी एक आर्ट है कैप्टन हमीद—मैं पत्थर का
बना हुआ था—मगर कागज के समान जल रहा हूँ—तुम्हारी भेज
को भी कोई हानि नहीं पहुँचेगी—अब अगर तुम किसी से पूछोगे कि
तुम्हारे कमरे में नीला महल का प्रतिरूप कैसे पहुँचा तो वह तुम्हारी
हँसी उड़ायेगा—इसलिये कि प्रतिरूप गायब हो चुका होगा—।”

आवाज के बन्द होते ही हमीद ने देखा कि आग के शोले खल
हो चुके हैं और जहाँ प्रतिरूप रखा हुआ था वहाँ अब थोड़ी सी राख

है—उतनी ही राख जितनी कि एक सिगार की होती है ।

उसने कमरे का निरीक्षण करना आरम्भ किया और अन्त में इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि कमरे के अन्दर दाखिल होने की एक ही सुरत रही होगी—वह यह कि ताले की डुप्लीकेट चार्ज बनवाई गई होगी—और उसी से ताला खोला गया होगा ।

हमीद ने कमरे से बाहर निकल कर नया ताला लगाया और विनोद को कमरे की ओर बढ़ा—“मगर जैसे ही दरवाजे पर पहुँचा गार्ड ने एक पर्चा उसकी ओर बढ़ा दिया ।

विनोद ने लिखा था :—

तुम्हारे जाने के बाद ही मुझे चक्कर सा महसूस हुआ था और अब मैं सोने जा रहा हूँ । रात भर मेरे पास न आना और न किसी को लाना ।”

हमीद पैर पटकता हुआ अपने कमरे में वापस आकर लेट गया ।

थोड़ी ही देर बाद डिनर के लिये फोन पर सूचना मिली ।

“यहीं भिजवा दीजिये—” हमीद ने कहा और विचारों में खो गया ।

थोड़ी ही देर बाद भोजन आ गया । भोजन करके उसने नेपकीन से हाथ साफ किये और काफ़ी बनाने लगा ।

अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया ।

“कौन है ?” उसने पूछा ।

“क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?” बाहर से पूछा गया ।

“आ जाइये—” हमीद ने कहा । उसने आवाज पहचान ली थी ।

यह पापेन था ।

पापेन अन्दर दाखिल हुआ और हमीद बड़े ध्यान से उसका चेहरा देखने लगा—फिर दूसरी प्याली में भी काफ़ी उँडेलने लगा ।

पापेन कुर्सी बसीट कर बैठ गया और बोला ।

“तुम शायद यह देख रहे थे कि मैं परेशान क्यों हूँ ?”

“नहीं तो आपके चेहरे से तो मोनालिसा की सादगी फूटी पर रही है ।” हमीद ने कहा ।

“तुम बहुत शरीर हो...” पापेन ने मुत्कुरा कर कहा, फिर गम्भीर होता हुआ बोला “मैं सचमुच बहुत परेशान हूँ—और सुनोगे तो तुम भी परेशान हो जाओगे ।”

“क्या किसी औरत ने फिर एक साथ बारह बच्चों को जन्म दिया है ?” हमीद ने उससे कहीं बहुत अधिक गम्भीर हो कर पूछा ।

“क्या तुम वस ऐसी ही खबर से परेशान हो सकते हो ?” पापेन हँस पड़ा ।

“मैं क्या... पूरा संसार इस प्रकार की खबरों से परेशान है । राष्ट्र फेमली प्लानिंग पर उधार खाये बैठे हैं और कुदरत का कारखाना दसादम भस्त कलन्दर लगाये हुये हैं ।” हमीद ने कहा ।

“तुम से विदा होने के बाद मैं अपने होटल जैसे ही पहुँचा था—मुझे दो आदमी तजर आये थे—”

“उन दोनों के सगे पर सींग निकली हुई थी...” हमीद ने बात काट कर कहा “और उन सींगों पर लड़कियाँ नाँच रही थीं ।”

“गम्भीरता से सुनो कैप्टन...” पापेन ने कहा “वह दोनों जर्मन थे और जर्मन ही मैं बातें भी कर रहे थे । एक कह रहा था कि यह नीला महल की आशा है ! दूसरा कह रहा था कि पहरा बहुत ही सख्त है । पहले ने कहा कि इन्डिया आफ्रिस के अन्दर जाने की आवश्यकता नहीं है । बाहरी भाग में ही कहीं जम रखा जा सकता है । दूसरे ने कहा था कि इससे पूरी इमारत नहीं उड़ेगी—वस कुछ ही भाग को हानि पहुँचेगी । पहले ने कहा था कि कोई हज़ नहीं...”

आज जितना तवाह हो सकता है उतना ही तवाह होने दो...मैंने उनकी बातें साफ सुनी थीं। फिर वह दोनों बाहर निकले और मैं उनके पीछे लग गया था। मगर इन्डिया आफिस के निकट पहुँच कर वह दोनों कुछ इस प्रकार गायब हो गये कि पता ही नहीं चल सका कि उन्हें जमीन खा गई या आसमान...।”

“फिर आपने लन्दन पुलिस को सूचना दी।” हमोद ने पूछा

“नहीं—तुम्हारी राय लेना चाहता हूँ...।”

“अच्छा रुकिये...पहले मैं अपने दूतावास को फोन करता हूँ...फिर लन्दन पुलिस को सूचना दूँगा—उसके बाद हम दोनों खुद चलेंगे।”

“उचित राय है।” पापेन ने कहा।

हमीद ने टेलीफोन की ओर हाथ बढ़ाना ही चाहा कि बन्टी बजने लगी। उसने लपक कर रिसीवर उठाया और माउथ पीस में बोला।

“हेलो...कैप्टन हमीद स्पीकिंग...।”

“हेलो...बात कीजिये...” आवाज आई।

एक क्षण बाद हमीद को अपने डी० आई० जी० साहब की आवाज सुनाई दी। वह कह रहे थे।

“हमीद ! कैसे हो ?”

“आपकी दुआयें हैं जनाब—मगर आप यहाँ...।”

“विनोद कैसा है ?”

“वह भी अच्छे हैं...।”

“तुम फौरन मेरे पास आ जाओ। मैं आफिस के अनेक्सी नम्बर तीन से बोल रहा हूँ—।”

इसके साथ ही टेलीफोन का सम्बन्ध कट गया।

“कौन था ?” पापेन ने कहा।

“एक बड़े मियाँ थे—अकारण बोर कर रहे थे...” हमीद ने कहा “आइये चलें।”

“कहाँ?” पापेन ने पूछा।

“इन्डिया आफिस...” हमीद ने कहा “मैंने अपनी योजना बदल दी है... अब सीधे वहीं चलेंगे...”

“पापेन ने कुछ नहीं कहा। उठ कर खड़ा हो गया। बाहर निकल कर हमीद ने अपनी मोटर साइकिल निकालनी चाही, मगर पापेन ने कहा।

“नहीं... हम कार से चलेंगे—।”

“चलिये—” हमीद ने कहा।

कम्पाउन्ड के बाहर शानदार लिंकन खड़ी थी। दोनों गाड़ी पर बैठ गये।

“आपको भी यह गाड़ी पसन्द है?” हमीद ने पूछा।

“आदि से...” पापेन बोला “यहाँ आकर खरीदी है।”

“और जब हम लोग नीला महल के लिये रवाना होंगे तो फिर इसका क्या परिणाम होगा।”

“वेच दूँगा... लन्दन में तो यह बहुत सरल है। सबेरे एक गाड़ी और सन्ध्या को वेच दी...” पापेन ने कहा “तो फिर इन्डिया आफिस की ओर चलूँ?”

“हाँ...” हमीद ने कहा।

कार चल पड़ी।

“कर्नल विनोद से कुछ बातचीत हुई?” पापेन ने पूछा।

“किस सम्बन्ध में?”

“नीला महल के सम्बन्ध में...”

“हाँ...”

“क्या राय दी उन्होंने?”

“उनका विचार है कि मुझे जाना चाहिये....।” हमीद ने कहा ।

“तो फिर कब तुम चल रहे हो ?”

“क्या आपने कल की खानगी के बारे में निश्चय कर लिया है ?”

“हाँ भाई...कल मैं अवश्य खाना हो जाऊँगा...क्योंकि मेरे देश की भलाई इसी में है ।”

“नीला महल में यदि हम पहुँच भी गये तो क्या करेंगे ?” हमीद ने पूछा ।

“सब करेंगे....” पापेन ने मुस्करा कर कहा “तुम इस समय बच्चों जैसी बातें कर रहे हो कैप्टन ! हमें पता लगाना है कि नीला महल कहाँ है ।”

“नीला महल एक ऐसी इमारत का नाम है जिसमें तीन बुर्जियाँ और एक गुम्बद है । यह इमारत अफ्रीका के बने जंगलों में है और एक रानी की मिलकियत है जिसका मौजूदा नाम लेडी वाल्टर हैं...अब यह इमारत येस० आई० येस० का हेड क्वार्टर है ।”

पापेन खिलखिला कर हँस पड़ा, फिर बहुत ही गम्भीर स्वर में बोला ।

“कैप्टन हमीद ! अगर केवल यही बात होती तो संसार के हर देशों की सीक्रेट सर्विस के सदस्य परेशान न होते...तब सीधी सी बात होती...अर्थात् अफ्रीका के उस इलाके में जिसका भी राज्य होता उससे पहले अन्तर्राष्ट्रीय विधान के अन्तर्गत प्रार्थना की जाती और फिर वहाँ सैनिक उतारें जाते....।”

हमीद के सारे शरीर में विचित्र सी लहर दौड़ गई...बिल्कुल यही बातें इन्हीं शब्दों में कर्नल विनोद ने लिखी थी...तो क्या विनोद और पापेन एक ही आदमी के दो रूप हैं...अगर वास्तव में ऐसा

ही है तो फिर विनोद को कम से कम उस पर तो यह रहस्य प्रकट कर देना चाहिये था... उधर पापेन कहता जा रहा था ।

“नीला महल के बारे में तुमने जो बातें मुझे बताई हैं... वह बातें तो मैंने ही शायद तुम को बताई थीं... मगर कैप्टन । यह वास्तविकता नहीं है... नीला महल एक भेद है... एक खौफनाक और भयानक रहस्य... और येस० आई० येस० की संस्था भी इतनी साधारण नहीं है जितनी तुम समझे बैठे हो । इस संस्था का सबसे बड़ा चमत्कार यह है कि इसका सबसे बड़ा विपत्ती इसका मित्र साबित होता और जिसे इसका मित्र समझा जाता है वह विपत्ती साबित होता है... है इस भूल भुलैयाँ का कोई जवाब—?”

पता नहीं और कितनी देर तक वह बोलता रहता, मगर इन्डिया आफिस की इमारत निकट आ गई थी । इसलिये वह मौन हो गया—और फिर कार भी रोक दी ।

“आप यहीं रुकिये... मैं अन्दर जा रहा हूँ और अभी वापस आता हूँ...” हमीद ने कहा और कार से उतर कर जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता हुआ दरवाजे तक आया । गेट कीपर ने शनाख्ती कार्ड देखते ही दरवाजा खोला और हमीद अनेकसी नम्बर तीन की ओर बढ़ गया ।

डी० आई० जी० साहब कारीडर ही में मिल गये । वह बैचैनी से टहल रहे थे “हमीद को देखते ही हमीद की ओर बढ़े और उस की पीठ थपथपाते हुये कहा ।

“तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं—विनोद ठीक है ना—?”

“जी हाँ—मगर कब आये—मुझे सूचना भी नहीं मिली वरना एयर पोर्ट अवश्य आया होता ।”

“अरे छोड़ो इसे—” डी० आई० जी० ने कहा “स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही है । विनाशकारियों का जोर बढ़ता ही जा रहा है ।”

अचानक हमीद को पापेन को दो हुई सूचना याद आ गई। उसने कहा।

“आपके फोन से कुछ ही देर पहले मुझे यह सूचना मिली थी कि हमारे दूतावास की इमारत को बम से उड़ा देने का प्रोग्राम है। मैं लन्दन पुलिस को सूचित करने के बारे में सोच ही रहा था कि आपका फोन आ गया—” हमीद ने कहा, फिर पापेन से सुनी हुई बातें बता दीं।”

“ओह—चलो चलो—कम्पाउन्ड में देखा जाये—” उन्होंने अभीरता के साथ कहा।

पूरे कम्पाउन्ड में पिछला भाग ही ऐसा था जहाँ बम के पाये जाने की सम्भावना हो सकती थी। इसलिये यह लोग पहले उधर ही बढ़े—।

फिर हमीद चकित रह गया जब उसे वहाँ टीन का एक गटर नजर आया। वह इस प्रकार पड़ा था जैसे स्वीपर गलती से उसे वहाँ छोड़ गया हो। उस टीन के गटर में प्लास्टिक की दो थैलियाँ पड़ी हुई थी। हमीद ने उसमें हाथ डाल दिया।

“सावधानी से हमीद—देख भाल कर—” उन्होंने कहा, मगर इतनी देर में हमीद उसका स्वीच तोड़ चुका था—और अब खाली थैला रह गया था।

“बाहर तीन ओर सड़क है केवल चौथी ओर ही खतरे की सम्भावना है, चलिये उधर भी देख लें—” हमीद ने कहा।

“चलो—” डी० आई० जी० ने कदम आगे रखते हुये कहा “तुम लोग सचमुच विभाग की नाक हो। मेरा विचार था कि विनोद के जखमी होने के बाद तुम मुर्दा होकर रह गये होंगे और इतना बड़ा कार्य न कर पाओगे—मगर तुमने साबित कर दिया कि तुम विनोद के सुयोग्य शिष्य हो।”

“शुक्रिया जनाब—” हमीद ने कहा ।

“विभाग में हर व्यक्ति तुम्हारा विरोध कर रहा था । आसिफ ने एड़ी चोटी का जोर लगाया । एस० पी० भी विरोधी था अन्त में आई० जी० साहब को यह निश्चय करना पड़ा था कि तुम दोनों को वापस बुला लिया जाये मैं नहीं कह सकता कि उन पर किसका दबाव पड़ा था मगर कल रात बिल्कुल अचानक तौर पर उन्हें ऐसा आदेश मिला कि उन्हें अपना निर्णय बदलना पड़ा और फिर यह निश्चय किया गया कि नीला महल का केस तुम्हें सौंप दिया जाये—मैं तुम्हें बधाई देता हूँ हमीद...मगर बेटे ! इस बूढ़े की लंज रख लेना ।”

हमीद ने महसूस किया कि उनको आवाज भर्रा गई है—इसलिये जल्दी से बोला ।

“आप इम्मीनान रखिये जनाब मैं जान लड़ा दूँगा ।”

दोनों बाहर आ गये थे । हमीद को पापेन नगर आया जो गाड़ी से नीचे उतर कर उसी से टिका हुआ सिगार पी रहा था । उसने हमीद को संकेत किया ।

“यह कौन है हमीद ?” उन्होंने पूछा ।

“पश्चिमी जर्मनी की सीक्रेट सर्विस का चीफ और इस वेस में हमारा साथी—इसका नाम पापेन है -”

“इससे मेरा परिचय न कराना मैं गुप्त रूप से यहाँ आया हूँ ।”

“जी अच्छा—” हमीद ने कहा और दिल ही दिल में खुद से अपनी पीठ ठोकने लगा कि उसने पापेन को डी० आई० जी० के बारे में नहीं बताया था—यह कह कर टाल दिया था कि एक बड़े मियाँ बोर कर रहे थे ।

“मेरे साथ आओ...” पापेन ने हमीद से कहा । उसने हमीद से

डी० आई० जी० के बारे में कुछ पूछा भी नहीं था ।

फिर वह उस ओर आये जिधर हमीद के विचारानुसार खतरा हो सकता था... और सचमुच वहाँ भी टीन के एक गटर में दो प्लास्टिक बम मिले... फिर हमीद एकदम से चौंक कर जमीन पर बैठ गया और उस ईंट को देखने लगा जो जरा सी उभरी हुई थी ! उसने जब उस ईंट को उखाड़ा तो एक बार फिर चौंक उठा ! नीचे रिक्त स्थान में नंगे तारों का एक लच्छा पड़ा हुआ था जो नीला महल के प्रति रूप से अटैच था । यह प्रतिरूप भी वहीं था ।

“नीला महल !” पापेन और डी० आई० जी० दोनों के मुख से एक साथ निकला ।

हमीद ने जेब से चाकू निकाला और तार को प्रति रूप से अलग कर के प्रति रूप उठा लिया... फिर बोला ।

“अब यह दोनों बम वेकार हो गये...”

वह दोनों चकित दृष्टि से हमीद को देख रहे थे ।

अचानक हमीद को ऐसा लगा जैसे कोई साया बड़ी तेजी से गुजर गया... वह और पापेन दोनों ही उसी ओर झपटे, मगर वह हाथ नहीं लग सका । पता नहीं कहाँ गायब हो गया ।

“यह कौन हो सकता था ?” हमीद ने कहा ।

“उन्हीं में से कोई... जिन्होंने बम रखे थे...” पापेन ने कहा, फिर

डी० आई० जी० साहब की ओर संकेत करके पूछा “यह कौन साहब हैं ?”

“मेरे फूफा के दादा के भतीजे के भान्जे...” हमीद ने कहा ।

पापेन अपना माथा रगड़ने लगा, शायद यह रिश्ता उसकी समझ में नहीं आया था, फिर बोला ।

“अब क्या प्रोग्राम हैं ?”

“कल दोपहर में मिलिये...” हमीद ने कहा “मैं पूरी तरह

तैयार रहूँगा...सन्ध्या की जगजग से हम खाना हो जायेंगे।”

“वेरी गुड...” पापेन ने हर्षित होकर कहा “तो मैं अब चलता हूँ—।”

“जाइये...अभी मुझे यहां रुकना है...” हमीद ने कहा।

पापेन के जाने के बाद डी० आई० जी० साहब थोड़ी देर तक हमीद से बातें करते रहे, फिर बोले।

“अब तुम जाओ...मगर कल सुबेरे मुझसे अवश्य मिलना—।”

हमीद सलाम कर के अपने निवास स्थान पर आया। रात भर उसके दिमाग में प्लास्टिक के बम फटते रहे।

सुबेरे जब उसने विनोद से मुलाकात करनी चाही तो गार्ड ने बताया कि कल रात उसके जाने के बाद कर्नल की नींद पोड़ा बद जाने के कारण खुल गई थी। रात भर वह करवटें बदलते रहें थे और अभी आधा घन्टा पहले सोये हैं...।

फिर उसी गार्ड ने उसे एक तह किया हुआ कागज धमा दिया...।

हमीद ने अपने कमरे में वापस आकर कागज खोला। यह वही कागज था जिस पर रात विनोद लिखता रहा था। अन्तिम पैक्तियों में लिखा था।

“हमीद ! तुम दूतावास पहुँच कर डी० आई० जी० साहब से आदेश प्राप्त करो और फिर मुझसे मिलो। रात की सफलता पर मेरी ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई है।”

“बाप रे बाप !” हमीद बड़बड़ाया “यानी आप को डी० आई० जी० के यहाँ आने का भी पता है और उन बमों का भी....।”

फिर कमरे से बाहर निकला और सीधा दूतावास पहुँच गया। डी० आई० जी० साहब उस की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही हमीद

कमरे में पहुँचा उन्होंने खुद उठ कर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया, फिर एक कुर्सी पर बैठने का सकेत किया उसके बाद कहने लगे ।

“तुम्हारे मित्र देशों को पत्र लिखे जा चुके हैं ताकि तुम्हें किसी भी स्थान पर कोई कष्ट न हो ।

अब बताओ कि तुम्हें और किन किन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ सकती है ?”

“वस आप की दुआ चाहिये—” हमीद ने कहा ।

“अच्छा... अब काम को बातें सुनो... ” डी० आई० जी० साहब ने कहा “अब तक तुम्हें यही मालूम है कि नीला महल येस० आई० येस० वाली संस्था का हेड क्वार्टर है... और इस संस्था की सचालिका एक हिन्दुस्तानी औरत है... और यह संस्था विनाशात्मक कार्य कर रही है...”

डी० आई० जी० साहब एकदम से मौन हो गये और हमीद अपलक उन्हें देखता रहा फिर डी० आई० जी० साहब ने पूछा ।

“तुम लेडी वाल्टर को जानते हो ?”

“जी हाँ...”

“यह भी जानते हो कि वह कौन है ?”

“माई काटा कबीले की महारानी एक अंग्रेज की लड़की... अंग्रेज ने मरते समय कर्नल विनोद को याद किया था... उसकी डायरी इस समय कर्नल के पास है !”

“ठीक है... मगर तुम्हें यह सुनकर कदाचित आश्चर्य हो कि लेडी वाल्टर का बाप कोई अंग्रेज नहीं बल्कि एक हिन्दुस्तानी था । वह फारेन सीक्रेट सर्विस का चीफ था और कर्नल विनोद को एक महत्वपूर्ण घटना की सूचना देना चाहता था मगर मौत ने उसे आ दबोचा... वह महत्वपूर्ण घटना यह थी कि हमारे देश का एक

महत्वपूर्ण आदमी फौजी सामान से सम्बन्धित संधि के लिये बाहर गया हुआ था। संधि तो हो गई मगर साथ ही साथ वह महत्वपूर्ण आदमी येस० आई० येस० के हाथों लग गया...।”

और जब हमीद के पूछने पर डी० आई० जी० साहब ने उस महत्वपूर्ण आदमी का नाम लिया तो हमीद कुर्सी से गिरते गिरते बचा और हकला कर बोला।

“मम मैंने...तत...तो पढ़ा था कि वह ज्युरिच में अपना इलाज करवा रहे हैं।”

‘देश के हित तथा लाभ के लिये इस प्रकार की खबर फैलानी आवश्यक थी...’ डी० आई० जी० साहब ने कहा “तुम लोग जब लन्दन आये थे तो यही सूचना मिली थी कि वह लन्दन ही में कहीं हैं...मगर अब मालूम हुआ कि वह यहाँ नहीं हैं... बल्कि माई काय क्वीले में पहुँचा दिये गये हैं...येस० आई० येस० की संस्था उन्हें छोड़ने के लिये तैयार है मगर उन्हें छोड़ने का जो मूल्य चाहती है उसे देने के लिये हम तैयार नहीं हैं...मूल्य यह है कि उस संधि की कुछ महत्वपूर्ण धाराओं में परिवर्तन कर दिया जाये और उस परिवर्तन का अर्थ यह होगा कि हम अपने ही हाथों अपने देश की राजनैतिकता का गला घोट दें इसलिये कैप्टन हमीद ! तुम्हारे हाथ में केवल मेरी ही नहीं वरन पूरे देश का मान मर्यादा है...इसे तुम्हें बचाना है—उस आदमी को संस्था के हाथों से छीन लेना है...संधि पत्र की नकल प्राप्त करनी है...जहाजों पर शस्त्र तथा दूसरे समान लादे जा चुके हैं...एक सप्ताह बाद जहाज रवाना हो जायेंगे... उन्हें हर मूल्य पर सकुशल जन्म भूमि के बन्दरगाह पर लड़क डालना है और यह सारे काम केवल एक आदमी को करने हैं... और उस आदमी का नाम हमीद है... कैप्टन हमीद...।”

इस मध्य हमीद बार बार थूक घोट रहा था...उसका सारा शरीर

पसीने में भीग रहा था ।

यह पहला संयोग था जब उसे इतना बड़ा काम सौंपा गया था । उसके दिमाग में रह रह कर यही बात गूँज रही थी कि वह अपना कर्त्तव्य पूरा कर भी सकेगा या नहीं । फिर भी उसने साहस बटोर कर कहा ।

“मैं अपना फर्ज पूरा करने में अपनी जान की भी परवाह नहीं करूँगा ।”

“और यह रखो……” डी० आई० जी० साहब ने कहते हुये बड़े ड्रमाई ढङ्ग से मेज की दराज खोली । उसमें से एक लिफाफा निकाला जो सील किया हुआ था……फिर कहने लगे “कैप्टन हमीद । यह संसार का सब से बड़ा खतरनाक काम है जो तुम्हें सौंपा जा रहा है । इस काम में तुम्हारी जान भी जा सकती है । यह लिफाफा तुम अपनी जान से भी अधिक प्यारा रखोगे । तुम्हारे लिवास के नीचे विशेष प्रकार की जैकेट होगी, जिसके अन्दर यह सिला हुआ रहेगा । तुम्हें यही प्रकट करते रहना पड़ेगा कि यह लिफाफा तुम्हें अपनी जान से भी अधिक प्यारा है—और अगर कोई इसे तुम से छीनना चाहेगा तो तुम अपनी जान भी लड़ा दोगे—लेकिन यदि यह तुम्हारी अनभिज्ञता में गायब हो जाये तो समझ लेना कि तुम अपने मिशन में नब्बे प्रतिशत सफल हो गये हो——”

“जी—सफल !” हमीद ने बड़े आश्चर्य के साथ कहा ।

“हां—सफल——” डी० आई० जी० साहब ने कहा “मैं तुम्हें उलझाना नहीं चाहता—मैंने लिफाफे के प्रति जो आदेश दिये हैं, वैसा कहने और करने से शत्रु यही समझेंगे कि सचमुच यह लिफाफा इतना ही महत्व पूर्ण है फिर वह इस लिफाफे को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे—और उनकी शक्ति को देखते हुये आशा है कि वह इसे किसी न किसी तरह प्राप्त भी कर लेंगे……फिर इस

लिफाफे के अन्दर लिखे हुये प्तान ही को वह हमारा प्तान समझेंगे, और इस प्रकार हम उन्हें धोखे में रख कर अस्ली प्तान को काम में ला सकेंगे।”

“ओह...” हमीद ने ठण्डी साँस खींची।

“अब तुम जाओ... भगवान तुम्हारी सहायता करेगा। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है...” डा० आई० जी० ने कहा फिर उसे लिफाफा थमा दिया।

हमीद उठा। साथ ही वह भी उठे... फिर उसके कन्धे पर हाथ रख कर बोले।

“जाओ वेटे... मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा।”

हमीद एक नवीन प्रकार का उत्तरदायित्व लिये बाहर निकला। अब वह जल्द से जल्द हास्पिटल पहुँच जाना चाहता था ताकि विनोद को रिपोर्ट दे सके।

जब अस्पताल पहुँचा तो गार्ड ने बताया कि लेडी वाल्टर उससे मिलने आई थी। कर्नल की आज्ञा से उसे रोक लिया गया है। वह इस समय उसके कमरे में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही है... और स्वयं कर्नल उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

हमीद जब विनोद के कमरे में दाखिल हुआ तो विनोद पलङ्ग पर बैठा हुआ था। उसका चेहरा अब भी पट्टियों से ढका हुआ था।

“क्या मैं दरवाजा बन्द कर दूँ... बहुत ही महत्वपूर्ण रिपोर्ट देनी है...” हमीद ने कहा और विनोद कागज पर लिखने लगा।

“इस समय रिपोर्ट देने की आवश्यकता नहीं है... और फिर अब हैसियत इन्चार्ज को है—समय कम है... यात्रा की तैयारी करो। यह पहला संयोग है कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा... इसका जितना दुख मुझे है उसका तुम केवल अनुमान ही लगा सकते हो... लेकिन विश्वास रखो... मैं नहीं तो क्या... मेरी आत्मा अवश्य तुम्हारे साथ रहेगी... और जब भी तुम कोई मूर्खता करोगे... तुम्हारा वान

उठाड़ा जायेगा...बस अब जाओ। तुम्हारे कमरे में लेडो वाल्टर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है...जाओ।”

हमंद ने उठकर विनोद को भर नजर देखा और कमरे से निकल गया।

अपने कमरे में पहुंचा तो सचमुच लेडो वाल्टर को बैठा हुआ देता।

“क्या बात है!” हमीद ने पूछा।

“रात को आठ बजे की फ्लाइट से हम लोग अफ्रीका के लिये रवाना हो जायेंगे। ल्यु पोल्ड विले हमारी मंजिल है। कर्नल मुझे बता चुके हैं कि तुम जाने के लिये तैयार हो...अब तुमसे एयर पोर्ट पर ही मिलूंगी। तुम्हारा टिकिट खरीद लिया गया है—” यह कह कर वह कमरे से बाहर निकल गई।

हमीद कुछ देर तन्हाई चाहता था, मगर भाग्य में तन्हाई शापद भी ही नहीं...लेडी वाल्टर के जाते ही फोन की घंटियाँ बजने लगी थी। उसने रिसीवर उठाया तो पापेन की आवाज सुनाई दी।

“कैप्टन! मुझे सूचना मिल चुकी है कि रात आठ बजे की फ्लाइट से जाने के लिये तुम तैयार हो—और लेडी वाल्टर भी तुम्हें एयर पोर्ट पर ही मिलूंगा...” इसी के साथ तुम्हारे साज होगी। मैं भी सम्बन्ध भी कट गया।

समय तेजी से व्यतीत होता जा रहा था...”

सात बजे तक हमीद की जैकेट भी तैयार हो गई। आवश्यक सामान लेने के बाद वह विनोद से मिलने के लिये जाने ही वाला था कि गार्ड आशा लेकर अन्दर आया और हमीद को एक पैकेट तथा एक पुर्जा थमा कर उल्टे पैरों वापस चला गया। उसने जल्दी से पुर्जा खोला। विनोद ने लिखा था।

“पैकेट में एक लाइटर है...जो सफरी ट्रान्स्मीटर भी है और गैस रायफल भी...अब तुम जाओ...समय हो चुका है...मुझ से मिलने

लिफाफे के अन्दर लिखे हुये प्तान ही को वह हमारा प्तान समझेंगे, और इस प्रकार हम उन्हें धोखे में रख कर अस्ली प्तान को काम में ला सकेंगे ।”

“ओह...” हमीद ने ठण्डी साँस खींची ।

“अब तुम जाओ...भगवान तुम्हारी सहायता करेगा । मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है...” डा० आई० जी० ने कहा फिर उसे लिफाफा थमा दिया ।

हमीद उठा । साथ ही वह भी उठे...फिर उसके कंधे पर हाथ रख कर बोले ।

“जाओ बेटे...मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा ।”

हमीद एक नवीन प्रकार का उत्तरदायित्व लिये बाहर निकला । अब वह जल्द से जल्द हास्पिटल पहुँच जाना चाहता था ताकि विनोद को रिपोर्ट दे सके ।

जब अस्पताल पहुँचा तो गार्ड ने बताया कि लेडी वाल्टर उससे मिलने आई थी । कर्नल की आज्ञा से उसे रोक लिया गया है । वह इस समय उसके कमरे में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही है...और स्वयं कर्नल उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।”

हमीद जब विनोद के कमरे में दाखिल हुआ तो विनोद पलङ्ग पर बैठा हुआ था । उसका चेहरा अब भी पट्टियों से ढका हुआ था ।

“क्या मैं दरवाजा बन्द कर दूँ...बहुत ही महत्वपूर्ण रिपोर्ट देनी है...” हमीद ने कहा और विनोद कागज पर लिखने लगा ।

“इस समय रिपोर्ट देने की आवश्यकता नहीं है...और फिर अब हैसियत इन्चार्ज को है—समय कम है...यात्रा की तैयारी करो । यह पहला संयोग है कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा...इसका जितना दुख मुझे है उसका तुम केवल अनुमान ही लगा सकते हो...लेकिन विश्वास रखो...मैं नहीं तो क्या...मेरी आत्मा अवश्य तुम्हारे साथ रहेगी...और जब भी तुम कोई मूर्खता करोगे...तुम्हारा वान

उलाड़ा जायेगा... वस अब जाओ। तुम्हारे कमरे में लेडी वाल्टर
तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है... जाओ।”

हमंद ने उठकर विनोद को भर नजर देखा और कमरे से
निकल गया।

अपने कमरे में पहुँचा तो सचमुच लेडी वाल्टर को बैठा हुआ
देता।

“क्या बात है !” हमीद ने पूछा।

“रात को आठ बजे की फ्लाइट से हम लोग अफ्रीका के लिये
जाना हो जायेंगे। ल्यु पोल्ड विले हमारी मंजिल है। कर्नल मुझे
बता चुके हैं कि तुम जाने के लिये तैयार हो... अब तुमसे एयर पोर्ट
पर ही मिलूँगी। तुम्हारा टिकट खरीद लिया गया है—” यह
कह कर वह कमरे से बाहर निकल गई।

हमीद कुछ देर तन्हाई चाहता था, मगर भाग्य में तन्हाई शायद
भी ही नहीं... लेडी वाल्टर के जाते ही फोन की घंटियाँ बजने लगी थी।
उसने रिसीवर उठाया तो पापेन की आवाज सुनाई दी।

“कैप्टन ! मुझे सूचना मिल चुकी है कि रात आठ बजे की फ्लाइट
से जाने के लिये तुम तैयार हो— और लेडी वाल्टर भी तुम्हें एयर
पोर्ट पर ही मिलूँगा...।” इसी के साथ तुम्हारे साज होगी। मैं भी
सम्बन्ध भी कट गया।

समय तेजी से व्यतीत होता जा रहा था...।”

सात बजे तक हमीद की जैकेट भी तैयार हो गई। आवश्यक
समान लेने के बाद वह विनोद से मिलने के लिये जाने ही वाला था
कि गार्ड आशा लेकर अन्दर आया और हमीद को एक पैकेट तथा
एक पुर्जा थमा कर उल्टे पैरों वापस चला गया। उसने जल्दी से पुर्जा
खोला। विनोद ने लिखा था।

“पैकेट में एक लाइटर है... जो सफरी ट्रान्स्मीटर भी है और गैस
पाइप भी... अब तुम जाओ... समय हो चुका है... मुझ से मिलने

१४२ :: जासूसी दुनिया

न आना वरना अपनी भावनाओं पर अधिकार न पा सकोगे !”

हमीद विवश हो गया—?

फिर जब वह एयर पोर्ट पहुँचा तो लाउन्ज ही में तेजी वाला और पापेन से मुलाकात होगई... फिर बिहसिल बजने से कुछ ही मिनट पहले यह लोग कस्टम से मुक्ति पा कर तेज तेज कदम बढ़ाते हुये बाहर की ओर बढ़े ।

हवाई जहाज वायु मण्डल में उड़ रहा था । दूर तक नीला आकाश था और नीचे धरती थी ।

हवाई जहाज में केवल ग्यारह यात्री थे । हमीद ने जहाज के ऊपर उठते ही अपनी लाइफ बुल्ट खोल कर उनकी ओर मुँह बना कर देखा था, फिर एयर होस्टेस की ओर देखने लगा था जो उससे बात कर रही थी ।

“प्लीज लाइफ बुल्ट बाँध लीजिये ।”

“क्या तुम मुझे कुत्ते का पिल्ला समझती हो ?” हमीद ने कहा ।

“मैं आपका मतलब नहीं समझी...” उसने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुये पूछा ।

“पट्टा इत्यादि बांधने का और क्या अर्थ हो सकता है—” हमीद ने कहा ।

“लेकिन इसके बिना आप विपत्ति में भी पड़ सकते हैं...” उसने मुत्कुरा कर कहा और दूसरी ओर बढ़ गई, क्योंकि उसे किसी दूसरे यात्री ने पुकार लिया था ।

हमीद ने उस यात्री की ओर घूर कर देखा जिसने उसे बुलारा

था—मगर उसे एयर होस्टर से बातें करता हुआ देख कर खुद खिड़की से बाहर देखने लगा ।

अब जहाज काफी ऊपर उठ चुका था । ऊँचे ऊँचे मकान छोटे छोटे खिलौने में परिवर्तित हो चुके थे । बहती हुई नदी किसी विधवा की माँग के समान नजर आ रही थी । हरे भरे खेत हरे मखमल की चादर बन गये थे । रोशनी के बड़े बड़े बल्ब छोटे छोटे छोटे तारों के समान नजर आ रहे थे ।

हमीद थोड़ी देर तक बाहर देखता रहा, फिर उकता कर सर अन्दर खींच लिया ।

यात्री गण ऊँघने लगे थे । हमीद की बगल में बैठी हुई लेडी वाल्टर सर झुकाये हुये किसी विचार में लीन थी । उसके पीछे पापेन था ।

हमीद ने कनखियों से पापेन की ओर देखा । पापेन एक मेग-जीन खोले एक अर्ध नग्न चित्र को बड़े ध्यान से देख रहा था । उसका दिल चाहा कि पापेन के हाथ से मेगजीन छीन ले...मगर न जाने क्या सोच कर इरादा बदल दिया और सामने की ओर देखने लगा ।

उसके बिल्कुल सामने एक जवान जोड़ा था जो एक दूसरे से धीरे धीरे बातें कर रहा था । औरत के अधरों पर मुस्कान थी । पुरुष उससे कोई ऐसी बात कह रहा था जिसके लिये औरत गर्दन हिला हिला कर हन्कार कर रही थी ।

जोड़े की बगल में दो बूढ़े फ्रान्सीसी थे । शायद यह दोनों किसी फर्म से सम्बन्ध रखते थे—क्योंकि बड़े आवेश में वह व्यवसायिक बातें कर रहे थे ।

उन दोनों बूढ़ों की दूसरी ओर एक प्रोफेसर समान आदमी था । उसके साथ एक जवान और सुन्दर लड़की थी जो कदाचित्

उसकी सेक्रेटरी थी। वह कदचित प्रथम बार हवाई जहाज से यात्रा कर रही थी, क्योंकि उसे उल्टी हो रही थी और वह बार बार अपना पृष्ठ थैली में डालती थी और फिर बाहर निकाल कर नीबू चूसने लगती थी। मगर प्रोफेसर उसकी दशा की चिन्ता किये बिना उसे कुछ समझाने की कोशिश कर रहा था।

सबसे अन्त में दो औरतें बैठी थी। एक को अपने मेकअप को इतनी चिन्ता थी कि वह इस समय भी अपने वैनिटी बैग से शीशा निकाल कर अपने होठों की लाली ठीक कर रही थी... और उसके साथ वाली बार बार अपने बालों को संवारने में लगी हुई थी।

सबसे अलग अलग दो युवक उदास बैठे हुये थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे दोनों की यही इच्छा रही हो कि यात्रा अते शीघ्र समाप्त हो जाये, क्योंकि एक बार बार अपनी रिस्ट वाच देखे जा रहा था। उसकी आँखें भूरी थीं और दूसरे की नीली।

हमीद ने जब उनकी ओर देखा तों भूरी आँखों वाला अपनी रिस्ट वाच को कान से लगाये हुये था... शायद उसे सन्देह हो गया था कि उसकी घड़ी बन्द तो नहीं हो गई है—फिर उसने अपने साथी से कुछ कहा और वह हमीद को घूर कर देखने लगा।

हमीद ने उधर से अपनी नजरें घुमा लीं और सीट से पीठ टिका कर आँखें बन्द कर लीं और नई मञ्जिल के बारे में सोचने लगा... फिर उसे डी० आई० जी० साहब की बात याद याद आई और साथ ही उसे कर्नल विनोद भी याद आ गया।

यह उसके जीवन का पहला सफर था जिसे वह कर्नल विनोद के बिना कर रहा था। यह ऐसा केस था जो अकेले निपटाना था! वह अधीर हो उठा—इसलिये नहीं कि वह कायर था—डर गया था—वरन् विनोद की याद ने उसे बेचैन कर दिया था। विनोद जो उसका आफिसर ही नहीं बल्कि बाप... भाई... मित्र और सभी कुछ था।

कर्नल विनेद के साथ वह कभी अधीनों के समान रहा ही नहीं था ।
 उसका दिल धड़कने लगा । उसने घबड़ा कर आंखें खोल दीं ।

जहाज में सन्नाटा छाया हुआ था...केवल उसकी हल्की सी घर
 बराहट सुनाई दे रही थी । एयर होस्टेस पायलेट के कैबिन में चली
 गई थी । लोग ऊँघ रहे थे । उसने फिर आंखें बन्द कर लीं और
 फिर पता नहीं कब सो गया ।

फिर किसी तेज आवाज से उसकी आंखें खुल गईं और उसका
 दिल चाहा कि अपना मुँह पीट ले—लेडी वाल्टर उसके कान के
 निकट पहुँच लाकर कह रही थी ।

“सोने लगे क्या...?”

“आपको क्या तकलीफ हो गई ?” हमीद ने भन्ना कर कहा ।

“नाराज क्यों हो रहे हो...” लेडी वाल्टर ने मुस्कुरा कर कहा
 “मैंने सोचा कि तुम्हें बता दूँ कि जहाज यूरोप से बाहर निकल
 आया है ।”

“तो मैं क्या करूँ...” हमीद ने झल्ला कर कहा ।

“तुम तो काटने दौड़ रहे हो...”

“भो...”

“अरे !” लेडी वाल्टर डर गई और हमीद ने अट्टहास लगाया ।
 उसका इतना अट्टहास तेज था कि लोगों की आंखें खुल गईं और
 वह उसे विचित्र नजरों से देखने लगे ।

“क्या हो रहा है कैप्टन ?” पीछे से पापेन ने कहा ।

“जो कुछ भी हो रहा हो... आप अमरीकन मेगजीन देखिये...”

हमीद ने पलट कर कहा ।

“क्या मतलब ?”

“मतलब साफ है...मगर नज़्मी तस्वीरों से दिलचस्पी रखने वालों
 की समझ में नहीं आयेगा ।”

“आखिर तुम इतने चिड़चिड़े क्यों हो गये हो ?” लेडी वाल्टर ने पूछा ।

“बस चुप ही रहो वर्ना....।”

“वर्ना क्या ?” लेडी वाल्टर हँस पड़ी ।

“जहाज से नीचे छुलाँग लगा दूँगा....” हमीद ने कहा ।

लेडी वाल्टर मौन हो गई । पापेन भी मेगजीन देखने लगा और खुद हमीद उन दोनों भूरी और नीली आंखों वालों को घूरने लगा । लेडी वाल्टर कुछ इस प्रकार निश्चिन्त नजर आ रही थी जैसे कोई बात ही न हो ।

उसी समय एयर होस्टेस उसके निकट से गुजरी....और हमीद ने उसे रोक कर रूखा ।

“मिस ! मुरमुरे खाने को मिल सकते हैं ?”

“हाट ?” एयर होस्टेस ने आंखें फाड़ कर कहा “आप खाने की कौन सी वस्तु माँग रहे हैं—मेरी समझ में नहीं आया ।”

“अरे ! आप मुरमुरे नहीं जानती—आश्चर्य है—” हमीद ने कहा ।

“क्या यह कोई इन्डियन चीज है ?” उसने मुस्कुरा कर पूछा ।

“जी हाँ—।”

“मुझे उसके बारे में बताइये....?”

“बताऊँगा....मगर एक शर्त पर....।” हमीद ने कहा ।

“वह क्या ।”

“आप मेरे सामने मुस्कुराइयेगा नहीं ?”

“वह क्यों ?”

“यह मेरी कमजोरी है....” हमीद ने गम्भीरता धारण करते हुये कहा “बात यह है कि मेरी पर नानी किसी बात पर मुस्कुराने लगी

थी और मुस्कुराते ही मुस्कुराते मर गईं... बस जब भी कोई लड़की या औरत मेरे सामने मुस्कुराती है तो मुझे अपनी पर नानी याद आ जाती है और मैं सोचने लगता हूँ कि कहीं यह भी न मुस्कुराते ही मुस्कुराते मर जाये... अरे अरे... आप मुस्कुराने लगीं... खुदा आपको बचाये... अरे बाप रे...।”

सारांश यह कि हमीद उसको अपनी दिलचस्प बातों में लगाये रहा और वह मुस्कुराती रही।

यह हरकत उसने इसलिये की थी कि लेडी वाल्टर जले—और वह सचमुच जल रही थी... फिर प्रोफेसर ने एयर होस्टेस को पुकार लिया।

एयर होस्टेस के जाते ही लेडी वाल्टर ने ठण्डी साँस ली और हमीद उसे चौंक कर देखने लगा—फिर लेडी वाल्टर ने कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि उसने आँखें बन्द कर लीं।

लेडी वाल्टर भी शायद थक गई थी। उसने भी आँखें बन्द कर के अपना सर सीट से लगा दिया।

हमीद थोड़ी देर तक आँखें बन्द किये पड़ा रहा... फिर उसने लेडी वाल्टर के खरटि की आवाज सुनी। उसने आँखें खोल कर देखा। वह वेखबर सो रही थी—फिर उसने गर्दन घुमा कर देखा। अब लगभग सभी सो चुके थे या आँखें बन्द किये हुये पड़े थे। प्रोफेसर की भी आँखें बन्द थी और उसकी सेक्रेटरी भी निढाल पड़ी हुई थी।

सफर को सात घन्टे से अधिक हो चुके थे और अब हमीद को उक्ता-हट महसूस होने लगी थी, मगर करता क्या। जहाज पर से छलांग तो लगा नहीं सकता था। इधर उधर नजरें दौड़ाई मगर एयर होस्टेस भी कहीं दिखाई नहीं दी। उसका हाथ सीट में लगे हुये उस बटन की ओर बढ़ा जिसे दबा कर एयर होस्टेस को तलब किया जा सकता था... फिर न जाने क्या सोच कर उसने एयर होस्टेस को तलब नहीं किया।

कुछ देर तक वह सोचता रहा, फिर आंखें बन्द कर लीं और न जाने कब सो गया ।

दूसरी बार जब वह जागा तो जहाज में गहरा सन्नाटा देख कर चौंक पड़ा जब कि अब सब ही जाग गये थे । पहले तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया, मगर जब स्थिति समझ में आई तो वह स्तब्ध रह गया ।

भूरी आंखों वाला पायलोट के कैबिन में दाखिल होने वाले दरवाजे के सामने खड़ा था, । उसके हाथ में एक विचित्र प्रकार का रिवाल्वर था जिससे उसने तमाम यात्रियों को कवर कर रखा था ।

भूरी आंखों वाले के साथी की सीट भी खाली थी शायद वह पायलोट के निकट पहुँच चुका था । भूरी आंखों वाला कह रहा था ।

“दोस्तो ! हमारी तुम लोगों से कोई शत्रुता नहीं है । हम केवल यह जहाज चाहते हैं । आप लोग चुपचाप बैठे रहिये आप की रक्षा का उत्तरदाचिह्न हम पर है...लेकिन यदि किसी ने किसी प्रकार की आपत्ति या बाधा उत्पन्न करनी चाही तो मेरा रिवाल्वर उसे हमेशा के लिये मौत की नींद सुला देगा...और मुझे आशा है कि ऐसी नींद सोने के लिये कोई भी तैयार नहीं होगा —”

“तब...तुम लोग...इन्सानियत के...दुःश...मन हो—” प्रोफेसर ने हकला हकला कर कहा

“खामोश प्रोफेसर...” भूरी आंखों वाले की फुफकारती हुई आवाज उभरी “हम तुम्हारा भाषणा नहीं सुनना चाहते—और एक बार फिर सब को सावधान किया जा रहा है कि सब लोग अपनी अपनी सीटों पर मौन बैठे रहें—इस समय सब का जीवन हमारे हाथ में है ।”

इमीद खामोशी के साथ परिस्थिति का निरीक्षण कर रहा था । जैसे वह समझ चुका था कि यह दोनों हवाई डाकू हैं और जहाज को

हर ले जाना चाहते हैं ।”

तमाम यात्रियों को साँप सूँघ गया था । लेडी वाल्टर की आँखें भय के कारण फट गई थीं । प्रोफेसर की सेक्रेटरी चेतना खो बैठी थी । दोनों बूढ़े फ्रान्सीसी कांप रहे थे और भूरी आँखों वाले को पापेन घूर रहा था ।

हमीद ने जरा सी गर्दन इधर उधर कर के पायलेट के कैबिन की ओर देखा । नीली आँखों वाल पायलेट के निकट ही बैठा था और उसने अपने रिवाल्वर की नाल पायलेट की कमर से लगा रखी थी ।

एयर होस्टेस भय के कारण कांप रही थी और स्टाफ के तीन दूसरे आदमों अपने अपने हाथ उठाये खड़े थे । उनके पास ही चमड़े का एक थैला पड़ा हुआ था ।

अब जहाज किसी रेगिस्तानी इलाके पर उड़ रहा था ।

“थोड़ी देर में जहाज नीचे उतर जायेगा...” भूरी आँखों वाले ने कहा “आप लोग खामोशी के साथ अपने अपने हाथ ऊपर उठाये हुये उतर जाइयेगा ! हम बचन देते हैं कि किसी को किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुँचाई जायेगी...लेकिन यदि किसी ने हमारे मामिले में बाधा उत्पन्न की तो उसी के साथ सब के सब मारे जायेंगे और यह जहाज भी तबाह हो जायेगा । याद रखिये ! चमड़े के थैलेमें टाइम बम हैं और वह अपने समय से फट भी सकते हैं...इसलिये किसी भी प्रकार की आपत्ति उत्पन्न करने की चेष्टा मत कीजियेगा और जहाज को आसानी से उतर जाने दीजियेगा ।”

“आखिर आप दोनों को यह सूझी क्या है ?” हमीद चीखा ।

“ए मिस्टर !” भूरी आँखों वाले ने कहा “अपनी मौत को आवाज मत दीजिये ।”

“यह तुम से किसने कहा ” हमीद ने हँसी उड़ाने वाले भाव में कहा “मैं तो तुम्हें आवाज दे रहा था...क्या तुम्हारा नाम मौत है ?”

“हाँ...मेरा नाम मौत है—” उसने फुफकार भरी आवाज में कहा “अधिक बीर बनने की कोशिश न करो...बस चुप चाप बैठे रहो।”

“मैं तो तुम से हाथ मिलाने के लिये वेचैन हूँ.....” हमीद ने कहा।

“अपने स्थान से हिलने की कोशिश न करना...सावधान कर रहा हूँ वरना तुम्हारे खून से जहाज का फर्श गन्दा हो जायेगा।”

“अवे चूप—” हमीद ने चिढ़ाने वाले भाव में कहा।

“कैप्टन! इनके मुँह मत लगे—” पीछे से पापेन ने कहा “यह हवाई डाकू हैं—और तुम्हारी तनिक सी भी असावधानी अट्टारह आदमियों की जानें ले सकती है।”

“मगर इनसे यह तो पूछिये कि आखिर यह चाहते क्या हैं। रेगिस्तान में जहाज उतरवा कर इसकी पिडिंग बनायेगे...” हमीद ने कहा।

“तुम लोग क्या चाहते हो?” पापेन ने तेज आवाज में पूछा।

“जहाज को उतर जाने दो—फिर बताया जायेगा—” भूरी आंखों वाले ने कहा।

“पहले ही बता दो तो क्या हर्ज है...” पापेन ने कहा।

“तो सुनो...जहाज लैन्ड होने के बाद हम इस औरत को अपने साथ लेकर चले जायेगे—” उसने बायें हाथ से लेडी वाल्टर की ओर संकेत करके कहा।

हमीद और पापेन ने एक दूसरे की ओर देखा, फिर हमीद ने लेडी वाल्टर की ओर देखा जिसका चेहरा भय के कारण पीला पड़ गया था...और वह काँप रही थी।

“सुनो...” हमीद ने कहा “पायलोट तुम्हारे साथी के रिवाल्वर के लक्ष्य पर है...प्रकट है कि वह वही करेगा जो तुम्हारा साथी

आहेगा...फिर हम लोगों को इस प्रकार बैठाये रखने से क्या लाभ...
हमें कोई भी आवश्यकता हो सकती है।”

“बस आधा घन्टा और सत्र करो।”

“मैं सत्र नहीं कर सकता...” हमीद चींख कर बोला “मैं इस
औरत का गला घूँटने जा रहा हूँ...न रहेगा बाँस न बजेगी
बाबुरी”

और फिर सचमुच हमीद के हाथ लेडी वाल्टर की गर्दन की
और बढ़ गये और वह उसका गला घूँटने लगा।

लेडी वाल्टर चींख रही थी। तमाम लोगों की नजरें उधर ही
उठ गई थी और सब ही हमीद को मना कर रहे थे मगर हमीद का
बन्धन मजबूत ही होता चला जा रहा था।

भूरी आंख वाला हमीद को धमाकियां दे रहा था—सब लोग
बदहवास हो रहे थे, मगर हमीद ने लेडी वाल्टर को नहीं छोड़ा—यहां
तक कि वह उसकी भुजाओं पर झूल गई।

“अब इसकी गर्दन काटूंगा...” हमीद ने दांत पीस कर कहा...
और फिर उस के दोनों हाथों में दो चमचमाते हुये चाकू नजर आये।
और फिर जैसे बिजली चपक गई। किसी की समझ में नहीं आया
था कि क्या हुआ था...बस भूरी और नीली आंखों वाले दोनों के
मुख से चीखें निकली थीं और दोनों अपने अपने रिवाल्वर वाले हाथ
ढा कर बैठ गये थे जिनसे खून के फौवारे उबल पड़े थे।

उनके रिवाल्वर फर्श पर पड़े थे।

इतना अवसर कोफ़ी था सबसे पहले हमीद उछला था और फिर
जहाँज के स्टाफ वाले...और फिर देखते ही देखते उन दोनों को
विवश कर दिया गया।

मगर अब हमीद खुद चकरा गया था कि आखिर उन दोनों पर
किसने चाकू फेंके थे...वैसे यह बात और थी कि उसके दोनों चाकू

उसकी जेब में पहुंच गये थे ।

तमाम यात्री उसकी प्रशंसा कर रहे थे । पापेन कह रहा था ।

“मैंने प्रथम बार किसी हवाई जहाज को हरण होने से बचते हुये देखा है । जब तुम्हारा यह हाल है तो कर्नल विनोद....।”

“अगर वह रहे होते तो इस समय यह दोनों इस जहाज पर होने के बजाय रूम सागर में मछलियां पकड़ रहे होते....” हमीद ने कहा ।

फिर उसने जहाज के स्टाफ को संकेत किया उन्होंने चमड़े वाले बैला नीचे गिरा दिया और खिड़कियां भी खोल दीं ।

“गला घूँटने का बहुत बहुत शुक्रिया....” लेडी वाल्टर ने मुस्कुरा कर कहा “मगर क्यों बचा लिया...मरने दिया होता ।”

“किस पर...इन पर...?” हमीद ने पापेन की ओर संकेत किया ।

“फिर तुम ने बकवास आरम्भ कर दी....” लेडी वाल्टर ने कहा “एक मार्के की बात सुनोगे ?”

“क्या मिस्टर पापेन तुमसे इश्क करने लगे हैं ?”

“डफर !” वह बड़े प्यार से मुस्कुराई “यह बात नहीं है . मैंने सर वाल्टर को देखा था....।”

“कहां ?” हमीद ने पूछा ।

“इसी हवाई जहाज में...बस एक ही झलक देख पाई थी ।”

“क्या मैं वेहोश हो कर चीख हो जाऊँ....” हमीद ने जान बूझ कर उल्टी बात कहीं ।

“इसका क्या मतलब हुआ ?” वह उसे घूरने लगी ।

“मतलब यह हुआ कि....” हमीद ने कहा और पापेन की ओर संकेत कर के गुनगुनाया “यह पापेन ऐसी जली कि कोयला भई न राख—।”

“मेरे नाम से लाभ उठा रहे हो....” पापेन ने हँसते हुये कहा “इस समय तुम्हारा सितारा जगमगा रहा है....जो दिल चाहे कह

लो ।”

सब ही अच्छे मूड में थे । घोषणा कर दी गई थी कि जहाज ल्युपोल्ड विले में उतरने वाला है ।

हमीद को विश्वास था कि उन दोनों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जायेगी...मगर वह चकित रह गया जब कि ल्युपोल्ड विले एयर पोर्ट के अधिकारियों ने कोई नोटिस ही नहीं ली ! और पापेन को इससे अधिक आश्चर्य उन दोनों के बयान पर था । उन्होंने कहा था कि उन्हें चाकू के बजाय गोली लगी थी है ।

फिर यह लोग एयर पोर्ट से बाहर निकले और लेडी वाल्टर ने टैक्सी की...फिर साथ ही बड़े जोर से चौक कर हमीद से कहा ।

“वह देखो—सर वाल्टर भी नीला महल की ओर जा रहा है ।”

हमीद ने उसी ओर देखा जिधर लेडी वाल्टर ने संकेत किया था, मगर उसे सर वाल्टर कहीं नजर नहीं आया, इसलिये भल्ला कर बोला ।

“तुम्हें तो सपने में भी सर वाल्टर नजर आयेगा—कहां है सर वाल्टर ?”

“क्या हम नीला महल की ओर बढ़ चल रहे हैं ?” पापेन ने कहा ।

“हां—” लेडी वाल्टर ने कहा ।

फिर टैक्सी चल पड़ी ।

कानन उसी कमरे में थी जिसमें चारों ओर स्क्रीनें लगी हुई थी । वह बटनों वाली मेज के पास खड़ी थी । उसने उक्ताये हुये भाव में एक बटन दबाया और उसी बटन से सम्बन्धित स्क्रीन प्रज्वलित हो

उठी। स्क्रीन पर एक चेहरा उभरा—उसके होंठ हिलने लगे, फिर उसकी आवाज गूँजने लगी। वह कह रहा था।

“कैप्टन हमीद और लेडी वाल्टर ल्युपॉल्ड विले से रवाना हो चुके हैं। हमारे आदसी जहाज को हर लेने में असफल रहें... मगर वह लोग भी हमारे आदमियों को गिरफ्तार न करा सके।”

“उन दोनों के साथ और कौन है?” कानन ने पूछा।

“वान पापेन—” आवाज आई।

“उन्हें मार्ग में ही खत्म करने की कोशिश करो—” कानन ने कहा और उसी बटन को फिर से दबा कर मुड़ी और ताली बजाई।

दूसरे ही क्षण कमरे में कासिम दाखिल हुआ। उसने शुतूमुर्ग के पखों की टोपी पहन रखी थी और चेहरा दर्प वश लाल हो रहा था मगर कानन से नजरें मिलते ही उसका चेहरा कुछ ऐसा विकृत होगया कि गम्भीर से गम्भीर आदमी भी उसे देख कर हँस पड़ता।

“तुम हिन्दुस्तानी हो और मैं भी हिन्दुस्तानी हूँ...” कानन ने कहा।

“जज... जानता हूँ...” कासिम ने कहा।

“काश तू म वेक्कूफ न होते—।”

“ही ही... वेक्कूफ... अल्ला कसम मैं तो वालेकुल उल्लू का पट्टा... अरे हिप—” कासिमने एक दम से मुँह बन्द कर लिया, मगर दूसरे ही क्षण भड़क कर बोला “किया कहा... वेक्कूफ... तू म खूद—।”

उसने फिर मुँह बन्द कर लिया। शायद उसे इसका एहसास हो गया था कि वह गलत बात कहने जा रहा है।

मगर कानन नाराज नहीं हुई! उसने मुस्कुरा कर कहा।

“तू म ने नीला महल देखा?”

“हाँ देखा—।”

“मगर मैंने नहीं देखा—आज देखना चाहती हूँ—।”

“काहे झूठ बोलती हो—नीला महल ही के एक कमरे में तो खड़ी हो—।”

“ठीक कहते हो—मगर पूरा महल नहीं देखा।”

“तो देख लो ना—काउन रोकता है—।”

“अकेले कैसे देखूँ... मुझे डर लगता है।”

“वाह... ही ही ही...” कासिम हँस पड़ा “इत्ती बड़ी मलका होकर डरती हो।”

“तुम रात में आ जाना... तुम्हारे साथ चलूँगी...”

कासिम कुछ कहने ही वाला था कि किसी की आवाज सुनाई दी। कानन ने उसे संकेत किया और वह बाहर निकल गया।

दूसरे ही क्षण एक आदमी अन्दर दाखिल हुआ और सर झुका कर खड़ा हो गया।

“क्या बात है ?” कानन ने पूछा।

“कबीले के लोग फिर वगावत पर तैयार हैं—सरदार आपसे मिलना चाहता है।”

“उसे मेरे कमरे में भेज दो—।”

आने वाला उसी प्रकार सर झुकाये उल्टे पैरों बाहर निकल गया—।

फिर कानन राज दरबार जैसे एक कमरे में पहुँची। वहाँ काली शल का एक लम्बा तड़ंगा आदमी लाया गया जो नीचे से ऊपर तक सफेद कपड़े पहने हुये था। पहले तो धीरे धीरे उसके होंठ हिलते रहे, फिर उसकी आवाज तेज होती गई—आँखें लाल होती गईं और उसके मुँह से आग उड़ने लगा।

दो विदेशीय उस काले आदमी के दोनों ओर खड़े थे। उनमें से एक ने कानन को सम्बोधित किया।

“योर मेजेस्टी ! यह शिकायत कर रहा है कि जिस स्थान पर उनकी आबादी है, उस स्थान को साफ किया जा रहा है। पेड़ काटे जा रहे हैं और कान फाड़ने वाली मशीनें वहाँ काम कर रही हैं—

इन सब बातों के कारण आबादी के लोग भयभीत हैं—।”

“ऐसा क्यों हो रहा है ?” कानन ने पूछा ।

“आपकी आज्ञा से...।”

“मेरी आज्ञा से !” कानन बड़े जोर से चौकी, फिर तत्काल ही बोली “ओह—अच्छा—इससे कहो कि क्षति मूल्य मिलेगा...”

“यह बात हम लोग कह चुके हैं ।”

“फिर यह क्या चाहता है ?” कानन ने पूछा ।

“यह कहता है कि वहाँ जो कुछ भी हो रहा है वह बन्द किया जाये ।”

“इससे कह दो कि हम इस पर विचार करेंगे और दो दिन बाद उत्तर देंगे...” कानन ने कहा और उठ कर अपने शयन कक्ष में चली आई ।

यहाँ आये हुये उसे कई दिन हो चुके थे और अब उसकी समझ में यह बात आ रही थी कि जिस खेल को उसने केवल मजाक समझा था वह एक भयानक खेल साबित हुआ था । वह विचित्र लोगों के फँस गई थी । उसे संसार का हर सुख प्राप्त था । उसके मुँह से निकला हुआ हर शब्द कानून था...लेकिन फिर भी उसे इसका एहसास था कि वह किसी अनोखे हाथ का एक खिलौना बन कर रह गई है ।

यह इमारत जिसे नीला महल कहा जाता था बहुत बड़ी थी—मगर इमारत के न जाने कितने भाग ऐसे थे जहाँ उसे जाने से रोक दिया गया था—इसको सामने रखते हुये उसे पूरा विश्वास हो गया था कि उसकी आज्ञा में किसी दूसरे का राज्य है—शासनाधिकारी कोई और है और उस शासनाधिकारी को आज तक वह नहीं देख सकी थी । उसके सामने रखा हुआ टेलीविजन सेट ही वास्तव में उसका स्वामी था । उसे आदेश मिला था कि वह जब चाहे अपने उस

सेक्रेटरी से बातें कर सकती है...मगर वह नहीं जानती थी कि जिसे "उस सेक्रेटरी" कहा गया था वह है कौन—वह उसी सेक्रेटरी को अपना स्वामी समझती थी। कभी कभी उस टेलीविजन की स्क्रीन अपने आप प्रज्वलित हो जाती...उस पर एक धुँधला सा चेहरा उभरता और आवाजें आने लगती थीं।

दिलचस्प बात यह थी कि वह जो कुछ भी कहती, उसका उत्तर भी उसे मिल जाता था।

सारांश यह कि इतने ही दिनों में वह अपने इस जीवन से उक्ता गई थी। कभी उसे लन्दन की वह फैक्ट्री याद आ जाती जहाँ वह सात बजे सुबह से एक बजे दिन तक काम करती थी। कितना आनन्द और कितना सुख था परिश्रम के उस जीवन में। कभी उसे बम्बई याद आ जाता जहाँ वह एक सड़क से दूसरी सड़क पर और एक टैक्सी से दूसरी टैक्सी पर किसी रंगीन तितली के समान मुस्कुराती फिरती थी—।

मगर यहां—वह केवल एक कैदी के समान थी—एक ऐसे पक्षी के समान जिसके पंखे काट दिये गये हों—वह पूरी तरह विवश थी...और इसी विवशता में जब उसे अपने दोनों भाई याद आ जाते तो वह तकिये में मुँह छिपाकर अबोध बालिका के समान सिसकियाँ देने लगती थीं।

वह अपने विचारों में खोई ही हुई थी कि एक हल्की सी क्लिक हुई और सामने रखे टेलीविजन की स्क्रीन रौशन हो गई—धुँधला चेहरा उभरा और फिर आवाज आने लगी।

“कहो कानन—कैसी हो?”

“ठीक हूँ—मगर मुझे यहाँ कब तक रहना पड़ेगा...” कानन ने पूछा।

“क्यों...क्या यहां तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट है—कोई दुख

है ?”

“इससे बड़ा कष्ट और दुख दूसरा कौन हो सकता है कि मैं बन्दी हूँ।”

“आश्चर्य है कि एक महारानी अपने को बन्दी समझती है... हल्की सी हँसी के साथ आवाज आई।

“मैं रानी या महारानी नहीं... बल्कि तुम्हारे हाथ की कठपुतली हूँ—” कानन ने तीव्र स्वर में कहा “मेरी समझ में यह बात अच्छी तरह आ गई है कि तुम्हारी संस्था बहुत ही खतरनाक है और मेरी मकड़ी के जाल के समान इसमें फँस गई हूँ...।”

इतना कहते कहते उसकी आवाज भरा उठी। आंखों में आँसू आ गये, इसलिये वह कुछ क्षण के लिये रुक गई फिर कहने लगी।

“भगवान के लिये मुझे छोड़ दो। मैं बचन देती हूँ कि यहाँ के बारे में किसी से कभी भी एक शब्द तक नहीं कहूँगी... और तुम्हारे दिये हुये जो रुपये मुझसे खर्च हो गये हैं वह सब धीरे धीरे कर के अदा कर दूँगी...।”

“तुम बहुत नाराज मालूम हो रही हो—आखिर बात क्या है ?” आवाज आई।

“कोई बात नहीं—कोई बात नहीं...” कानन चीख पड़ी।

“शायद तुम होश में नहीं हो... ?” इस बार आवाज में कठोरता थी “कदाचित्त तुम यह भूल रही हो कि तुम्हारे साथ ही साथ तुम्हारे दोनों भाइयों का भी जीवन मेरे हाथ में है—मेरा हल्का सा संकेत भी उन्हें खत्म कर सकता है—फिर भी हम तुम्हारे साथ कोई बुरा नहीं कर रहे हैं—और अगर तुम यहाँ से जाना ही चाहती हो तो तुम्हें वापस मेज भी दिया जायेगा, मगर अभी नहीं। कुछ दिन और तुम्हें यहाँ रहना पड़ेगा और उसी प्रकार रहना पड़ेगा जिस प्रकार रहती

आई हो ।”

“कितने दिन तक ?” कानन ने पूछा ।

“अधिक से अधिक दस दिन...” आवाज आई “अब काम की बात सुनो... तुम्हें एक महत्वपूर्ण कार्य करना है । कैप्टन हमीद और लेडी वाल्टर ल्यु पोल्डविले से रवाना हो चुके हैं । मुझे आशा तो नहीं है कि वह यहां तक पहुंच सकेंगे—लेकिन अगर उनकी पार्टी पहुँच ही जाये तो तुम्हें पता लगाना होगा कि उनमें कर्नल विनोद कौन है ।”

“कर्नल विनोद ।” कानन ने चौंक कर पूछा ।

“हाँ...”

“मगर वह तो जखमी होकर अस्पताल में पड़ा हुआ है—” कानन ने कहा ।

“मुझे जो सूचना मिली थी वह भी यही थी । कल तक उसका चेहरा पट्टियों से ढका हुआ था । वह बड़ी कठिनाई से कमरे में चल फिर सकता था । बात कर ही नहीं सकता था... कैप्टन हमीद की जेब से खुद मैंने वह फागज निकाला है—जिस पर विनोद ने लिख लिख कर उसे आदेश दिये थे—यह इस बात का प्रमाण है कि कर्नल विनोद बोल नहीं सकता—मगर फिर मुझे सन्देह है कि जो विभिन्न लोग नीला महल की ओर बढ़ते चले आ रहे हैं उन्हीं में कोई एक कर्नल विनोद है... मैं तो यहाँ तक कह सकता हूँ कि कैप्टन हमीद भी कर्नल विनोद हो सकता है...”

“तुम्हारी बातों पर मुझे आश्चर्य भी हो रहा है और हँसी भी आ रही है...” कानन ने कहा ।

“क्यों ?” पूछा गया ।

“तुम सारी दुनिया को अपने काबू में करना चाहते हो... मगर एक आदमी का पता नहीं लगा सकते ।”

“थोर मेजेस्टी !” व्यंग भरी आवाज आई “मैं उसी आदमी के समक्ष अपने को विवश पा रहा हूँ—जिसके बारे में यह फैसला नहीं कर पाया हूँ कि वह मेरे मुकाबिले पर है भी या नहीं।”

“ठीक है...आने दो...” कानन ने कहा “वैसे मैंने आदेश दे दिये हैं कि उन्हें मार्ग में ही खत्म कर दिया जाये।”

“हमीद को तो हम जब चाहें खत्म कर सकते हैं—लेकिन विवश इसलिये हैं कि कहीं उसकी मौत के साथ ही साथ वह लिफाफा भी न नष्ट हो जाये—जब तक उससे लिफाफा नहीं प्राप्त किया जाता तब तक उसे कत्ल भी नहीं किया जा सकता...”

“तो फिर मैंने उसको कत्ल करने के लिये जो आदेश दे रखा है...उसे वापस ले लूँ...” कानन ने कहा :

“नहीं...इसकी आवश्यकता नहीं है...हमारे आदमी उसी समय उसे कत्ल करेंगे जब उससे लिफाफा प्राप्त कर लेंगे...समझ रही हो ना...”

इसके साथ ही पहले स्क्रीन पर से चेहरा गायब हुआ उसके बाद स्क्रीन भी सादी हो गई।

कानन ने अंगड़ाई ली। उसका दिमाग उलझ गया था। उसे अब वह हिन्दुस्तानी याद आ गया था जिसने लन्दन में दो बार उसे बहन जी कह कर सम्बोधित किया था...वह सोचने लगी कहीं वह तो कर्नल विनोद नहीं था...अगर वही था तो फिर उसे—उसको सारी बातें बता देनी चाहिये थी...

ऐसा नहीं था कि उसने कर्नल विनोद और कैप्टन हमीद का नाम न सुना रहा हो, मगर तब वह यह सोच भी नहीं सकती थी कि इन माधिलों से भी उन दोनों का सम्बन्ध होगा...पहले उसने कैप्टन हमीद की हत्या का आदेश दिया था...और अब यह बात उसके सामने आई थी कि हमीद के पास एक लिफाफा है और जब तक वह

लिफाफा प्राप्त न कर लिया जायेगा तब तक हमीद कल नहीं किया जायेगा... यह बात भी वह सुन चुकी थी कि हमीद की जेब से विनोद वाला कागज उड़ा लिया गया... तो फिर इसी तरह यह लिफाफा भी उड़ा दिया जायेगा और फिर हमीद कल कर दिया जायेगा ।

“ओह !” उसने एक दर्द भरी आह खींची और फिर भगवान से प्रार्थना करने लगी कि हमीद यहाँ तक पहुंच जाये और कर्नल विनोद भी उसके साथ हो ।

उसने सोचा कि थोड़ी देर सो ले... क्योंकि उसे कासिम को लेकर रात ही में पूरा महल देखना था । मगर कोशिश करने के बाद भी नींद न आ सकी । एक वेधैनी उसे बार बार करवटें लेने पर विवश कर रही थी—ऐसी वेधैनी जिसमें उलझन और जिज्ञासा दोनों ही थीं ।

वह अपने शयन कक्ष से निकल कर आपरेशन रूम में आई और एक बटन दबाया । एक स्क्रीन प्रज्वलित हुई जिस पर कासिम दिखाई दिया । वह मसहरी पर बैठा था । कभी मुँह चलाने लगता था और कभी जम्हाइयाँ लेने लगता था ।

फिर वह मीतरी कमरों से सम्बन्धित बटनों को बारी बारी दबाती चली गई । हर कमरे की तस्वीर स्क्रीनों पर आती रही... मगर बहुत सारे कमरे ऐसे दिखाई दिये जिनमें एक आदमी भी नहीं था... केवल मशीनें थीं जो चल रही थीं । एक कमरे में एक हिन्दुस्तानी नजर आया जिसके चेहरे पर प्रतिभा थी... एक दूसरे कमरे का दृश्य देख कर वह स्तब्ध रह गई । उस कमरे में मशीनें लगी थीं... तारों के जाल फैले हुये थे, मगर आश्चर्यजनक वस्तु खुद उसकी अपनी तस्वीर थी ।

फिर वह आपरेशन रूम से निकल कर कासिम के कमरे के पास आई और धीरे से दरवाजा थपथपाया ।

“काउन है...” कासिम ने बैठे ही बैठे हांक लगाई ।

कानन ने फिर दरवाजा खटखटाया ।

“काउन है ने...बोलता काहे नहीं...” कासिम ने कहा और उठ कर दरवाजा खोल दिया । कागन जल्दी से अन्दर दाखिल हुई और कासिम भाड़ सा मुँह खोलते उसे देखने लगा फिर कानन का हशारा पाकर दरवाजा बन्द किया और चिटखिनी लगा दी ।

कानन ने चारों ओर देखा...फर्श उल्टा...मसहरी के नीचे भाँका, फिर एक पतला सा तार प्लम् से अलग कर के मसहरी पर छेद गई और कासिम से कहा ।

“जानत हो मैंने क्या किया ?”

“मैं का जानूँ...” कासिम ने कहा ।

“मैंने कनेक्शन काटा है ।”

“कियूँ ?” कासिम ने कहा ।

“अगर न काटती तो हमारी बातें सुन ली जातीं ।”

“कासे सुन ली जातीं...भला यहाँ काउन है जो सुन लेता ।”

“तुम समझे नहीं कासिम...बात यह है कि हम लोग जो बातें करते वह कहीं टेप रेकार्डर पर टेप हो जातीं...और वह लोग टेप रेकार्डर का स्वीच आन करके सुन लेते...वह तार किसी टेप रेकार्डर से जुड़ा रहा होगा ।”

“अगे बाप गे...” कासिम ने भयभीत हो कर कहा, फिर बोला ।
“मगर वह लोग हैं काउन ?”

“वही...जिनकी कैद में हम लोग हैं...”

“किया कहा...हम लोग कैद हैं ?”

“हाँ...”

“अरे जियावो...तुम होगी कैद में...मैं तो खुद से आया हूँ...”
फिर कैद कासे हुई ?”

“तुम गलत समझ रहे हो कासिम...तुम खुद से नहीं आये हो... बल्कि फाँस कर यहाँ लाये गये हो...”

“फाँस कर लाये गये हो...” कासिम ने चिढ़ाने वाले भाव में कहा “भर गये मुझे फाँसने वाले । अरे मैं तो सोई बेगम से शादी करने आया हूँ ।”

“सोई बेगम ।” कानन ने आश्चर्य से कहा “यह सीई बेगम कौन हैं ?”

“ऐसा ही कुश नाम था...ठीक से याद नहीं पड़ रहा है...” कासिम ने सोचते हुये कहा “अरे वही...जो मेरे साथ आई थीं... तगड़ी और खबसूरत सी...”

बात समाप्त करते करते वह शर्मा गया था और उसका चेहरा बड़ा परिहासजनक हो गया था ।

“अच्छा वह...उसका नाम तो सोनी है...” कानन ने कहा ।

“हाँ हाँ...वही...” कासिम हर्षित होता हुआ बोला “किया आप उन्हें जानती हैं ?”

“हाँ...”

“तो फिर उनसे मिला दोजिये...अज्जा कसन...मैं उन्हीं के लिये यहाँ रुका हुआ हूँ ।”

“क्या वह लोग तुम को अपने साथ इसी वादे पर लाये थे कि वह सोनी की शादी तुम्हारे साथ करा देंगे ?” कानन ने पूछा ।

“और नहीं तो किया...” कासिम ने कहा “वालेकुल यही कहा था ।”

“तो फिर सुँह घो रखो...” कानन मुसकुराई “वह सोई बेगम अब तुमको मिलने वाली नहीं ।”

“वाह...यह कैसे हो सकता है...” कासिम ने घुँसा तान कर

कहा "मैं एक एक साले का पेट फाड़ डालूँगा..."।

"ऐसा सोचना भी नहीं कासिम... अपनी ताकत का रोब डालने की कोशिश करोगे तो यहीं कत्ल करके फेंक दिये जावोगे..."।

"काहे ?" कासिम ने आँखें निकालीं ।

"इसलिये कि वह लोग बहुत सारे हैं और बहुत ताकतवर भी हैं ।"

"होगे सान्ने ताखतवर... किया मैं उनसे डरता हूँ ...तुमने अभी मेरी ताखत देखी ही नहीं..." कासिम ने अकड़ कर कहा ।

"बुरा न मानना कासिम... लेकिन यह सच है कि तुम बहुत बड़े बेयकूफ हो..." कानन ने पूरी गम्भीरता के साथ कहा "इन लोगों को ताकत से नहीं बल्कि अकल से भागा जा सकता है... तुम नहीं जानते कासिम । यह लोग एक बहुत ही खतरनाक संस्था से सम्बन्ध रखते हैं और इनसे सारी दुनिया परेशान है..."।

"यह संस्था किया होता है ?" कासिम ने पूछा ।

"मैं नहीं जानती कि इसे उर्दू में क्या कहते हैं... वैसे पाठी भी कह सकते हो ।"

"हो गया घपला... हाथ गमीद भाई तुम न हुये... अरे हिप..."। कासिम ने जल्दी से अपने मुँह पर हाथ रख लिया । उसे खयाल आ गया था कि सोनी न सही... यह रानी ही सही... यह भी तों अच्छी खासी है... इसीन भी है । अब अगर हमीद आ गया तो इस पर हाथ साफ कर देगा और वह देखता ही रह जायेगा... हमीद का नाम लेकर उसने गलती की... बस इसीलिये वह मुँह पर हाथ रख कर खानोश हो गया था ।

"तुम कुछ कह रहे थे..." कानन ने पूछा ।

"नाहीं तो..." कासिम ने बात उझानी चाही ।

"नहीं क्या... तुमने किसी गमीद भाई का नाम लिया था... यह

भीदी...कैप्टन हमीद का दूसरा नाम तो नहीं है।”

“होगा...तुम से किया मतलब...” कासिम ने कहा, फिर झुल्ला कर बोला “किसी दिन काट कर फेंक दूँगा साली जवान को...तड़ से उस साले का नाम उगल पड़ती है।”

“तुम कुछ छिपाने की कोशिश कर रहे हो।”

“हाँ कर रहा हूँ तो फिर...” वह चिड़चिड़ा कर बोला “ठेगे पर गई ऐसी नौकरी साली। मैं नहीं पहुँगा तुम्हारा सेक्रेटरी... समझी।”

“यह क्यों भूल रहे हो कासिम कि तुम कैद हो...ऐसी कैद में जहाँ से जिन्दगी भर नहीं छूट सकते...”

“अरे मत भेजा चाटो...मैं काहे को कैद होने लगा...तुम होंगी कैद में...”

“देखो कासिम! मेरी बात समझने की कोशिश करो...” कावन ने उसे समझाते हुये कहा “तुम भी हिन्दुस्तानी हो और मैं भी हिन्दुस्तानी हूँ...और हम दोनों ही कैदी हैं।”

“तुम भी कैदी हो?”

“हाँ...”

“सुनो...किसी दूसरे को बेरूफ बनाना—अमे कहीं रानियाँ भी कैद में होती हैं—?”

फिर बड़ी कठिनाई के बाद कावन उसे विश्वास दिला सकी कि वह दोनों ही किसी अज्ञात शक्ति के कैदी हैं।

“अगे बाप गे...” कासिम ने कहा। अब उसके चेहरे पर हवाइयां छूटने लगी थीं।

“इसीलिये कहती हूँ कि हम दोनों को अकल से काम लेना है। अगर तुम मेरी मदद करो तो हो सकता है कि हम आजाद हो पायें...”

“अमे आजाद होना काउन सा मुश्किल काम है...चलो निकल
भागें...।”

“यहाँ से भागना जितना तुम आसान समझ रहे हो उतना ही
मुश्किल है।”

“काहे ?”

“वस इसी से समझ लो कि अगर आसान होता तो मैं अब तक
निकल गई होती।”

“वाह...किया कोई हमें देखता है और फिर तूम तो रानी महा-
रानी हो...तुम्हें काउन साला रोकेगा।”

“तुम जानते हो कि तुम जमीन से कितनी ऊँचाई पर हो ?”

“नाहीं...।”

“यह महल जमीन से पाँच सौ सत्तर फीट ऊँची एक पहाड़ी पर
है। नीचे उतरने के सिर्फ दो रास्ते हैं। एक आस रास्ता है जिससे
रानी से मिलने के लिये उसकी प्रजा बाने रियाया के खास खास ही
लोग आ सकते हैं। दूसरा ग्राहवेट रास्ता है जिसे कुछ ही लोग जानते
हैं। नीचे उतरने के लिये लिफ्ट से काम लिया जाता है।”

“अच्छा...तो वह साले लिफ्ट ही से मुझे ऊपर लाये थे ?”

“हां...”

“मगर वह तो कुश अजीब सी लिफ्ट थी...भूले की तरह।”

“हाँ...यहाँ वह लिफ्ट काम में नहीं लाई जा सकती जो तुमने
शहरों में देखी है।”

“काहे ?” कासिम अब गहरी दिलचस्पी लेने लगा था।

“यह पहाड़ी जिस पर यह नीला महल बना हुआ है...सपाट और
सीधी नहीं है। एक छोटी पहाड़ी से इस पहाड़ी या नीला महल तक
आने में एक जबरदस्त घाटी पड़ती है। उस घाटी को पार करने के
लिये भूले का इन्तजाम किया गया है। वह भूला मोटे मोटे तारों पर

फिसिलने वाली छोटी छोटी पहियों पर फिट किया गया है। नीला महल आने वाला उस छोटी पहाड़ी पर लगे हुये एक बटन को दबाता है जिससे यहाँ तक खबर पहुँचती है और फिर यहाँ एक बटन दबाया जाता है... और वह झूला उस गहरी घाटी को पार करता हुआ आने वाले को यहाँ तक पहुँचा देता है। पहली बार जब मुझे उस झूले से यहाँ लाया गया था तो मैं अपने नीचे हजारों फीट गहरी घाटी को देखकर कांप गई थी जब कि मैं भीसाहसी होने का दावा रखती हूँ।”

“तो किया हम लोग इन सालों की कैद में पड़े पड़े मर जायेंगे?” कासिम ने व्याकुल होकर पूछा।

“हम लोग निकल भी सकते हैं कासिम।”

“कासे निकल सकते हैं?”

“अपनी श्रक्त से काम ले कर...” कानन ने कहा “पहले यह बताओ कि तुम कर्नल विनोद और कैप्टन हमीद को जानते हो?”

“हाँ... कर्नल विनोद साहब को जानता हूँ मगर...”

“मगर क्या?”

“कर्नल साहब बहुत जखमी हो गये थे...” कासिम ने ठरडी सांस खींच कर कहा “और वह अपना इलाज कराने लन्दन गये हुये हैं।”

“क्या वह इतने ही जखमी हो गये थे कि यहाँ न आ सकें?”

“हाँ... अगर वह अच्छे होते तो बताते इन सालों को... वह बहुत बड़े जासूस हैं।”

“मगर इन लोगों का खयाल है कि कैप्टन हमीद के साथ वह भी यहाँ आ रहे हैं।”

“अच्छा...!” कासिम हर्षित होता हुआ बोला “अब देखूँगा सालों को... बड़े आये हमें कैद कर ने वाले...”

फिर अचानक ही उसका मूड बदल गया और उसने आँखें

निकाल कर कहा ।

“अमे ए...तुम मुझको बेकूफ तो नहीं बना रही हो ।”

“क्यों ।” कानन ने चकित होकर पूछा ।

“उस दिन तुमने यह नहीं कहा था कि कर्नल विनोद और कैप्टन हमीद को रास्ते ही में खतम कर दो...।”

“कर्नल विनोद नहीं कहा था...बल्कि लैडी वाल्टर कहा था ।”

“चलो यही सही... तो फिर अब ऐसी बातें कासे कर रही हो ?”

“तब मैं यह नहीं समझ सकी थी कि असल मामिला क्या है... और अब मामिला समझ में आ गया है... इसलिये ऐसा कह रही हूँ ...अब हमें उनकी जानें बचानी हैं और उन्हीं की मदद से इन लोगों की कैद से आजाद होना है...।”

“मगर यह होगा कासे ?” कासिम ने पूछा ।

“हमें अभी इन्हीं लोगों से मिल कर एहना होगा...और जब वह लोग यहां आ जायेंगे तो छिपे तौर से उनकी मदद करनी है । यहाँ रह कर हम उनको बहुत फायदा पहुँचा सकते हैं ।”

“ठीक है...” कासिम ने कहा । उसका सीना तन गया था । वह अपने को एक बड़ा जासूस समझने लगा था... फिर अचानक उसे सोनी का ख्याल आ गया और वह पूछ बैठा “मगर वह सोई बेगम कहाँ हैं ?”

“सोई नहीं—सोनी...” कानन ने संशोधन किया ।

“किया फरक पड़ता है...जरा उनसे मिलावो ना ।”

“मिल जायेगी...प्रबढ़ाते क्यों हो...” कानन ने कहा “यह तो बताओ कि कैप्टन हमीद कैसा आदमी है ?”

“कियूँ ?” कासिम ने फिर खतरे की गन्ध सूँधी ।

“उस टीम के साथ कैप्टन हमीद ही आ रहा है। कर्नल विनोद के बारे में तो सिर्फ एक खयाल है... क्योंकि कल तक वह लन्दन के अस्पताल ही में देखा गया था और उसकी हालत सफर करने की नहीं थी। हमीद के बारे में वस इसलिये पूछा था कि अन्दाजा लगा सकूँ कि वह कर्नल की जगह ले सकता है या नहीं—क्योंकि टीम के साथ कर्नल विनोद का होना नामुमकिन सी बात मालूम हो रही है।”

“साला हमीद भाई भी बहुत बड़ा जासूस है। जहाँ जाता है दो एक खून जरूर हो जाते हैं मगर...”

“मगर क्या ?”

“कर्नल साहब की बात ही और है... उनका जवाब नहीं है।”

“काश उन लोगों के साथ कर्नल साहब भी होते...” कानन ने ठण्डी साँस भर के कहा।

“जरूर होंगे... दुआ करो कि वह भी साथ हों... मैं भी दुआ करूँगा...”

“अगर कर्नल साहब हुये तो यह लोग उन्हें मार डालने की पूरी पूरी कोशिश करेंगे।”

“मार चुके... वह साले उनको किया मारेंगे... खुद मारे जायेंगे।”

“भगवान करे ऐसा ही हो...!”

“बालेकुल ऐसा ही होगा—” कासिम ने कहा।

“अच्छा... आओ अब चलें।”

“कहाँ।” कासिम चौंक पड़ा।

“यहाँ एक और हिन्दुस्तानी कैद है... उसके पास...”

“तुम को कासे पता चला।”

“अभी अभी अभी स्क्रीन पर उसकी शक्ल नजर आई थी...”

यहीं किसी कमरे में है।”

“अच्छा...चलो...” कासिम ने कहा।

फिर दोनों कमरे से बाहर निकले। कानन आगे थी और कासिम पीछे था। वह जटिल मार्गों से होती हुई उसी ओर जा रही थी जिस ओर उसके अनुमान के अनुसार उस हिन्दुस्तानी का कमरा हो सकता था।

फिर जैसे ही वह एक कमरे के निकट पहुँची, अचानक बड़े जोर शोर से घन्टियाँ बजने लगीं। उनकी लगातार आवाजों से एक विचित्र भयावह वातावरण उत्पन्न हो गया था। इन घन्टियों के बजने का केवल एक ही मतलब था...“खतरा...कोई बहुत बड़ा खतरा।”

—०—

“खतरा...बहुत बड़ा खतरा...” लेडी वाल्टर बड़बड़ाई।

टेक्सो रुक गई। हमीद ने पापेन की ओर देखा, फिर बोला।

“बस अब कुछ ही देर में वह यहाँ पहुँच आयेंगे और पहले तुम्हारी बोटियाँ काटेंगे उस के बाद लेडी वाल्टर को निगल जायेंगे।”

“देखो...क्या होता है...” पापेन ने कहा और टेक्सो से उतर गया और उन आवाजों को सुनने लगा जिसके आधार पर लेडी वाल्टर ने खतरे का एहसास दिलाया था।

अभी सन्ध्या होने में कई घंटे शेष थे। प्रोग्राम यह था कि रात जंगल ही में व्यतीत की जायेगी। लेडी वाल्टर ने कहा था कि जंगल में दाखिल होने के बाद कुछ दूर तक पैदल चलना पड़ेगा। फिर किसी पेड़ पर मंचान बना कर उसी पर रात व्यतीत की जायेगी। दूसरे दिन सवेरे जीप आयेगी जिससे वह जङ्गल पार कर सकेंगे...

अगर अभी जङ्गल का क्रम आरम्भ नहीं हुआ था कि आवाजें सुनाई देने लगी थीं... वस ऐसा ही लग रहा था जैसे एक साथ सैकड़ों रेल गाड़ियाँ चल पड़ी हों... अपनी पूरी स्पीड के साथ... पूरी धरती... पूरा वातावरण उन आवाजों से काँप रहा था।

पापेन पत्थर के बुत के समान खड़ा था। टैक्सी जा चुकी थी।

अचानक दूर धूल उड़ती हुई दिखाई दी और सब लोग उधर ही देखने लगे। लगभग पाँच सात मिनिट बाद एक कार आकर उनके पास रुकी और उसमें से तीन नीग्रों निकले! तीनों ने झुक कर लेडी वाल्टर को सलाम किया। लेडी वाल्टर ने एक को सम्बोधित कर के कहा।

“कहाँ रह गये थे तूम?”

“कार की एक पहिया खराब होगई थी। उसे बदलने में देर लग गई?”

“वह लोग कौन हैं?” हमीद ने लेडी वाल्टर से पूछा।

“मेरे सहायक... मेरे पथ प्रदर्शक...” लेडी वाल्टर ने कहा “एयर पोर्ट ही पर मैंने इनको अपने पीछे आने के लिये कहा था।”

इतने में फिर धूल उड़ती हुई दिखाई दी—और फिर उन्हें एक जीप दिखाई दी जो उन से काफी दूरी पर आकर रुक गई। उस पर से चार आदमी उतरे और लेडी वाल्टर ने आँखों पर दूरबीन लगा ली... फिर चीख कर बोली।

“अरे! यह तो सर वाल्टर है... और इसके साथ जो आदमी हैं उन में से दो तो वही हैं जो लन्दन में मेरे पीछे लगे थे। तीसरे को मैं नहीं पहचान रही हूँ...”

“अरे छोड़ो... यह बताओ कियह शोर कैसा है?” हमीद ने पूछा।

“यह शोर बारह सिगों का है। इन का जबरदस्त झुन्ड इन जगलों

से गुजर रहा है। इस प्रकार के भुन्ड जब गुजरते हैं तो उनकी संख्या कम से कम दस हजार होती है। वह अपनी सींगें झुकाकर दौड़ते हैं।

अभी यह भुन्ड हम से कितनी दूर होगा ?”

“लगभग पचास मील !”

“इन से बचने का क्या उपाय है ?” हमीद ने पूछा।

“बस यही कि हम जंगल में दाखिल हो जायें और पेड़ों पर मचान बना कर उस पर बैठ जायें...” लोडी वाल्टर ने कहा।

“तो फिर बैठो गड़ी पर...” हमीद ने कहा और लपक कर स्टैशिंग पर बैठा। दूसरे लोग भी बैठ गये। हमीद ने कार स्टार्ट कर दी।

सर वाल्टर की जीप भी चल पड़ी थी। वह भी इन्हीं की ओर आ रहा था।

लगभग बीस मिनिट बाद कार जंगल में पहुँच कर रुक गई और जल्दी जल्दी पेड़ों पर दो मचान बनाये गये और यह लोग कार को नीचे ही छोड़ कर मचानों में बैठ गये। एक पर लोडी वाल्टर... हमीद और उन तीनों में से एक था। दूसरे पर पापेन और दो नीग्रों थे।

शोर बढ़ता जा रहा था... और फिर बाहर सिंगों का भुन्ड नजर आने लगा उन रंग कातें थे सींगें नोकीली थीं और आँखें चमक रही थीं। वह दौड़ते हुये उन्हीं पेड़ों के पास से गुजरे जिन पर इन्होंने मचान बना रखी था। पूरा जंगल काँप रहा था। लोडी वाल्टर भण्ण काण्ण हमीद से लिपट गई थी... फिर हमीद ने देखा कि उनकी दौड़ के लक्ष्य पर आने के कारण कार उलट गई है... फिर पापेन वाले मचान पर से एक नीग्रों नीचे गिरा और बाहर सिंगों के खुरों से हल प्रहार कुचल गया कि पता ही नहीं चला कि गोश्त और हड्डियाँ कहीं गईं... फिर उसी मचान का दूसरा भी नीचे गिरा और उसका भी यही परिणाम हुआ।

“ओह...अब क्या होगा...” हमीद के साथ बैठे हुये नीग्रो ने कहा “वही दोनों तो तो मार्ग जानते थे ?”

“किसी ने कुछ नहीं कहा ।

फिर बारह सिंगों का तूफान गुजर गया । इतनी देर में सन्ध्या हो गई थी । पापेन अपने मंचान से उतर कर हमीद के मंचान पर आया और लेडी वाल्टर से बोला ।

“मुझे तुम्हारे दोनों साथियों के मरने पर दुःख है ।”

“और मुझे इसका दुःख है कि अब हम आगे कैसे बढ़ेंगे । वही दोनों रास्ता जानते थे...” हमीद ने कहा ।

“सर वाल्टर का भी कुछ पता है ?” लेडी वाल्टर ने पूछा ।

“वह हमसे पचास गज की दूरी पर है...मैंने उसे और उसके साथियों को एक पेड़ पर चढ़ते देखा था पापेन ने कहा, फिर हमीद से बोला “मेरा विचार है कि यात्रा सथगित कर दी जाये—इधर से आगे बढ़ना असम्भव सा मालूम हो रहा है ।”

“और मैं सोच रहा हूँ कि इसी मंचान पर सर के बल खड़ा होकर लेडी वाल्टर हिन्दा बाद का नारा लगाना आरम्भ कर दूँ...” हमीद ने कहा ।

“मैं देख रहा हूँ कि तुम बराबर लेडी वाल्टर को बोर कर रहे हो ?” पापेन ने कहा ।

“इतनी हमदर्दी है तो इन्हें अपने मंचान पर ले जाओ...” हमीद ने कहा ।

ठीक है...मैं इनके लिये दूसरा पंचान बनता हूँ...” पापेन ने कहा ।

फिर पापेन ने उस नीग्रो की सहायता से तीसरा मंचान बनाया और उस तीसरे मंचान पर नीग्रो और लेडी वाल्टर बैठे । पापेन अपने मंचान पर और हमीद अपने-अपने मंचान पर रह गये । हमीद ने

जेब से पाउच निकाल कर पाइप भरा और लाइटर निकाल कर उसे सुलगाया और फिर लाइटर मचान ही पर रख कर लेट गया और हलके हलके कश लेने लगा ।

अचानक उस के कानों में किसी प्रकार की सनसनाहट की आवाज पड़ी । वह चौंक पड़ा, फिर उठने ही जा रहा था कि उसे यह एहसास हुआ कि लाइटर ही में सनसनाहट हो रही है । उसने उसे उठा लिया और फिर उसे विनोद की कही हुई यह बात भी याद आ गई कि यह लाइटर गैस रायफल भी है और ट्रान्समोटर भी । उसने जल्दी से उसे कान से लगाया तो चौंक पड़ा । विनोद की आवाज आ रही थी । वह कह रहा था ।

“हलो...हमीद...हमीद...हलो—।”

हमीद के सारे शरीर में सनसनी फैल गई । वह सोचने लगा कि यह आदमी जखमी है...लन्दन के अस्पताल में पड़ा हुआ है...और यहां भी मौजूद है...लेकिन अगर यहां है तो किस रूप में । उधर आवाज आ रही थी ।

“हैलो...हमीद...लाइटर का खटका हटाओ । छोटी सी जाली दिखाई देगी । उसीसे मुँह लगा कर बोलो...मुझे तुम्हारी आवाज सुनाई देगी ।”

हमीद ने वैसा ही किया और जाली से मुँह लगा कर बोला ।

हवाई डिगा...यह मेरा अफ्रीकी नाम है...आप कहां है और क्या कर रहे हैं ?”

मैं उसी अस्पताल में हूँ...पलंग पर लेटा लेटा तुम्हारे बारे में सोच सोच कर परेशान हो रहा हूँ...भगर तुम चिन्ता न करना मेरा एक आदमी तुम्हें बराबर आदेश देता रहेगा...खटका बन्द कर दो...ओवर ऐन्ड आल ।”

हमीद ने खटका बन्द कर दिया और पाइप बुझा कर आंखें बन्द

कर लीं... फिर न जाने कब सो गयी।

फिर जब आँख खुली तो फायरों की आवाज से जगल गूँज रहा था। वह जल्दी से उठ बैठा और टार्च जाला कर उसका प्रकाश दोनों मचानों पर डाला। दोनों मचान खाली थे। नीचे देखा तो पेड़ों की श्रृङ्खला में पापेन रेंगता हुआ नजर आया।

“टार्च बुझा दो...” पापेन ने चीख कर कहा “सर वाल्टर तथा उसके साथियों ने हमला कर दिया है।”

हमीद को अब कहाँ ताव थी। उसने जल्दी से रिवाल्वर लोड किया और मचान से नीचे आकर फायर किया। दूसरी ओर से भी गोलियाँ चल रही थीं।

“आगे न बढ़ना...” पापेन ने कहा।

“मैं आपके समान फायर नहीं हूँ—” हमीद ने कहा और उसी ओर रेंगने लगा जिधर से फायर किये जा रहे थे...

वह आगे बढ़ता चला जा रहा था कि अचानक रोशनी में नहा गया। तीन रायफलों की नालें उसकी ओर उठी हुई थीं... सर वाल्टर उन तीनों से आगे था। उसने अट्टहास लगाते हुये कहा।

“आखिर तुम फँस ही गये ना कैप्टन...”

“किसी ने उड़ाई होगी सर वाल्टर...” हमीद ने कहा “तुम्हारी बीबी लेडी वाल्टर से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है... और न मैं उससे...”

“सड़ने की कोशिश मत करो... तुम नीला महल से टकराने चले थे...”

“नहीं... मैं उसे पीला महल बनाने चला था...”

“तुमको और पापेन को तो मैं चटनी बनाकर चाट जाऊँगा।”

“वह चटनी बचा न सकोगे दोस्त...” हमीद ने निर्भयता के साथ कहा।

“कागजात कहाँ हैं ?”

“कैसे कागजात ।” हमीद ने पूछा ।

“जो तुम चुरा कर ले जा रहे हो और नीला महल में अपने देश के एक महत्वपूर्ण आदमी तक पहुँचाओगे ।”

“मुझे ऐसे किसी कागजात का पता नहीं—”

“लेडी वाल्टर तुम्हारे साथ क्यों जा रही है ।”

“उसने मुझसे शादी कर ली है... नीला महल में हनीमून बनाने का प्रोग्राम है...”

“इसके साथ बाँध दो...” सर वाल्टर ने अपने एक साथी से कहा ।

वह आदमी जैसे ही हमीद के निकट आया । हमीद ने उसे उछल कर टक्कर मारी । रायफलों की गोलियाँ चरलवाईं और हमीद के सर पर से गुजर गईं ।

दूसरी ओर से भी गोलियाँ चली । शायद पापेन भी रेंगता हुआ निकट आ गया था ।

टाच बुझा दी गई थी और हमीद जमीन पर लेट गया था । कई गोलियाँ फिर उसके सर पर से गुजर गईं और फिर उसने भागते हुये कदमों की आवाजें सुनी जो क्रमशः दूर होती जा रही थीं । पापेन अब भी फायर करता जा रहा था ।

“अरे ! क्या मुझे ही मार डालने का इरादा है...” हमीद ने लोटे ही लोटे चील कर कहा “वह सब तो भाग गये...”

“कौन... कैप्टन हमीद...” पापेन की आवाज उसे सुनाई दी और उसने उठ कर टाच जलाई ।

पापेन उससे केवल पाँच छः गज की दूरी पर था ।

“मैंने तुम्हें मना किया था कि आगे न बढ़ना—” पापेन ने कल्ला कर कहा ।

“क्या इसे समाप्त कर दिया जाये ?” एक विदेशीय ने पूछा ।

“नहीं....” रिवाल्वर की नाल हमीद के सीने पर लगाने वाले ने कहा “इसे बंधन में रख कर बहुत सारे काम निकालने हैं । इसे बेहोश करके पहुँचा दिया जाये ।”

हमीद को बेहोश कर दिया गया, फिर उसे पता नहीं कि कब उसकी बेहोशी दूर हुई थी और कब वह प्राकृतिक नींद सो गया था । लेकिन नींद की अवस्था में भी उसके मानस पर हाथी सवार रहा था और वह यही स्वप्न देखता रहा था कि सफेद हाथी बढ़ बढ़ कर उस पर हमले कर रहा है ।

फिर अचानक उसकी आँख खुल गई !

सामने सचमुच हाथी खड़ा था । उसने हमीद की आँखों में देखा और मुँह पर हाथ रख कर हँसने लगा...फिर हाथ हटा कर बोला ।

“अब फँसे हो...देखूँगा कि कैसे निकलते हो !”

हमीद ने कुछ नहीं कहा और इधर उधर देखने लगा । वह एक आरामदह कमरे में मसहरी पर पड़ा हुआ था । सामने मेज पर नीला महल का प्रति रूप रखा हुआ था और वह हाथी अर्थात् कासिम उसे देख देख कर हँस रहा था । वह जल्दी से उठ कर बैठ गया और अपने कपड़ों को देखने लगा । इस समय उसके शरीर पर अपने ही कपड़े थे हालांकि धँहउतार लिये गये थे । उसने जेबों में हाथ डाला । पाउच...पाइप...लाइटर और रिवाल्वर सभी मौजूद थे । उसने जल्दी से रिवाल्वर खोला । चेम्बर खाली थे । एक ठण्डी सांस खींची, फिर कासिम की ओर देख कर बोला ।

“क्यों बे अहमक—तू यहां कैसे ?”

“अबे ए...जवान सँभाल के...” कासिम ने गुरा कर कहा
“जानते नहीं...मैं काउन हूँ ?”

“म्युनिसिपैल्टी का गवर्नर...” हमीद ने कहा ।

“तूम खूद होगे गवन्नर...” कासिम ने बुरा मान कर कहा, कि
फिर दांत निकाल कर बोला “मैं यहां सेक्रेटरी हूँ...और वह तुम्हें
बहुत चाहती हैं ।”

“कौन ?”

“अमे वही...अल्ला कसम बहुत खबसूरत हैं और तुम्हें
इन्तजार कर रही हैं ।”

“मेरा इन्तजार ?” हमीद ने विस्मय के साथ पूछा ।

“हां...अभी तूम को बिजली की आरी से चीरा जायेगा, कि
तुम्हारी बोटियां होंगी और उसके बाद ही ही ही...” वह इस प्रकार
बात अधूरी छोड़ कर हँसने लगा जैसे उसने हमीद को उसकी शर्त
की खबर सुनाई हो ।

“तुम्हें एक बात मालूम है...?” हमीद ने चिढ़ कर कहा ।

“किया ?”

“तुम्हारे बाप भी यहाँ मौजूद हैं...”

“अमे...उन्हीं को तो वह साले तलाश कर रहे हैं...अभी तुम्हें
देर पहले कह रहे थे कि...” अचानक उसकी मानसिक धारा बदल
गई और उसने चौंक कर कहा...“बाप...अमे खुद तुम्हारे बाप...”

“चलो मेरे ही बाप सही...हां तुम कर्नल विनोद के बारे में क्या
कह रहे थे ।” हमीद ने पूछा ।

“साले कह रहे थे कि कर्नल विनोद जब आयेगा तो उसे पकड़
कर बिजली की आरी से चीर दिया जायेगा...और उनको भी...वो
किसी तरह दसखत ही नहीं कर रहे हैं । मैंने इत्ता समझाया कि
कर दो भाई मगर वह तैयार नहीं हुये ।”

“कौन हैं वह साहब ।” हमीद ने उत्सुक हो कर पूछा ।

फिर जब कासिम ने उन साहब का नाम लिया तो वह चौंक पड़ा । यही नाम डी० आई० जी० साहब ने भी लिया था । फिर उसे सन्तोष भी हो गया—यह सोच कर कि उसे जहाँ पहुँचना चाहिये था वह वहीं पहुँच गया । उसने पापेन को भी गिरफ्तार होते देखा था, मगर फिर यह नहीं मालूम हो सका था कि उसका क्या परिणाम हुआ था । इसलिये उसी के बारे में जानने के लिये उसने कासिम से पूछा ।

“मेरे अलावा और कोई भी पकड़ा गया है ।”

“दो हव्शी गिरफ्तार हैं—” कासिम ने कहा ।

हमीद को यह सोच कर हर्ष हुआ कि पापेन बच गया है—अचानक सामने रखे हुये नीला महल के प्रति रूप से आवाज आई !

“शुभागमन कैप्टन हमीद—नीला महल तुम्हें खुश आमदीद कहता है ।”

“खुश आमदीद कहने का यह अनोखा तरीका है—मुझे अभी तक नाश्ता नहीं मिला ।”

“नाराज न हो—अपने इस मोटे दोस्त के साथ जाओ—यही तुम्हें नाश्ता करायेगा ।”

“शुक्रिया—” हमीद ने रूखे स्वर में कहा ।

“तुम जवान हो—बहादुर हो—अकलमन्द हो—हम तुम्हें कल करना नहीं चाहते । अगर तुम ने हमारा कहना मान लिया तो जिन्दगी का हर अराम और धैन तुम्हारे कदमों में होगा ।”

“पहले नाश्ता फिर बातें—” हमीद ने कहा और कासिम के साथ बाहर आया ।

“तुम यहां कितने दिनों से हो कासिम ?”

“बहुत दिनों से...बस मुजा ही मुजा है...बस समझ लो कि ऐश कर रहा हूँ और ऐश ही खा पहन रहा हूँ—” कासिम ने कहा।

“क्या हर कमरे में ऐसे ही छोटे छोटे नीला महल रखे हुये हैं?”

“हाँ...और हमीद भाई! यहाँ ऐसी ऐसी यला यलियां हैं कि देख कर दिल खुश हो जाता है...मगर यार...जो बात भी करो वह साला सुन लेता है!”

“कौन सुन लेता है?” हमीद ने पूछा।

“नीला महल...।”

कासिम से बातें करता हुआ वह एक दूसरे कमरे में आया जहाँ लड़कियों ने उसे नाश्ता कराया। नाश्ता करने के बाद उसने पाइप सुलगाया और फिर नीला महल के प्रति रूप को देखने लगा। उसके बाद कुछ कहने ही जा रहा था कि कासिम ने कहा।

“उन से मिलोगे?”

“किन से?”

“अरे वही...जो मलका आलिया यानी महारानी हैं।”

“चलो...” हमीद ने कहा और उठ कर कासिम के साथ कमरे से निकल आया। उसने इन दोनों कमरों का रास्ता याद कर लिया था।

फिर कासिम उसे उस बड़े कमरे में लाया जिसे आपरेशन रूम कहा जाता था। जहाँ स्त्रीयें थी। बटनों वाली मेज थी। यहाँ एक औरत मौजूद थी उसे देखते ही हमीद चौंक पड़ा और बोला।

“क्यों लेडी वाल्टर...।”

“मैं लेडी वाल्टर नहीं हूँ कैप्टन...” औरत ने उसकी बात काट कर कहा “मेरा नाम कानन है...नीला महल की मैं महारानी हूँ... चूँकि तुम भी हिन्दुस्तानी हो इस लिये मुझे तुम से हमदर्दी है।”

हमीद बड़े गौर से उसे देखने लगा । लेडी वाल्टर और इस कानन में तनिक भी अन्तर नहीं था ।

“कर्नल विनोद कहा हैं ?” कानन ने कठोर स्वर में पूछा ।

“लन्दन में...हास्पिटल में...”

“नहीं...यह गलत है...” कानन ने गरज कर कहा “वह लन्दन में दो बार मुझ से मिला था । वह कभी जखमी नहीं था । वह यहां भी आ पहुंचा है...मगर हम उसे पहचान नहीं पा रहे हैं ।”

“तो मैं क्या करूँ...” हमीद ने कहा ।

अचानक कानन आगे बढ़ी, उसने हमीद को एक पुर्जा थमाया, फिर अपने स्थान पर पहुँच कर उसी गर्जना के साथ बोली ।

“लेकिन कैप्टन...हम ने उसे सामने लाने का उपाय भी सोच लिया है...और उपाय यह कि हम तुम्हें खुले स्थान में कल्ल करेगें...प्रकट है कि विनोद तुम्हें बचाने आयेगा ।”

हमीद कानों से तो उसकी बातें सुन रहा था मगर नज़रें उस पुर्जे पर थीं । कानन ने लिखा था ।

“मैं बहुत विवश हूँ...अनभिज्ञता में इन की जाल में फँस गई हूँ । यहां हर कमरे में गुप्त टेप रेकार्डर लगे हुये हैं—तुम को जिस कमरे में रहना हो...वहां मसहरी के नीचे टेप रेकार्डर का तार स्वीच से अलग कर देना...फिर मैं तुम से बातें कर सकूंगी मेरी किसी बात का बुरा न मानना ।”

हमीद ने जैसे ही कागज पर से नज़रें हटाई...कानन ने झपट कर उससे कागज छीन लिया और उसे तोड़ मरोड़ कर मुँह में रख लिया और इस प्रकार मुँह चलाने लगी जैसे च्युंगम चवा रही हो ।

“तुम कर्नल विनोद को किसी तरह न पा सकोगी...” हमीद ने ऊँची आवाज में कहा, फिर कासिम से बोला “मैं अब अपने कमरे में जाना चाहता हूँ ।”

“चालों...” कासिम ने कहा और हमीद को लिये हुये उसी कमरे में आगया जिस में पहले था । और फिर दोनों बातें करने लगे । हमीद जानता था कि वह जो बातें कर रहे हैं वह टेप होती जा रही हैं... इसलिये वह कोई ऐसी वैसी बात नहीं कर रहा था । वैसे कासिम उसे बोलने भी नहीं दे रहा था । अपनी ही छेड़े हुये था ।

“हाँ...तो वह सोई वेगम कहाँ गईं ?” हमीद पूछा ।

“पता नाही कहाँ गायब होगई...साला दिल धबड़ा रहा है ।”

“तो कोई दूसरी सोई वेगम तलाश कर लो—” हमीद ने कहा ।

“मिल ही जायेगी...मगर तूम साले कर्नल का पता काहे नहीं बता देते ।”

“अवे लमदग ! मैं जानता ही नहीं तो बताऊँ क्या...!”

“अमे साले काहे झूठ बोल रहे हो । बता दो नाहीं तो आरी से चीर दिये जाओगे ।”

“तुम तो बेकार नाराज हो रहे हो कासिम भाई ! कर्नल तुम्हारे सामने ही जखमी हुये थे और तुम्हारे सामने ही मैं उन्हें लन्दन ले गया था—और उन्हें अस्पताल ही में छोड़ कर मैं यहाँ के लिये रवाना हुआ था—अब तुम्हीं बताओ कि मैं क्या बता सकता हूँ कि कर्नल कहाँ हैं ।”

इसी प्रकार की बातों में लंच का टाइम हो गया । दोनों ने खाना खाया, कासिम चला गया और हमीद अकेला रह गया । उसने आंक कर मसहरी के नीचे देखा । सच मुच तार था । उसने तार को स्वीच से अलग कर दिया और कानन की प्रयीक्षा करने लगा । थोड़ी ही देर बाद कानन आगई । उसने पहले मसहरी के नीचे देखा । तार को स्वीच से अलग देख कर सन्तोष की सांस ली, फिर खुद ही अन्दर से दरवाजे की चिटखिनी लगाई और हमीद से बोली ।

“तूम यहाँ तक कैसे पहुंचे ?”

“यह मैं भी नहीं जानता—” हमीद ने कहा ।

“मैं जानती हूँ—” कानन ने कहा और अपनी कहानी आदि सुनाने लगी । कहानी पूरी करने के बाद बोली “अब मुझे यह बताया जा रहा है कि कर्नल विनोद यहीं है—मगर मैं यह सोच रही कि अगर वह यही हैं तो नजर क्यों नहीं आ रहे हैं ।”

“वह इसी प्रकार के आदमी हैं—” हमीद ने कहा “हाँ वह दुस्तानी—।”

“हाँ—मुझे मालूम हुआ है कि यहाँ कोई बहुत ही महत्वपूर्ण दुस्तानी कैद है । यह लोग बराबर उसे तर्ग कर रहे हैं । किसी राज पर उससे हस्तांतर कराना चाहते हैं मगर वह बराबर इन्कार करता है । मैंने उससे मिलना चाहा था—मगर वहाँ कुछ इस प्रकार का रुध है कि वहाँ जो भी पहुँचता है—घण्टियाँ अपने आप बजने लगती हैं । मेरे पहुँचने पर भी घण्टियाँ बजने लगी थीं और मैं डर कर भाग आई थी ।”

“यह नीला महल—।”

“बहुत ऊँचाई पर बना है—” कानन ने बात काट कर कहा “बार से लटके हुये डोल द्वारा आबादी तक आया जाता है !”

“यह बताओ कि हम यहां से निकल सकते हैं ?” हमीद ने पूछा ।

“हाँ—एक मार्ग है—लेकिन उस से नीचे तक पहुँचने में जान खतरे हैं ।”

“तुम वह मार्ग जानती हो ?”

“जानती हूँ—मगर जा नहीं सकती ?”

“अच्छा सुनो—आज रात में किसी भी समय मैं तुम्हारे पास जाऊँगी और तुम्हें मेरे साथ चलना होगा ।”

कानन अपने कमरे में लौट आई और बिस्तर पर लेट कर करवटें बदलने लगी । उसे अपना अतीत याद आ रहा था कि अचानक नीला

महल के प्रति रूप से आवाज आई ।

“थोर मेजेस्टी ! आप को कुछ लोगों से मिलना है ।”

“वह लोग कौन हैं ?” कानन ने पूछा ।

“एक आप का प्रियतम है और दूसरी आप की प्रतिद्वन्दी ।”

“मैं समझी नहीं ?”

“चौधरी और लीला मारेस—क्या मैं गलत कह रहा हूँ—क्या चौधरी से आप ने प्रेम नहीं किया था ?”

कानन के पूरे शरीर में आनन्द दायिनी सनसनी दौड़ गई । आज तक जिस चौधरी का वह सपना देख रही थी—जिसे अपना बनाने की योजना बना रही थी—वहीं चौधरी आज कैदियों के समान उसके सम्मुख प्रस्तुत किया जाने वाला था...और यह लीला मारेस कौन है...क्या चौधरी की प्रेमिका है ?

प्रतिद्वन्दता की अनुभूति ने उसके शरीर में विजलियां भर दी । वह झपट कर उठी । एक क्षण के लिये वह यह भी भूल गई कि थोड़ी देर पहले वह इस जीवन से भागने का मनसूबा बना रही थी । उसने गम्भीर आवाज में कहा ।

“चौधरी क्यों कैद किया गया ?”

“चौधरी ऐन्ड सन्स एक लिमिटेड कम्पनी है आप जिसे चौधरी कहती है...उसका नाम कागजात में जूनियर चौधरी है और उस के बाप को सीनियर चौधरी कहा जाता है ? यह लिमिटेड कम्पनी हिन्दुस्तान की व्यवसायिक एजेन्ट है । जो हिन्दुस्तानी हमारी कैद में है वह हिन्दुस्तान का महत्व पूर्ण आदमी है । उसने एक देशसेप्टमी छतरी का प्लान्ट लगाने के सम्बन्ध में संधि की थी । हम चाहते हैं कि वह समझौता निर्वर्तित कर दिया जाये । उसे निर्वर्तित कराने के लिये चार आदमियों के हस्ताक्षर होने आवश्यक हैं...एक सिनियर चौधरी...दूसरा जूनियर चौधरी...तीसरा लीला मारेस और चौथा वह

हिन्दुस्तानी जो हमारी कैद में है। अभी तक केवल सीनियर चौधरी की दस्तख्त हो सकी है। लीला मारेस और जूनियर चौधरी के हस्ताक्षर तुम्हें कराने हैं... इसके अतिरिक्ति हमीद कीजेब से जो कागज प्राप्त किया गया है उससे साबित होता है कि एक और देश से भी समझौता किया जाने वाला है... हमें उसे भी निवर्तित कराना होगा... मगर अभी तो यही काम करना है !”

“उस कैदी हिन्दुस्तानी की दस्तख्त कौन करायेगा ?” कानन ने पूछा।

“इन दोनों के हस्ताक्षर के बाद वह खुद ही हस्ताक्षर कर देगा...”
आवाज आई।

“चौधरी जूनियर और लीला मारेस को यहाँ भेज दिया जाये...”
कानन ने दृढ़ स्वर में कहा। वह फिर अपने को महारानी समझने लगी थी।

कुछ ही देर में लीला मारेस और चौधरी जूनियर कमरे में दाखिल हुये। उनके पीछे दो आदमी और थे। जैसे ही चौधरी जूनियर की नजर उस पर पड़ी उसने कठोर स्वर में कहा।

“यह तुम हो... तुम... दो टुके की सतीत्वहीन छोकरी... जो मेरे कमरे में मुझसे इश्क लड़ाने आई थी... और इस सभ्य देश के नाम पर कालिख लगा रही है।”

“होश में आओ चौधरी !” कानन ने गुँजीली आवाज में कहा
“यह मत भूलो कि तुम्हारा जीवन मेरे एक हल्के से संकेत पर निर्भर करता है।”

“तुम क्या कर सकती हो !” चौधरी के स्वर में अधिक कठोरता आ गई
“अधिक से अधिक मुझे कत्ल करा सकती हो... और मैं इसके लिये तैयार हूँ।”

“नहीं... मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूँ कि उस संधि पत्र पर

तुम्हारे बाप सीनियर चौधरी का हस्ताक्षर हो चुका है... और यह भी सुन लो..." वह एक क्षण के लिये रुकी, फिर धमकाने वाले भाव में बोली "सीनियर चौधरी को हस्ताक्षर के बाद भी इसलिये कैद में रखा गया है ताकि तुम भी हस्ताक्षर कर दो... और यदि तुमने हस्ताक्षर न किया तो उनको तुम्हारे सामने ही कत्ल कर दिया जायेगा... समझे !"

"तुम झूठी हो—उन्होंने हस्ताक्षर नहीं किया..." चौधरी चीख पड़ा ।

"संधि पत्र लाया जाये..." कानन ने ऊँची आवाज में कहा ।

एक क्षण तक स्तब्धता छाई रही... फिर दरवाजा खुला और एक लम्बे कद का आदमी दाखिल हुआ । चौधरी ने उसे ध्यान पूर्वक देखा, फिर लीला मारेस से बोला ।

"मुझे याद पड़ता है कि मैंने इस आदमी को कहीं देखा है ।"

"कई बार देखा होगा और अभी कई बार और देखोगे..." आने वाले ने कहा और कानन की ओर कागज बढ़ा दिया । कानन ने कागज खोल कर देखा, फिर सर उठा कर चौधरी से कहा ।

"आओ देखो... और पहचानो... चौधरी सीनियर की दस्तखत इस पर मौजूद है ।"

चौधरी झपटा... फटी फटी आंखों से चौधरी सीनियर का हस्ताक्षर देखा, फिर लीला मारेस की ओर देखने लगा ।

"दस्तखत जाली भी हो सकती है ।" लीला मारेस ने कहा ।

"केवल हस्ताक्षर ही नहीं... पूरी इबारत उन्हीं की लिखी हुई है । मैं उनकी राइटिंग पहचानता हूँ—" चौधरी ने कहा ।

"सुनो चौधरी डियर !" लीला ने तीखे स्वर में कहा "वह तुम्हारे बाप हैं । उनका और अपना जीवन बचाने के लिये तुम हस्ताक्षर कर सकते हो... मैं नहीं कहूँगी !"

“परिणाम भी सोचा है !” कानन ने कहा ।

“मौत....!” लीला ने निर्भय होकर कहा ।

“नहीं....” अचानक नीला महल के प्रतिरूप से आवाज आई

“तुम सुन्दर हो... इसलिये तुम एक ही समय में कई आदमियों की
जिन्नी बनाई जाओगी... समझ गई या नहीं !”

“उससे पहले मैं आत्म हत्या कर लूँगी....” लीला ने कहा ।

“तुम्हें इसका अवसर ही नहीं दिया जायेगा....” आवाज आई
“अगर तुम अपने ही हाथों अपना गला घोटना चाहोगी तो तुम्हारे
हाथ काम न कर सकेंगे । हम तुम्हें कुछ घंटों का समय दे रहे हैं...
रात में बारह बजे से पहले हस्ताक्षर हो जानी चाहिये... और मिस्टर
चौधरी ! अगर तुम मेरे साथ काम करना पसन्द करोगे तो न केवल
हर मेजेस्टी के पति होंगे बल्कि हमारे डायरेक्टर भी....”,

“मातृभूमि का सौदा इतना सस्ता नहीं होता मिस्टर....” चौधरी
ने तीखे स्वर में कहा ।

“इन दोनों को उसी कमरे में पहुंचा दो जिसमें वह हिन्दुस्तानी
रहें हैं....” आवाज आई ।

थोड़ी ही देर बाद कानन कमरे में अकेली रह गई । लेटी लेटी
भरवटें बदलती रही ।

मानस में एक तूफान उठा हुआ था... फिर अचानक उठी और
कमरे से निकल कर हमीद के कमरे की ओर बढ़ी, मगर संयोग से
हमीद और कासिम दोनों ही उसे दरवाजे पर ही मिल गये । उसने
उन्हें संकेत किया । दोनों उसके साथ हो लिये ।

— ००० —

वह कमरे में अकेला टहल रहा था । न जाने उसे कितनी यात-
नायें दी गई थीं... मगर चेहरे पर न कहीं निराशा थी न उदासी...
बल्कि एक विचित्र सी प्रतिभा थी ।

अचानक कमरे का दरवाजा खुला और एक आदमी अन्दर दाखिल हुआ। वह आने वाले को चकित दृष्टि से देखने लगा। आने वाले ने होठों पर अँगुली रख कर मौन रहने का संकेत किया और जेब से एक कागज निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दिया। वह आदमी पढ़ने लगा। लिखा था।

“थोड़ी ही देर में चौधरी जूनियर और लीला मारेस यहां आने वाले हैं। उन्हें बता दीजियेगा कि मैं यहां आ गया हूँ और कैप्टन हमीद भी यहीं मौजूद है...”

उस आदमी ने कुछ कहने के लिये होंठ खोला ही था कि आने वाले ने फिर उसे चुप रहने का संकेत किया और उसके हाथ से कागज लेकर कमरे से बाहर निकल गया।

—०—

दीवारों पर स्क्रीनें फिट थीं। चारों ओर मशीनें लगी हुई थीं। एक मशीन बराबर टिक टिक कर रही थी और उसके अन्दरसे सफेद रंग के धुये की बहुत पतली सी रेखा निकल रही थी। मध्य में एक मेज थी जिसके तीन ओर कुर्सियां पड़ी हुई थीं। चौथी ओर केवल एक ही कुर्सी थी जो कुछ ऊँचाई पर थी।

कुछ ही क्षण बीते होंगे कि कानन दाखिल हुई और उस कुर्सी की ओर बढ़ी जो ऊँचाई पर थी।

“नहीं कानन !” एक आवाज गूँजी “तुम अब उस कुर्सी पर बैठने योग्य नहीं रह गईं। तुमने गद्दारी की है...”

“मैंने !” कानन ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा।

“हां...तुम कैप्टन हमीद को लेकर उस हिन्दुस्तान के कमरे में क्यों जा रही थीं।”

“चौधरी जूनियर और लीला मारेस को इस पर तैयार करने

के लिये कि वह उस सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर कर दें ।”

“बड़ा अच्छा विचार था—मगर हमीद क्यों तुम्हारे साथ था ।”

“उसने मुझे वचन दिया था कि वह मुझे बता देगा कि कर्नल विनोद कहाँ है ।”

इतने में आठ आदमी और दाखिल हुये और कुर्सियों पर बैठ गये । उनमें एक ऐसा था जिसका चेहरा कानन को जाना पहचाना लग रहा था । मगर वह नहीं याद आ रहा था कि कहाँ देखा था । वह भी हिन्दुस्तानी ही था ।

इतने में आवाज फिर गूँजी ।

“आज तुम सब के भाग्य का निर्णय होने वाला है । चौधरी जूनियर, लीला मारेस, कैप्टन हमीद, कासिम और उस कैदी हिन्दुस्तानी को बुलाया जाये ।”

कुछ ही क्षण बाद यह सब लोग एक एक करके कमरे में दाखिल हुये और फिर लीला मारेस तथा जूनियर चौधरी के मुख से एक साथ चीखें निकल गई—इसलिये कि उन्होंने एक कुर्सी पर चौधरी जूनियर को बैठे हुये देखा था ।

“पिता जी—आप और यहां—!” चौधरी के मुख से निकला ।

“हां—” आवाज आई ! यह आवाज नीला महल के प्रतिरूप से आती रही थी “तुम्हारे पिता जी नीला महल के डायरेक्टरों में से एक हैं । दोनों समझौतों के बारे में इन्हीं से हमें सूचना मिली थी । जब यहां माई कैटा कबीले में लेडी वाल्टर के गायब हो जाने की खबर मिली थी तो यह चौधरी साहब ही थे जिन्होंने यह सूचना बनाई थी कि कानन को लेडी वाल्टर बनाया जाये । आधार था कि दोनों की शक्ल सूरत तथा कद एक जैसा था । जिस दिन मैंने अपने कमरे में कानन को ठुकरा दिया था और वह दूटा हुआ

दिल लेकर तुम्हारे कमरे से बाहर निकली थी तो चौधरी साहब ने उसे देख लिया था और उसी दिन निश्चय कर लिया था कि वह कानन को यहां लायेंगे। वह कानन की कमजोरियों और उसकी स्थिति को जानते थे। कानन को रुपये भिजवाने की स्कीम उन्होंने ही बनाई थी। वह जानते थे कि रुपये पाने के बाद कानन अवश्य अपने भाइयों को याद करेगी, इसलिये उन्होंने उसके भाइयों को भी लन्दन बुलवा लिया था... समझे...!"

"मुझे दुख है कि मेरा बाप गद्दार है..." चौधरी जूनियर ने कहा "काश मुझे रिवाल्वर मिल जाता तो मैं एक गोली इन्हें और एक गोली अपने को मार लेता।"

"यहां रिवाल्वर नहीं चलाया जा सकता..." सख्त आवाज आई "और यह भी सुन लो कि अगर तुमने किसी प्रकार की असम्भ्यता की तो चौधरी साहब अपने हाथों से तुम्हें कत्ल कर देंगे।"

चौधरी जूनियर ने अपना सर झुका लिया और वह हिन्दुस्तानी अपने ही दांतों से अपना होंठ काटने लगा जो पहले ही से यहां कैद था। आवाज फिर आई।

"अभी बहुत घारे लागों का आना बाकी है कैप्टन हमीद—उस के बाद तुम मुझसे भी मिलोगे और मेरा विचार है कि मुझ से मिल कर बहुत ही खुश होंगे।"

इतने में लेडी वाल्टर दाखिल हुई और हमीद चौंक पड़ा, फिर पूछा।

"मिस्टर पापेन कहां हैं?"

"मैं कह नहीं सकती..." लेडी वाल्टर ने कहा "बस्ती में जब आग लगाई गई थी तो हम लोग भाग निकले थे। पापेन को मैंने बहुत तलाश किया था मगर वह मुझे नहीं मिल सका था मैं किसी न...

किसी तरह माई काटा कबीले तक पहुंच गई। मैंने आज रात यहां हमला करने की योजना बनाई थी, मगर तीसरे पहर मुझे फिर पापेन दिखाई पड़ा था और फिर मैं ड्रामाई ढङ्ग से गिरफ्तार कर ली गई थी। उसके बाद शायद मुझे बेहोश कर दिया गया था... क्योंकि जब आंखें खुली थीं तो मैंने माई काटा कबीला के वजाय अपने को यहां नीला महल में पाया था।

फिर हमीद को वह दोनों हथ्शी भी दिखाई दिये जिनमें से एक का नाम साका था—और दूसरा वही था जो हमीद का पथ प्रदर्शक बना हुआ था। तमाम लोगों में वही दोनों मुतमहन नजर आ रहे थे।

फिर उसी कमरे का एक दूसरा दरवाजा खुला और पापेन अन्दर दाखिल हुआ। उसे देखते ही कुर्सियों पर बैठे तमाम लोग खड़े हो गये... और हमीद एक दम से चौंक पड़ा। पापेन सीना ताने उसी कुर्सी की ओर बढ़ रहा था जो ऊँचाई पर रखी हुई थी। कुर्सी के निकट पहुंच कर उसने हाथ के संकेत से सब को बैठने के लिये कहा और खुद भी बैठ गया। हमीद का दिल बड़े जोरों से धड़कने लगा था। वह सोच रहा था कि निर्णायकारी समय अब निकट आ गया है आज तक वह यही सोचता आया था कि कर्नल विनोद ही तो पापेन के भेस में नहीं है। पापेन का कद... बातें करने का ढङ्ग और भाव... तथा उसका सिगार पीना और औरतों से दूर भागना—यह सारी बातें ऐसी थीं जिन्होंने हमीद को यदि विश्वास नहीं दिला दिया था तो विश्वास की सीमा तक अवश्य पहुंचा दिया था। बहरहाल इतना तो था ही कि पापेन उसके साथ साथ काम कर रहा था।
अचानक पापेन ने सर उठा कर उसकी ओर देखा और बोला।

“कैप्टन हमीद ! तुम मुझे इस कुर्सी पर देख कर चकित हो—

और होना भी चाहिये। अब तक तुमने और कर्नल विनोद ने न जाने कितनों को चकित किया है...मैंने आरम्भ ही में यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हें और कर्नल विनोद को चकित करूँगा। यह बात तो मैं तुम्हें पहले ही बता चुका था कि नीला महल येस० आई० येस० का हेड क्वार्टर है...मगर इस समय यह बात बता रहा हूँ जो कोई नहीं बताता—और वह बात यह है कि येस० आई० येस० की संस्था का संचालक मैं हूँ—।”

वह मौन हो गया और हमीद स्तब्ध खड़ा उसे देखता रहा। उसने फिर जवान हिलाई।

“तुमने मुझे अपना हमदर्द और साथी समझा। हमेशा मुझे “आप” कह कर सम्बोधित किया और मेरा सम्मान करते रहे, इसके लिये मैं तुम्हारा आभारी भी हूँ कैप्टन और शुक्रिया भी अदा करता हूँ। जिस प्रकार हवाई जहाज पर तुमने मेरे दो साथियों को जख्मी किया...उसकी प्रशंसा भी करता हूँ और इस सन्चाई का समर्थन भी करता हूँ कि जब जब मैंने तुम्हें कत्ल करना चाहा था तब तब कोई रहस्यपूर्ण अज्ञात शक्ति तुम्हारी रक्षा के लिये बीच में आती गई थी।”

“तुम मुझे कत्ल करना चाहते थे !” हमीद ने आश्चर्य के साथ पूछा !

“हां...लेकिन बाद में मैंने तुम्हें कत्ल करने का विचार दिल से निकाल दिया था—इसलिये कि तुम्हें कत्ल करने से कोई लाभ नहीं था...बल्कि तुम्हें यहाँ लाकर तुम से बहुत सारा काम लिया जा सकता था...बहुत सारी बातें तुम से मालूम की जा सकती थी...वैसे इस निर्णय के बाद भी मैंने झुल्ला झुल्ला कर कई बार तुम्हें कत्ल करना चाहा था...सुनो...मैं पूरी कहानी ही तुम्हें सुना रहा हूँ। पहली बार तुम पर हमला करने वाले मेरे ही आदमी थे...और मैंने

तुम्हें इसलिये बचा लिया था कि तुम मुझ पर पूरा पूरा विश्वास करने लगे। रिवाल्वो में लीला मारेस और चौधरी जूनियर पर भी मैंने ही हमला कराया था... प्लान यह था कि इस प्रकार मैं मारेस को उठा ले जाऊँगा... मगर असफल रहा। तुम्हारे दूतावास में बम मैंने ही रखवाये थे और तुम्हें बता भी दिया था। योजना यह थी कि तुम बाहरी भाग का बम देख लो और उसे बेकार करके सन्तुष्ट हो जाओ और अन्दर रखे हुये बम अपना काम कर जायें... मगर तुम्हारी सूझ बूझ की प्रशंसा करनी पड़ती है कि तुमने मेरी यह योजना भी निष्फल बना दी। जंगलों में उस रात मचानों पर बैठे हुये लेडी वाल्टर के दोनों साथियों को मैंने ही अपने साइलेन्सर लगे हुये रिवाल्वर का निशाना बनाया था। विचार यह था कि उनके बाद लेडी वाल्टर को भी निशाना बना दूँगा और तुम यही समझते रह जाओगे कि जिस प्रकार बारह सिगों की दौड़ से भयभीत होकर उसके दोनों साथी काँप कर सन्तुलन खो बैठे थे और नीचे गिर पड़े थे उसी प्रकार लेडी वाल्टर भी गिर गई... मगर पता नहीं वह कौन सी शक्ति थी जिसने मेरी उस योजना को भी निष्फल बना दिया था, वना लेडी वाल्टर के मरने के बाद तुम भी उन्हीं जंगलों में भटक भटक कर मर जाते। मुझे यह भी मालूम हो गया था कि तुम्हारे पास एक दूसरे देश से समझौते के कागजात हैं जिन्हें तुम इस आशा पर अपने साथ लिये जा रहे हो कि अपने देश के कैदी प्रतिनिधि तक पहुँचा सकोगे और उसे आजाद भी करा लोगे। वह कागज प्राप्त करने के लिये मैंने एक मचान पर तुम्हें अकेले रहने दिया था—तुम्हारे मचान पर भी यह सोच कर चढ़ा था कि तुम से वह कागज भी प्राप्त कर लूँगा और तुम्हें कल भी कर दूँगा—मगर दो में से एक भी न कर सका। फिर मैंने बस्ती की सोंपड़ियों में स्फूर्ति कर आग लगवा दी थी मगर किस्मत तुम्हारा साथ दे रही थी। तुम भी बच गये और लेडी वाल्टर भी बच गई। अन्तिम द्वार मुझे उस समय आस बँध गई थी जब तुम पर हाथी ने

हमला किया था—मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि विफरें हुये हथिनी और हाथी से तुम न बच सकोगे...मगर न जाने वह कौन था जिसने दोनों हाथियों को मार डाला—तुम्हें बचाया और मुझे भी जखमी करता हुआ निकल गया...मैं अपनी इन समस्त पराजयों का समर्थन करते हुये अब अपनी विजय की घोषणा कर रहा हूँ... और वह घोषणा यह है कि समझौते का जो कागज मुझे तुम से मिला है वह पूरे संसार में प्रसारित कर दिया गया है जब कि तुम लोग उसे गुप्त रखना चाहते थे। वह जहाज भी सागर में डूबो दिये जायेंगे जो शस्त्र तथा दूसरे सामान लेकर तुम्हारे देश को जा रहे हैं। उन्हें तुम अपनी आँखों से डूबता हुआ देखोगे और जिस संधि को हम निवर्तित करना चाहते हैं उस पर आज ही और इसी समय चौधरी जूनियर—लीला मारेस और तुम्हारे इस कैदी प्रतिनिधि को दस्तखत करनी होगी। लेडी वाल्टर हमारी हज्जानुसार काम करना चाहेगी तो यहीं रहेगी वना उसे खतम कर दिया जायेगा—!”

पापेन मौन हो गया और हमीद जो लगातार मानसिक झटकों के बाद अब अपने ऊपर कायू पा चुका था...मुस्कुरा कर बोला।

“लेकिन मिस्टर पापेन ! तुम एक बात भूल गये ?”

“क्या ?” पापेन ने पूछा।

“तुम उस अज्ञात शक्ति को भूल गये जो हर जगह तुम्हारा रास्ता काटती रही है—मुझ से सुनो—चौधरी जूनियर, लीला मारेस तथा लेडी वाल्टर का यह विचार था कि मैंने ही उन्हें रिवाल्वी होटल में बचाया था—हालांकि मैंने नहीं बचाया था।”

“तो फिर किसने बचाया था ?” पापेन ने पूछा।

“उसी अज्ञात शक्ति ने—” हमीद ने हँस कर कहा “और सुनो—यह वही अज्ञात शक्ति थी जिसने जहाज को अपहरण से बचाया था...यात्री और तम खुद यह समझ रहे थे कि मैंने उन दोनों पर

चाकू फेंके थे...मगर ऐसा नहीं था। कोई ऐसा सच्चा निशाने बाज था जिसने अपने वे आवाज रिवाल्वर से उनकी कलाहयाँ तोड़ी थी—उसी निशाने बाज ने पहले बर्छे से हथनी को खरम किया था—फिर रिवाल्वर से हाथी को मारा था और उसके बाद तुम्हें जखमी करता हुआ निकल गया था। मेरा खयाल है कि वह तुम्हें जिन्दा ही रखना चाहता था...वर्ना जखमी कर के भाग निकलने का क्या मतलब हो सकता था...और जब मैंने तुमने से पूछा था कि जखमी कैसे हुये तो तुमने अपने ठोकर खा कर गिरने की कहानी मुझे सुनाई थी...और मेरे बहुत प्यारे और पुराने पापी उर्फ पापेन—मेरी यह भविष्यवाणी सुन लो कि वह अज्ञात शक्ति तुम्हारे इस नीला महल तक भी पहुँच चुकी है—।”

“वह अज्ञात शक्ति कौन है ?” पापेन ने पूछा।

“कर्नल विनोद—” हमीद ने कहा।

एक क्षण के लिये ऐसा लगा था जैसे कुर्सियों पर बैठे हुये तमाम लोगों के सरो पर पंछी बैठे हुये हैं—उन्हें साँप सूँव गया हो। हमीद बोलता जा रहा था।

“तुम येस० आई० येस के संचालक हो। पूरे संसार पर राज्य करने का सपना देख रहे हो...मगर एक आदमी से इतना भयभीत हो कि उसका नाम सुनते ही तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ गया।”

“मगर कर्नल विनोद तो जखमी होकर हास्पिटल में पड़ा है...”

पापेन ने कहा।

“मैं ईमानदारी से इसका धमर्थन करता हूँ कि जब मैंने लन्दन छोड़ा था तो उस समय भी कर्नल विनोद जखमी था...हास्पिटल में था...बोल भी नहीं सकता था लिख कर बातें कर रहा था और जिस कागज पर उन्होंने लिख लिख कर बातें की थीं वह कागज तुम ने चुरा लिया और तुम्हें पूरा विश्वास हो गया कि कर्नल विनोद जखमी ही है...लेकिन प्यारे संचालक साहब अब मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूँ कि कर्नल जखमी हुये ही नहीं थे और उन्होंने तुम को अपने हाथ की कठपुतली बना रखा था—जो चाहता था तुम से करवा

लेता था...तुम उस के इशारों पर नाचते रहे थे...और अब यह भी सुन लो कि वह यहाँ दाखिल होना ही चाहता है...।”

“अब इस इमारत में कोई दाखिल नहीं हो सकता...” पापेन ने गरज कर कहा ।

“वह क्यों और कैसे मिस्टर पापी...ओह माफ करना...भूल गया था मिस्टर पापेन ।”

“पूरी इमारत में बिजली की लहरें दौड़ रही हैं...” पापेन ने कहा ।

“इसके बाद भी एक आदमी दाखिल हो सकता है मिस्टर पापेन...” एक गरजदार आवाज सुनाई दी और साथ ही दरवाजा खोल कर एक आदमी अन्दर आगया । उसके शरीर पर काले रबर का लिवास था ।

“सर वाल्टर !” हमीद तथा उसके सब साथियों ने एक साथ कहा ।

“हां मिस्टर पापेन ! मैंने जीवन में किसी का कभी उधार नहीं रखा...” सर वाल्टर ने कहा “जब मुझे यह मालूम हुआ कि तुम कैप्टन हमीद के साथ एक जासूस के मेस में रहना चाहते हो तो मैंने भी यही उचित समझा कि मुझे भी अपराधी समझा जाये... इसीलिये मैं अपने को संदिग्ध बनाता रहा था...और इस प्रकार सर वाल्टर तुम्हारे लिये दर्द सर बना रहा । तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा था कि सर वाल्टर को किस खाने में रखो...और लेडी वाल्टर की समझ में यह नहीं आ रहा था कि सर वाल्टर को क्या होगया है...मगर इस समय मैं लेडी वाल्टर को समझा देना चाहता हूँ कि सर वाल्टर को क्या होगया था...” बात समाप्त कर के उसने अपने चेहरे पर घुंसा मारा । चटाख की आवाज के साथ उसके चेहरे पर से प्लास्टिक के कुछ टुकड़े गिरे और शेष टुकड़े जब उसने अपने हाथों से अलग किये तो पापेन एक दम से चीख पड़ा

“कनल विनोद !”

“हिप हिप...हुर्रा...” हमीद ने नारा लगाया ।

“हां मिस्टर पापेन ! मैं कनल विनोद ही अपनी अस्ती शक्ल में तुम्हारे सामने खड़ा हूँ और अब तुम्हें वह बातें बताने जा रहा हूँ जो तुम्हें नहीं मालूम हैं । सुनो...सर वाल्टर मेरा दोस्त है और इस समय वह हमारे देश में अतिथि बन कर रह रहा है। मैंने उसे सारी बातें बता दी थी और खुद सर वाल्टर बन गया था । हिन्दुस्तान में जब उस रेल गाड़ी को तुम लोगों ने उड़ा देना चाह था जिसमें शास्त्र थे तो उस समय मैं जखमी नहीं हुआ था वाल्टर मेरा एक बफादार आदमी जखमी हुआ था जो मेरे स्वर और मेरी राइटिंग की सही नकल कर लेता था । लन्दन के हास्पिटल में भी वही था...और मैं...मैं हर स्टेज पर परछाईं के समान तुम्हारे साथही साथ रहा था । हवाई जहाज को तुम दो वस्तुओं के लिये हरना चाहते थे...एक लेडी वाल्टर के लिये और दूसरा उस सोने के लिये जो उसमें लदा हुआ था । जहाज पर लेडी वाल्टर ने जब यह कहा था कि उसने जहाज में सर वाल्टर को भी देखा था...तो तुम ने उसका मजाक उड़ाया था । कैप्टन हमीद ने भी हंसी उड़ाई थी जब कि सर वाल्टर अर्थात् मैं सचमुच जहाज में था । लेडी वाल्टर ने मुझे सर वाल्टर के रूप में देखा था और कैप्टन हमीद ने बूढ़े प्रोफेसर के रूप में...और तुम...तुम तो ताकत के नशे में चूर थे इसलिये तुम्हें कुछ नहीं दिखाई दिया था । तुम यह भी नहीं देख सके थे कि कब मैंने वे आवाज रिवॉल्वर से तुम्हारे उन दोनों आदमियों को जखमी किया था...जिस को तुम अज्ञात शक्ति या अज्ञात आदमी समझते रहे थे वह मैं ही था...समझे !”

“मगर तुम यहां अन्दर कैसे आगये ?” पापेन ने पूछा ।

“तुम्हें इस लिये आश्चर्य हो रहा है कि तुम ने इस इमारत में

विजली की लहरें दौड़ा रखी थीं... ऐसी दशा में किसी का अन्दर दाखिल होना आश्चर्य जनक है ही... फिर मैं कैसे अन्दर दाखिल हुआ यह बाद में याऊँगा... पहले मेरी बातें सुनों... जब पहले पहल मुझे नीला महल की कहानी मालूम हुई थी तो मैंने इसी पर विचार किया था कि नीला महल है क्या... नाम से यही समझा जा सकता था कि कोई पुराना किला होगा... और सच पूछों तो मैंने भी यही समझा था... नमर जब कानन के फ्लैट में मुझे नीला महल का प्रति रूप मिला था और जब मुझे उसकी यह असलियत मालूम हुई थी कि वह एक ऐसा ट्रान्समीटर है जो ट्रान्समीशन और टेलीवीजन दोनों का काम करता है... अर्थात् उस पर आवाजें भी सुनी जा सकती थीं... आवाजें पहुँचाई भी जा सकती थी और तस्वीरें भी नजर आ सकती थीं... तो मैं गौर करने लगा था कि यह किस प्रकार सम्भव है... और फिर मैं शीघ्र ही इस में सफल भी होगया था...।”

यह तो कोशिश करने के बाद सान्ड्स का एक साधारण सा स्टुडेंट भी मालूम कर सकता था... पापेन ने लापरवाही के साथ कहा।

“हां—लेकिन वह स्टुडेंट यह नहीं समझ सकता था या यह अनुमान नहीं लगा सकता था की वह स्टेशन अफ्रीका ही में कहीं हो सकता है... और फिर लेडी वाल्टर ने मुझे नीला महल की कहानी सुनाई थी...।”

“बहुत अच्छे—इसमें सन्देह नहीं कि तुम बहुत विवेकी हो...” पापेन ने कहा “लेकिन मुझे दुख है कि तुम्हारी मौत तुम्हें यहा लॉक लाई है।”

“नहीं मिस्टर पापेन... मौत विजेताओं की नहीं वल्कि पराजितों की आती है... और तुम पराजित होगये हो—क्योंकि मैं तुम्हारे इस सोडियम के महल में दाखिल होगया हूँ।”

“क्या मतलब ?” पापेन ने उसे घूरते हुये पूछा, मगर विनोद ने उसे उत्तर देने के बजाय लेडी वाल्टर को सम्बोधित किया ।

“लेडी वाल्टर ! मुझे दुख है कि तुम्हारे प्राचीन नीला महल को येस० आई० येस० की संस्था ने वर्वाद कर डाला है ।”

“मैं आपका मतलब नहीं समझती ।” लेडी वाल्टर ने आश्चर्य के साथ कहा ।

“मतलब साफ है... यह महल अब नीलम का नहीं बल्कि सोडियम का है... नमक से अलग किये हुये सोडियम का... जो पानी पड़ने से इस प्रकार जल कर खाक हो जायेगा जैसे आग में सूखी लकड़ियाँ जलती हैं ।”

“नहीं...” लेडी वाल्टर पागलों के समान चीख पड़ी “यह किस प्रकार सम्भव है ।”

“यह काम इन लोगों ने धीरे धीरे किया है—” विनोद ने कहा “इस महल पर अधिकार प्राप्त कहते ही इन लोगों ने दो बातें सोची थीं । पहली तो यह कि जो इतना नीलम इस महल में लगा हुआ है उसे किसी काम में लाया जाये—दूसरे यह कि इसी को संस्था का केन्द्र बनाया जाये... बस इन्होंने धीरे धीरे इसे तोड़ना आरम्भ किया और इनके एजेंट पूरी दुनिया में उसे बेच बेच कर रुपये बनाने लगे—मगर साथ ही साथ इन्हें यह भी चिन्ता हुई कि अगर धीरे धीरे इसी प्रकार यह महल तोड़ तोड़ कर बेचा जाता रहा तो एक दिन यहाँ केवल पहाड़ी ही रह जायेगी और कबीले के लोग इन्हें कच्चा चबा जायेंगे—इसलिये इन्होंने यह करना आरम्भ किया कि महल के जो भाग तुम्हारे पास थे उसे सोडियम से बना डालते थे ।

दूसरी चिन्ता इन्हें इस बात की थी बिना रानी के कबीले वाले बगावत भी कर सकते थे । इसलिये बगावत को रोकने के लिये इन्होंने कानन को रानी बनाना चाहा जो सूरत शकल में महारानी

अर्थात् लेडी वाल्टर से बिल्कुल मिलती जुलती थी।”

“लेकिन इनको यहाँ इतनी सोडियम कहाँ से मिली?” लेडी वाल्टर ने पूछा।

“महल के पीछे नमक की कान है। कान से नमक निकाला जाता है... फिर उसके तत्व सोडियम और क्लोरीन अलग किये जाते हैं। सोडियम को महल बनाने में प्रयोग किया जाता है—” विनोद ने कह कर पापेन की ओर गर्दन झुमाते हुये कहा “क्या मैं गलत कह रहा हूँ मिस्टर पापेन?”

“नहीं... बिल्कुल सच है... अपना बयान जारी रखो—” पापेन ने तन कर कहा।

“यह महल सोडियम से इसलिये बनाया जा रहा था कि पूरे महल को रेडियो ऐक्टिव रेज द्वारा सुरक्षित कर लिया जाये...” विनोद ने कहा।

“और हम इसमें सफल भी हो गये—” पापेन ने गर्व से सीना तान कर कहा।

“अवश्य— मगर तुम्हारी यही सफलता... असफलता बन गई—” विनोद ने मुस्कुरा कर कहा।

“यह किस प्रकार?” पापेन ने हँसी उड़ाने वाले भाव में पूछा।

“जब महल तैयार हो गया और उस पर रेडियो ऐक्टिव रेज फेंकी जाने लगीं तो तुम्हारे एजेंटों ने तुम्हें सूचना दी और तुम यहाँ के लिये रवाना हो गये—और मैं तुम्हारे पीछे लगा गया... मेरा खड़ा पहुँचना ही तुम्हारी असफलता है—।”

“लेकिन तुम अन्दर कैसे दाखिल हुये?” पापेन ने पूछा।

“बड़ी सरलता से...” विनोद हँस पड़ा “जब मैं नीला महल के सामने पहुँचा तो मुझे अन्दाजा हो गया कि यह नीलम का बना

हुआ नहीं है। मैं सोचने लगा कि फिर किस वस्तु का बना हुआ हो सकता है... थोड़ी ही देर में यह बात समझ में आ गई कि केवल सोडियम ही एक ऐसी वस्तु है जिस पर रेडियो ऐक्टिव रेज फेंक कर उसे बिजली द्वारा नीले रंग में परिवर्तित किया जा सकता है... अब क्या यह भी बताने की आवश्यकता है कि मैंने काले रबर का स्त्रिबास पहना और सरलता से अन्दर दाखिल हो गया।

“मगर अब तुम्हारी वापसी असम्भव है...” पापेन ने गुर्रा कर कहा।

विनोद के होठों पर जहरीली मुस्कान प्रकट हुई। उसने हाथ उठा कर कहा।

“मैं जिस प्रकार आया था उसी प्रकार वापस भी चला जाऊँगा मगर खाली हाथ नहीं—बल्कि अपने तमाम साधियों को लेकर।”

“यह तो आने वाला समय बतायेगा—वैसे तुम जो कुछ जानते हो उसे बता कर अपने दिल की भड़ास निकाल लो। मैं तुम्हारी समाधि पर एक पत्थर लगवा दूँगा जिस पर यह लिखा होगा कि...”

“यहाँ सबसे अधिक बुद्धिमान आदमी हजारों मन मिट्टी के नीचे लेटा हुआ है—” पापेन ने हँसी उड़ाने वाले स्वर में कहा।

“मगर मैं तुम्हारे लिये इतना भी न कर सकूँगा...” विनोद ने

कहा, “मानवता के शत्रुओं से मुझे तनिक भी सहायता नहीं... और यह भी सुन लो कि मुझे यह बात भी मालूम है कि नमक से अलग की हुई क्लोरीन धमाके वाले शस्त्रों को बनाने में प्रयोग की जाती है और अब तुम्हारे एजेन्ट उन्हीं शस्त्रों की सहायता से संसार में विनाशकारी कार्य कर रहे हैं। तुम हर देश में षड्यन्त्र रचते हो और इस प्रकार एक देश के सम्बन्ध दूसरे देश से खराब कराते रहते हो... सन्धि पत्र चुराते हो... तुम जिस सन्धि को निर्वर्तित कराना चाहते हो—उसके पीछे तुम्हारा केवल यही ध्येय है कि उस देश से

मेरे देश के सम्बन्ध खराब हो जायें—मगर तुम यह भी समझ रहे थे कि तुम्हें इस प्रयास में असफलता होगी, इसलिये तुम उस सन्धि पत्र के पीछे पड़ गये थे जो हमीद के पास था।”

“और अब मेरे पास है...” पापेन ने हँस कर कहा।

“यह तुम्हारी सफलता नहीं पापेन बल्कि असफलता है—” विनोद ने भी हँस कर कहा—“मैं भी यही चाहता था कि वह तुम्हारे ही द्वारा प्रसारित हो—वर्ना तुम उल्टे लटक गये होते मगर हमीद के पास से उसे प्राप्त नहीं कर सकते थे समझे—और यह भी सुन लो कि मैंने नीला महल को केवल इसलिये महत्व नहीं दिया था कि वह नीलम का बना हुआ है या यह कि वह ~~मिस०~~ ~~आइ०~~ ~~येस०~~ का हेड क्वार्टर है...”

“तुम्हारे निकट इसका महत्व यह है कि यह सोडियम का बना हुआ है और इस पर रेडियो ऐक्टिव रेज फेंक कर इसे हवाई हमलों से भी सुरक्षित कर लिया गया है...क्यों...क्या मैं गलत कह रहा हूँ ?” पापेन ने कहा।

“किसी हद तक तुमने यह बात ठीक ही कही है...मगर मेरी नजर में इसकी महत्ता का एक दूसरा कारण भी है...और तुम्हें इसलिये वह कारण बताने जा रहा हूँ ताकि तुम्हारी समझ में यह अच्छी तरह आ जाये कि मैं क्या क्या जानता हूँ...मगर सुनने से पहले अपना सीना दबा लो...कहीं उछल कर बाहर न आ जाये...” विनोद इतना कह कर मौन हो गया। चारों ओर नजरें दौड़ाई—फिर पापेन के चेहरे पर नजरें जमा कर बोला “यह तुम्हारा नीला महल...एटम बम और हाइड्रोजिन बम का गोदाम भी है...”

पापेन का चेहरा लाल हो गया। विनोद कहता जा रहा था।

“इसी कारणवश नीला महल के अन्दर गोली नहीं चलती।

लोगों को एलेक्ट्रिक शाक से समाप्त किया जाता है... या गला घोट कर मारा जाता है... सारांश यह है कि नीला महल उस इमारत का नाम है जो सोडियम से बनाई गई है... जिस पर रेडियो ऐक्टिव रेज फेंक कर बिजली द्वारा नीला बनाया गया है और हवाई हमलों से सुरक्षित भी किया गया है... जो एटम बम और हाइड्रोजन बम का गोदाम भी है और जहां बैठ कर पूरे संसार पर राज्य करने का स्वप्न देखा जा रहा है।”

“यह सब ठीक है कर्नल विनोद। मैं तुम्हारी मालूमात की प्रशंसा करता हूँ—समर्थन करता हूँ कि तुमने वह जासूसी की है जिस का जवाब नहीं—” पापेन ने कहा “मगर कर्नल! साथ ही साथ मुझे इस बात का दुख भी है कि संसार वानों को यह सब बताने के तुम लिये जीवित नहीं रहोगे... मैं तुम्हें इसी समय मौत के घाट उतार सकता हूँ—मगर इससे पहले तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि केवल जानकारी प्राप्त कर लेना सफलता नहीं—यह सब जानने के बाद भी तुम असफल हो... संधि निवर्तित होगी... तुम्हारे जहाज डूबेंगे। हमारी सबमेरीन जो यहीं से कन्ट्रोल की जाती हैं उन जहाजों को तारपीडो कर देगी... यह रिवाल्वर देख रहे हो कर्नल! इसमें से न गोलियां निकलेंगी न चिंगारियां... बल्कि इसमें से केवल धुआं निकलेगा और तुम अपना गला घोटने पर विवश हो जाओगे...”

“तुम्हारे आदमी भी अपना गला घोट सकते हैं... इसका विचार रखना...” विनोद ने हँस कर कहा।

“मैंने इसकी भी व्यवस्था कर ली है—” पापेन बोला।

इन्हीं ने जेब से हाइटर निकाल कर मुठ्ठी में दबा रखा था और पूरी संलग्नता के साथ परिस्थिति का निरीक्षण कर रहा था।

अचानक पापेन ने एक बटन दबाया। एक स्क्रीन प्रज्वलित

हो गई और हमीद को ऐसा लगा जैसे वह सिनेमा देख रहा हो। स्क्रीन पर सागर का जल लहरें मार रहा था। एक और जल यानों का काफिला गतिशील नजर आ रहा था जिनके ऊपर कई हवाई जहाज मंडरा रहे थे। बहुत दूर पानी के अन्दर एक साँप समान मछली नजर आ रही थी जो एक जगह ठहरी हुई थी।

“इसे देख रहे हो...” पापेन की आवाज गूँजी “यह मछली नहीं बल्कि सबमेरीन है। इसके ऊपरी भाग पर मुख बने हुये हैं जिनमें बम रखे हुये हैं। यह सबमेरीन अफ्रीका के तट पर है और तुम्हारे जलयान इससे पांच सौ मील दूर है...यह देखो...मैं बटन दबा रहा हूँ— अब देखो...सबमेरीन चल पड़ी हैं। यह टाइम घन्टे में तुम्हारे जहाजों तक पहुँच जायेगी...इसमें से गोले निकलेंगे और तुम्हारे जहाजों के चौथड़े उड़ जायेंगे।”

कमरे पर एक भयानक सन्नाटा छा गया था। हमीद की निगाहें स्क्रीन पर से हटीं और उसने पापेन को सम्बोधित किया।

“मिस्टर पापेन ! सरकारी तौर पर इस मामिले या केस का इन्चार्ज मैं हूँ। कर्नल विनोद जो कुछ कह रहे हैं या करेंगे वह उनका निजी कार्य होगा। मैं सरकारी तौर पर तुमसे समझौता करना चाहता हूँ।”

सब के चेहरों पर विस्मय के लक्षण उत्पन्न हो गये। स्वयं कर्नल विनोद भी उसे चकित दृष्टि से देखने लगा।

“मैं समझौता चाहता हूँ...” हमीद ने फिर कहा।

“समझौता एक ही प्रकार से हो सकता है...” पापेन ने कहा।

“बताओ ?”

“सन्धि पत्र पर पहले हस्ताक्षर होंगे...फिर तुम्हारा राष्ट्र यह घोषणा करेगा कि यह संधि निवर्तित हो गई है...” पापेन ने कहा।

“मुझे स्वीकार है....” हमीद ने कहा ‘इसके बदले में तुम हम लोगों को आजाद कर दोगे और हमारे जहाजों को नष्ट नहीं करोगे....’

“संधि के निर्वर्तित होने के बाद जहाज तबाह नहीं होंगे.... केवल उनका रख मोड़ दिया जायेगा....” पापेन ने कहा ।

“मुझे कोई आपत्ति नहीं है....” हमीद ने कहा ।

कर्नल विनोद का चेहरा लाल हो गया । उसने हमीद की ओर देखा, मगर हमीद ने उसकी तरफ से नजरें हटा लीं और उस कैदी हिन्दुस्तानी की ओर देखने लगा ।

“मैं आपके इस निर्णय से सहमत नहीं हूँ—” चौधरी जूनियर ने कहा ।

“मैं भी हस्ताक्षर नहीं करूँगी....” लीला मारेस ने कहा ।

“और आप ?” हमीद ने कैदी हिन्दुस्तानी से कहा ।

“भला मैं कैसे दस्तखत कर सकता हूँ....” उसने कहा ।

“आप लोगों को दस्तखत करनी पड़ेगी....” हमीद ने कठोर स्वर में कहा, फिर पापेन से बोला “संधि पत्र मंगवाइये—यह लोग हस्ताक्षर करेंगे ।”

“तुम होश में हो या नहीं ?” विनोद ने कहा ।

“आप तो खामोश ही रहिये ?” हमीद ने कहा ।

“तुम्हें मालूम है कि तुम किससे बातें कर रहे हो ?” विनोद ने कहा ।

“जी हां... कर्नल विनोद से बातें कर रहा हूँ.... यह सच है कि आप मेरे इन्चार्ज रह चुके हैं लेकिन इस केस का इन्चार्ज मैं हूँ....” हमीद ने कहा फिर कैदी हिन्दुस्तानी की ओर मुँह करके बोला “मैं भारत सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत से आपको आज्ञा देता हूँ कि देश के हित के लिये आप हस्ताक्षर कर दें.... और यदि आप मेरे प्रतिनिधि का प्रमाण चाहते हैं तो यह देखिये....” उसने जेब से पाउच

निकाला। उसका एक भाग काड़ा और उसमें से एक कांड निकाल कर बोला “इसे देखिये।”

हिन्दुस्तानी कैदी के अतिरिक्त लीला मारेस और चौधरी जूनियर भी झुक पड़े थे। सन्तुष्ट सी तहरीर थी जिस पर हर व्यक्ति को आदेश दिया गया था कि कैप्टन हमीद की हर आज्ञा का पालन करे

“मेरा खयाल है कि अब तर्क की कोई गुँजाइश नहीं है...” हमीद ने कहा, फिर पापेन की ओर गर्दन घुमाई जो सीना ताने विजेताओं के समान देख रहा था “मिस्टर पापेन! मैं यह चाहूँगा कि मेरे जिन साथियों को दस्तखत नहीं करना है... उन्हें इस कमरे से बाहर चले जाने की आज्ञा दे दी जाये।”

“मुझे कोई आपत्ति नहीं है...” पापेन ने कहा।

“तां फिर सन्धि पत्र निकालिये।” हमीद ने कहा।

पापेन ने कागज निकाला और हमीद ने हिन्दुस्तानी कैदी की ओर देखा। उसने कम्पित हाथों से हस्ताक्षर कर दिये... फिर जैसे ही सीधा हुआ, हमीद ने कुछ इस प्रकार उसकी ओर देखा कि वह बाहर निकल गया। चौधरी जूनियर ने बड़ी धृष्टता के साथ अपने पिता की ओर देखा और हस्ताक्षर करके बाहर निकल गया। उसी के साथ कासिम और कानन भी निकले थे। फिर लीला मारेस ने दस्तखत की और दोनों हाथों से अपना मुँह छिपाये बाहर निकल गई।

“आप सब लोग दरवाजे के बाहर रुके रहिये मैं आ रहा हूँ...” हमीद ने चिल्ला कर कहा, फिर विनोद से बोला “अब आपका जो दिल चाहें कीजिये; या तो मेरे साथ चलिये कीजिये।”

कर्नल विनोद की आँखों से खून उबल रहा था, मगर उसने कुछ कहा नहीं।

“अब आप सबमेरीन रोक दीजिये !” हमीद ने पापेन से कहा ।

“आधा घन्टा बाद...” पापेन ने कहा ।

“टोक है... मैं आप पर यकीन करता हूँ... और यह उम्मीद भी रखता हूँ कि जिस मैत्रीपूर्ण वातावरण में मेरे और आपके मध्य बातें हुई हैं उसका आप खयाल रखेंगे ।”

“जरूर कैप्टन !” पापेन ने कागजजेब में रखते हुये कहा ।

“अब मैं इजाजत चाहूँगा...” हमीद ने कहा और उसकी ओर अपने दोनों हाथ बढ़ाये ।

पापेन ने जल्दी से अपने हाथ में दबे हुये रिवाल्वर को सामने की मेज पर रखा और अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाये । इसके लिये उसे जरा सा आगे की झुकना पड़ा था । हमीद भी कुछ इसी पोजीशन में था... फिर उसके हाथ हमीद के हाथ के निकट पहुँचने भी नहीं पाये थे कि हमीद का बायाँ हाथ उसके रिवाल्वर पर पड़ा और साथ ही दाहिने हाथ का घूँसा पूरी शक्ति से पापेन के चेहरे पर पड़ा और वह बिलबिला कर दूसरी ओर उलट गया । यह सब इतनी तेजी से हुआ था कि एक क्षण के लिये विनोद भी स्तब्ध रह गया था... फिर उसने एक ओर छलांग लगा दी ।

उधर पापेन के गिरते ही उसके तमाम साथी हमीद से लिपट गये थे । वह सब खाली हाथ थे इसलिये घूँसों की ही लड़ाई हो रही थी पापेन उठ गया था और हमीद को टांग मार कर गिराने की ताक में था ।

विनोद लपक कर उस मशीन के पास पहुँच गया था जिस से सबमेरीन कंट्रोल की जाती थी । पहले उसने स्वीच घुमाया और और फिर कई बटन दबाता चला गया । स्क्रीन पर जो सबमेरीन तेजी से आगे बढ़ती हुई दिखाई दी थी वह अब ठहर गई थी... और

जहाज पहले ही के समान तेजी से आगे बढ़ते चले जा रहे थे। फिर उसने अपनी जेब से नीला महल का प्रति रुप निकला और उसका एक बटन दबा कर बोला।

“होला...कन्ट्रोल टावर...होलो कन्ट्रोल टावर...हेलो—हाँ...
अफ्रीका हाई सीन वेस्ट...एक सौ अस्सी डिग्री...चार सौ मील...
एक सबमेरीन ठहरी हुई है...उसे तबाह कर दो...ओवर ऐन्ड
आल।”

स्क्रीन प्रचलित थी और अब उस पर वही हवाई जहाज जो जल
यानों पर उड़ रहे थे अब उस ओर जाते हुये दिखाई दे रहे थे। जिधर
सब मेरीन ठहरी हुई थी...फिर विनोद ने उस मशीन का स्वीच भी
आक कर दिया जिस से महल के बाहरी भाग में विजली दोड़ाई गई
थी...फिर वह शेर के समान शुत्रुओं पर झपटा और पहले ही हल्ले
में दो को फर्श पर गिरा दिया...मगर इसी मध्य पापेन ने हमीद को
जेब से अपना रिवाल्वर निकाल लिया और गरज कर बोला।

“कर्नल विनोद ! तुम्हें तो शायद मैं जिन्दा छोड़ दूँ, मगर कैप्टन
हमीद...।”

वह बात पूरी नहीं कर सका था, क्योंकि विनोद ने एक आदमी
को उठा कर उस पर फेंक मारा था। हमीद के लिये इतना अवसर
काफी था। वह कमरे से निकल भागा।

“हमीद ! अपने साथियों को लेकर जल्द से जल्द नीला महल के
बाहर निकल जाओ। विजली की लहरें नहीं दौड़ रही हैं।” विनोद
ने चीख कर कहा।

इतने में पापेन ने फिर् फायर किया और विनोद ने फिर्...
एक आदमी की आड़ ले ली।

“कर्नल ! तुम मेरे हाथों मेरे ही आदमियों को कत्ल करा रहे
हो—लेकिन कब तक...” पापेन कहा, फिर एक मयंकंर अट्टहास

लगा कर बोला “तुम्हें हर हाल में मरना है। अगर तुम बाहर निकलोगे तो मैं एक स्वीच आन कर दूँगा—महल की बुर्जियों से बिजली की लहरें निकलेंगी और तुम्हारे साथ ही तुम्हारे साथी भी जल कर राख हो जायेंगे और यहां रहोगे तो अन्त में तुम्हें अपने ही हाथों अपना गला घूटना पड़ेगा...”।”

विनोद की आँखें लाल हो रही थीं। कमरे में गैस भर गई थी। पापेन के तीन आदमी मर चुके थे चौथा अपना गला घूट रहा था। शेष चिल्ला रहे थे उन्हीं में चौधरी सीनियर भी था। उसने चीखते हुये कहा।

“पापेन ! इसे बन्द करो वना हम सब मर जायेंगे।”

“मर जाओ...” पापेन ने अट्टहास लगा कर कहा “किस मूर्ख ने कहा है कि यहां ठहरो। बाहर निकलो और हमीद इत्यादि को खत्म कर दो। अभी वह बाहर नहीं निकले होंगे। मैं विनोद को वहीं खत्म कर के बाहर आऊँगा।”

चौधरी सीनियर दरवाजे की ओर बढ़ा, मगर विनोद ने उसे टांग मार दी और वह मुँह के बल फर्श पर गिर पड़ा...विनोद ने कहा।

“तुम गद्दार हो। अगर तुम ज़िन्दा बच गये तो मुझे दुख होगा। तुम्हारी मौत जूते की ठोंकरो से होनी चाहिये।”

फिर उसने ठोकरी मारनी आरम्भ कर दी और वह मछली के समान तड़पने लगा। शेष जो बचे थे वह भाग निकले। थोड़ी ही देर में वह शिथिल पड़ गया और विनोद उस मशीनकी ओर बढ़ा जो रेडियो

एक्टिव रेज फैंकती थी। स्क्रीन पर हवाई जहाज उस स्थान पर मडला रहे थे जहां सबमेरीन थी।

पापेन ने फिर फायर किया और विनोद ने मेज की आड़ लेते हुये एक कुर्सी उसकी और उछाल दी और पापेन फिर आदृष्टास कर उठा।

“तुम्हें मरना है कर्नल विनोद...तुम्हें कोई नहीं बचा सकता—।”

“मुझे अपने मरने का दुख भी नहीं होगा...तुम अपना परिणाम स्क्रीन पर देखो...हमारे हवाई जहाज ठीक जगह पर पहुँच गये हैं... देखो देखो। उन्होंने बम बरसाने आरम्भ कर दिये हैं। वह मारा— देखो...तुम्हारी सबमेरीन में आग लग गई और हमारे जहाज वापस जा रहे हैं।”

“कोई चिन्ता नहीं कर्नल ?” पापेन ने कहा। वह भी स्क्रीन ही पर देख रहा था “दूसरी सबमेरीन मेजी जायेगी...संभलो...” उसने फिर फायर किया और पीछे हटने लगा।

विनोद ने जान पर खेल कर उस पर छुड़ांग लगाई...यह सच मुच मौत की छुलांग थी, इसलिये कि इस बार पापेन के रिवाल्वर से निकली हुई गैस उसके शरीर पर पड़ी थी। एक क्षण के लिये विनोद को ऐसा लगा जैसे उसके शरीर में जान ही न रह गई हो। मालूम हो रहा था जैसे शरीर का सारा रक्त सिमट कर चेहरे पर आ गया हो। गले में सर सराहट हो रही थी। आँखें जल रही थी और नाक के नथनों में जैसे लाल मिर्चें भर गई थीं। पापेन ने फिर आदृष्टास

लगाया और विनोद इस प्रकार लहराया जैसे गिर रहा हो... मगर यह उसका अभिनय था। इसी अभिनय की आड़ ले कर उसने पापेन की कलाई पर हाथ मारा। रिवाल्वर छूट कर नीचे गिर पड़ा। विनोद ने टोकर मारी। रिवाल्वर फर्श पर दूर तक फिसलता चला गया। पापेन उसे उठाने के लिये झुपटा मगर विनोद ने टांग आगे कर दी और वह उलझ कर फर्श पर आ रहा विनोद ने जल्दीसे उस मशीन का स्वीच आफ कर दिया जो रेडियो ऐक्टिव रेजफे कती थी। पापेन बचत का कोई उपाय न देख कर उठ कर भागा। विनोद भी लपकत दारवाजे से बाहर निकलते ही उसे इतनी जोर का चक्कर आया कि वह दीवार थाम कर कारीडर ही में रुक गया।

कारिडर में भी कई लाशें पड़ी थी जिसका यही अर्थ था कि यहां भी लड़ाई हुई थी! पापेन के तमाम साथियों की लाशें वहीं दिखाई दीं। फिर जब विनोद ने नजरें उठाई तो देखा कि हमीद एक हैंडिल थामे खड़ा है... और हमीद जहां खड़ा था उससे लगभग सौ गज दूर दलान में एक मशीन लगी हुई थी और वहीं पानी का एक टैंक भी था और पापेन उसी मशीन की ओर बढ़ता जा रहा था।

विजली के समान विनोद के दिमाग में एक विचार आया और उसका रोम रोम कांप उठा उसे ऐसा लगा जैसे घूरी दुनिया खतरे में धिर गई हो। वह भी उबर ही दौड़ा। कोई अज्ञात शक्ति ही थी जिसने उसे शक्ति प्रदान कर दी थी... फिर वह टैंक उस समय पापेन के सर पर पहुँच गया जब वह टैंक के पास वाली मशीन का हैंडिल घुमा रहा था।

“बेकार है कर्नल विनोद !” पापेन ने कहकहा लगा कर कहा “अब कुछ नहीं हो सकता । मैंने हैन्डिल धुमा दिया है । मैं न बचूंगा न सही...मगर साथ ही साथ तुम और हमीद भी न बच सकोगे...न तुम्हारे साथी ही बच सकेंगे... क्योंकि पूरा अफ्रीका उड़ जायेगा । दस मिनिट बाद लहरें नीचे पहुंचेगी और पूरी शक्ति से बमों के भराडार को हवा में उछाल देगी...और यह तो तुम जानते ही हो कि एटम बम या हाइड्रोजिन बम हवा के दबाव से फटते हैं...केवल दस मिनिट कर्नल...हा हा हा—।”

इतनी देर में हमीद झूले पर बैठ गया था । उसके साथ वही हथौड़ी थी जिस के बारे में विनोद ने लिखा था कि वह उस पर विश्वास कर सकता है । दूसरे साथी पहले ही जा चुके थे झूला तेजी से सरकता जा रहा था । पापेन विनोद के बन्धन में था । विनोद उस पर घूँसे बरसा रहा था मगर पापेन का बन्धन हैन्डिल पर ढीला नहीं हुआ था । वह अट्टहास लगाता जा रहा था—पागलों के समान... भयकर अट्टहास और विनोद की नजरों सामने के सारी दुनिया नाच रही थी...सुन्दर और रंगीन दुनिया । चलती हुई गाड़ियाँ...गाति शील कारखाने—अपने घरेलू जीवन में सैलान लोग—लहलहाती हुई खेतियां—।

लेकिन दस मिनिट बीत—।

ट्रेने हवा में उड़ती नजर आयेगी । हवाई जहाज सागर के तल में खेत भुलस जायेगे और यह सुन्दर तथा आकर्षक ब्रह्माण्ड आग का सागर बन जायेगा ।

“नहीं नहीं—ऐसा नहीं होगा...” विनोद पागलों के समान चीखा ।

“विल्कुल यही होगा कर्नल—” पापेन ने कहा और फिर अट्टहास लगाने लगा ।

विनोद का पूरा अस्तित्व खौल उठा । शक्ति जवाब दे गई थी पापेन के अट्टहास खौलते हुये सीसे के समान करनों में से होते हुये आत्मा को त्वचा की भस्म करते चले जा रहे थे । उसने भगवान की याद किया और फिर पापेन को छोड़ कर हैन्डिल पर हाथ डाल दिया ।

“अरे...यह क्या...” पापेन के मुख से निलला...फिर उसने अपनी पूरी शक्ति लगा कर विनोद को रोकना चाहा, मगर जब देखा कि वह अब भी विनोद पर विजयी नहीं हो सकता तो उस ने विनोद के हाथ पर अपने दाँत गड़ा दिये...विनोद के मुख से हल्की सी चीख निकल गई, मगर उसने हैन्डिल पर से हाथ नहीं हटाया और उसे उल्टा धुमाता रहा ।

पानी के टैंक से पानी की मोटी धारे...पल कर सोडियम के बने हुये महल पर पड़ रही थी—और इस पानी ने आग लगे दी और नभयानक आग...पूरा नीला महल कागज की इमारत के समान ढड़ा ढड़ जल रहा था ।

पापेन ने अभी तक दाँत गड़ा रखे थे । एक तो इसकी पीड़ा...

२१० :: जासना दुनिया

दूधरे जलते हुये महल की झुलसा देने वाली आग***विनोद पागल हो उठा। उसने हैन्डिल पर से हाथ हटा लिया। फल स्वरूप पापेन ने भी दाँत हटा लिये, फिर हैन्डिल पर हाथ रखने ही जा रहा था कि विनोद विजली की सी तेजी के साथ नीचे झुका और शक्ति लगा कर पापेन को उठा लिया फिर जलते हुये महल पर उसे उछाल दिया।

एक भयानक चीख वायुमण्डल में गूँज कर दम तोड़ गई।

विनोद ने सन्तोष का साँस ली। दुनिया पर से खतरा टल गया था***मगर फिर वह भी खड़ा न रह सका***चकरा कर गिरा और जलान पर लुढ़कता चला गया।

नीला महल जल जल कर रखा होता जा रहा था और चारों ओर झुलसा देने वाली गर्मी फैली हुई थी।

कबायलियों ने आभार भरी नजरों से उस खूबसूरत इन्सान को देखा जो जख्मों से होश पड़ा था। वह उसे उठा कर ला रहे थे। मार्ग में हमीद इत्यादि मिले। हमीद ने लपक कर विनोद को उनके हाथों पर से उठा कर अपनी गोद में ले लिया और उसकी आँखों से आँसू को दो बूँदे निकल कर विनोद के चेहरे पर पड़ीं। विनोद ने आँखें खोल कर उसे देखा। फिर हमीद कुछ कहने ही जा रहा था कि उसने फिर आँखें बन्द कर लीं।

फिर उसी दिन यह पूरी पार्टी ल्युपोल्ड विले के लिये रवाना हो गई और फिर वहाँ से चार्टर हवाई जहाज द्वारा हिन्दुस्तान के लिये रवाना हो गये और लेडी वाल्टर माई काटा कबीले की ओर वापस चली गई।

एक सप्ताह बाद कर्नल विनोद ठीक हो सका था।

इस एक सप्ताह तक वह कैदी हिन्दुस्तानी जो देश का महत्वपूर्ण व्यक्ति था। चौबीस घंटे हमीद के साथ साथ विनोद की परिचर्या में लगा रहा था।

विनोद के स्वस्थ होने पर उसी हिन्दुस्तानी ने विनोद को बधाई देने के लिये एक सभा आयोजित की जिसमें देश के सभी महान लोग सम्मिलित हुये और सब ने विनोद को उसकी कृति पर बधाई दी... फिर जब पुरस्कार दिये जाने लगे तो विनोद ने कहा

“मैंने मातृभूमि के लिये और सारी दुनिया के लिये अपने एक साधारण से कर्तव्य को पूरा किया है—मैं इसका कुछ मूल्य नहीं चाहता। कर्तव्य पालन ही मेरा पुरस्कार है...”

लोग आश्चर्य से उसे देखने लगे। डी. आई. जी. साहब ने इसीद से कहा।

“तुम्हारा यह हार्ड स्टोन ठीक कहता है...”

“बट ए.इन वैल्युएबिल स्टोन (एक ऐसा पत्थर जिसका मूल्य नहीं आया जा सकता) आई. जी. साहब ने कहा।

जलसे से वापसी पर हमीद ने कहा ।

“आप अपने लिये कुछ न कबूल करते...मगर मुझे तो माई काटा कबीला का बादशाह बनवा ही देते...लेडी वाल्टर कितनी ललचाई हुई नजरों से आपको देख रही थी ।”

“बड़े सुवर हो...” विनोद ने हँसते हुये कहा और हमीद कार की खिड़की से बाहर देखने लगा ।

—: समाप्त :—

जाससी दुनिया हिन्दी का आगामी अंक

* पहाड़ों के पीछे *

लेखक—इन्ने सफी, वी० ए०

अनुवादक—प्रेम प्रकाश

- राजेश ने भील में छलाँग लगा दी और जब बाहर निकला तो उसके हाथ में एक बड़ी सी मछली थी...शिकार खेलने वाले उसकी इस कला से दंग रह गये।
- मेकफ जंगलों में सींगों वाला बन्दर तलाश करता फिर रहा था...यह राजेश की आशा थी।
- होटल के कमरे से लड़की को उठा ले जाने वाला बड़की की के कमरे में मुर्दा पाया गया।
- वह सम्बन्धी था मगर नौकरों के क्वार्टर कहता था कि वह इस योग्य नहीं कि कोठी लिये कि वह गरीब था...क्या इस सच्चाई के पीछे सच भी था ?

• माइक्रो फिल्म के गायब हो जाने से एक खलई सच गई थी।

अत्यन्त दिलचस्प तथा जाससी से ओत पोत है !
प्रकाशन तिथि :—अक्टूबर ७१ का तीसरा अंक !

वार्षिक मूल्य

रुपय ५० पैसे

इस अंक का मूल्य

१ रुपया २५ पैसे

प्रकाशक

जाससी दुनिया प्रकाशन

इलाहाबाद—

गुजल

—श्री सदा अफगानी

तकें सफर करेंगे न उलूक के डर से हम,
 ले लेंगे काम शमा का दाग ज़िगर से हम !
 (तेरे ही नकशे पा मिले गुजरे ज़िगर) से हम,
 बच कर निकल सके न तेरी रह गुजर से हम !
 इक कैफे इन्तजार नजर में लिये हुये,
 बैठे हैं लौ लगाये चिरागे सहर से हम !
 सहर आखिरी दम तक न जा सके,
 गम पी गये तेरी पहली नजर से हम !
 दायद बदल गया हो मुकद्दर यह सोच कर,
 सर को उठा रहें हैं तेरे संगे दर से हम !
 जो ही कुछ खबर है न अपना ही कुछ पता,
 गये हैं अन तो दिले ने खबर से हम !
 हर सिम्त एक आग का दस्तिया है ए सदा,
 उस अवजुम में जायें तो जायें किधर से हम !

गोरावाहिक कहानी नम्बर—४८

सहर होने तक

—श्री शकील जमाली

शाहिद की बात तीर बन कर जावेद के दिल में लगी, मगर उसने अपनी हालत पर काबू पाते हुये मुस्कुरा कर कहा ।

“कोई हर्ज तो नहीं हुआ मगर कहानी इस वक्त जरा क्लाइमेक्स पर पहुँच रही थी ।”

“तब तो मैं ठीक वक्त पर पहुँचा, क्योंकि मेरा ख्याल है कि कहानी तुमने शुरू की है उसका अनजाम गमों से भरा होगा....” अहिद ने हँस कर कहा ।

“यह कोई जरूरी नहीं है कि आपका अन्दाजा सही ही साबित हो जाय” जावेद ने मुस्कुराते हुये कहा “क्योंकि कहानी तो

फिर यह हालात पर मुनहसर है कि वह उसे गोली मार दें और उसका अनजाम गमों से भरा सा

शियों से भरा हुआ ।”

“ठीक है... मैंने बस वैसे ही एक बात कह दी थी....” शाहिद

कहा, फिर कहेशी की ओर मुड़े कर बोला “चलो

कामपनी वाग तक धूम आयें ।”

“लेकिन शाहिद भाई । आज तो....”

“कहकशां । आज मैं बरा कोई बहाना नहीं सुनूँगा—

अहिद ने उमकते वक्त आटते हुये कहा ।

“बहाना नहीं कर रही हूँ—बल्कि सच कह रही हूँ कि आप

के जरीजा के यह जानना....”

“फिर किसी को चला जाना.... यह क्या जरूरी है कि

आओ”

आप भी कमाल करते हैं शाहिद भाई... इस वक्त तो उसके यहाँ पार्टी है, फिर किसी वक्त जाने से क्या फायदा..." कहकशां ने मुस्कुरा कर कहा और शाहिद के चेहरे पर खिन्नता के लक्षण प्रकट हो गये... फिर उसने कहा ।

"लेकिन कहकशां । मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि तुम हमेशा मुझसे खिंची खिंची सी रहती हो ।"

"नहीं शाहिद भाई । ऐसी कोई बात नहीं है... बल्कि असल बात यह है कि मुझे घूमने फिरने से ज्यादा दिलचस्पी नहीं है ।"

"मैं सब समझता हूँ कहकशां..." शाहिद ने कहा और कमरे से निकल गया ।

उसके जाने के बाद जावेद ने कहकशां से पूछा ।

"क्या सचमुच तुम जरीना के यहाँ जा रही हो ?"

"नहीं..." कहकशां धीरे से हँस पड़ी ।

फिर तुमने क्यों शाहिद साहब का दिल तोड़ दिया ?"

शाहिद भाई को नहीं जानते ? वह मेरे भाई जरूर होते

उनकी आदतें कुछ अच्छी नहीं हैं... और फिर मुझे उन

गाँवों से बहुत डर लगता है..." कहकशां ने कुछ ऐसी मासूमियत

से कहा कि जावेद खिल खिला कर हँस पड़ा, फिर बोला ।

"तुम तो अब मैं चलूँगा..."

"क्या आप अपना वादा भूल गये ?"

"यह तो याद है... मगर तुम्हें घूमने फिरने से दिलचस्पी

नहीं है—।" शाहिद हँसा ।

"मैंने कब कहा है ?" कहकशां ने कहा ।

"अभी अभी तुमने शाहिद साहब से कहा है ।"

यही थी कहानी आगामी अंक "पहानों के सखे" में

प्रेम लीग

उसके
शां ने
प्रकट
हमेशा

जासूसी दुनिया हिन्दी में यह स्तम्भ इसलिए स्थापित किया कि जासूसी दुनिया के प्रेमियों के पते इसमें प्रकाशित हो और पाठक एक दूसरे से पत्र-व्यवहार करके आपस में एकता और बंधुव स्थापित करें। यह स्तम्भ काफी दिनों तक चलता रहा, मगर फिर हमारे सामने कुछ ऐसी विवशतायें आ गईं कि यह स्तम्भ स्थापित करना पड़ा था।

असल
कमरे

मगर इधर काफी दिनों से हमारे पाठकों का बराबर हम पर दबाव पड़ रहा था कि प्रेम लीग स्तम्भ फिर से स्थापित किया जाये, पाठकों अनुरोध को टालना हमारे वश की बात नहीं थी, इसलिए इस अंक से फिर प्रेम लीग स्तम्भ स्थापित किया जा रहा है।

कृपया पोस्ट कार्ड पर आपन नाम और पता बिल्कुल साफ माफ लिखिये। पते केवल हिन्दी में लिखें जाये और पते के अतिरिक्त यदि किसी दूसरी भाषा में पते लिखे जायेंगे तो वह प्रकाशित न हो सकेंगे।

हुर होते
मुझे उन
जासूमियत

पते क्रमानुसार प्रकाशित होते रहेंगे, इसलिये आगे की शिकायत किसी भी प्रेमी को नहीं होनी चाहिये।

—गुरदीप सिंह भाटिया
द्वारा “मिलन मन्दिर”

—रमेश कुमार गुप्त
द्वारा रामगोपाल (हिल)

सर्वोदय नगर
डोंगरा (म० प्र०)

गद्दी मुहल्ला
गोला गोकर्णनाथ (म० प्र०)
(उ० प्र०)

मध्य नारायण मिश्रल
१५ साहालेन

—कैलाश चन्द्र
द्वारा लालशंकर अवन्थी
खुटार गड (कुम्हार गड)

कलकत्ता—७
मोहिम्मद खान

गोला गोकर्णनाथ (म० प्र०)
(उ० प्र०)

आर्य जीव विज्ञान
राज कालौरी (म० प्र०)

—सैयद इम्तेयाज आलम

बेगाना

नरोड

गौर (नेपाल)

—बी० सी० सूर्यबन्शी

क्रॉग लॉज के पोछे आमला

जिला-बैतुल (म० प्र०)

—विनोद सेठ

द्वारा डा० सेठ

चन्द्र निकेतन

स्टेशन रोड (पढ़ाव)

रवालियर—६

—दिगम्बर सिंह (साथी)

कटिहार दुर्गापुर वाँसपट्टी

जिला-पूँरियाँ (बिहार)

राश पचौरी

स्पेक्टर

न० एल० पचौरी

जौरगाबाद—इटावा

(यु० पी०)

कुमार छापोलिया

जवाबास

कलम पथ रोड

मु० पो०—मुजफ्फरपुर

बिहार

मुहल्ला चौखण्डी

पोस्ट—सासाराम

जिला—शाहाबाद (आर०)

(बिहार)

—अमरेन्द्र कुमार वर्मा

थाना रोड

सीतामढ़ी

(जि०—मुजफ्फरपुर)

—दुर्गा शंकर वर्मा

राम निकेत

सादुल कॉलोनी

पो० बीकानेर

(राजस्थान)

—ठाकुर गोपाल सिंह

म० न० ११४-५-१६७

बेगम बाजार

हैदराबाद-१६

—भरत कुमार “प्यासा”

गौर बाजार

हस्पिटल रोड

नेपाल

—अबजी मावाजी पटेल

मु० पो० टांडा

ता० नखतान

जिला—अच्छा (मुजफ्फरपुर)